1994

उद्बोधन

ओऽऽऽम् तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय,
मृत्योर्मा अमृतम् गमय।

परम पूज्य श्री सद्गुरुजी

"श्री वासुदेव रामेश्वर जी तिवारी"

॥ वन्दना ॥

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अज्ञान तिमिरांधस्य, ज्ञानांजन शलाकया ।
चक्षुरून्मीलितम् येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदम् दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ब्रह्मानंदम परम सुखदम् केवलम् ज्ञान मूर्तिम् ।
द्वंद्वातीतम् गगनसदृशम् तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥

एकम् नित्यम् विमलमचलम् सर्वधी साक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुम् तम् नमामि ॥

यं ब्रह्मा वरूणेंद्र रूद्र मरूतः स्तुन्वंति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायंति यं सामगाः ॥

ध्यानावस्थित् तद्गतेन मनसा पश्यंति यं योगिनो ।
यस्यांतम् न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

★ ★ ★

★ संपादकीय ★

जन्म–मरण, पुण्य–पाप, स्वर्ग–नर्क, सुख–दुख एवं हां–ना रूपी संशय के मध्य फंसकर मनुष्य बुद्धि सम्पन्न होते हुये भी यह भूल जाता है कि मानव जन्म पाकर उसका प्रथम कर्त्तव्य है अपने आपको जानकर, 'स्व' को पहचानकर अनेकोनेक / आरोपों से मुक्त हो जाना।

यही वास्तविकता है उस कथन की भी जो हमारे सतगुरू हमेशा दोहराते हैं कि "एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय"। हम स्वयं भी यह अनुभव करते हैं कि समृद्ध, सुखमय एवं शाँतिपूर्ण जीवन की अपेक्षा में किये गये हमारे सारे प्रयत्न अपर्याप्त तथा सारे संगी साथी अधूरे पड़ते हैं और हमारे अभाव दूर नहीं हो पाते।

किसी सत्पुरुष का सतसंग पाकर ही हम इस बात पर दृढ़ हो पाते हैं कि जीवन भर जिसे हम बाह्यजगत में ढूंढते रहते हैं, वह वास्तव में वहां है ही नहीं। वह प्रकाश, वह ज्ञान, वह दिव्य शक्ति, वह पूर्णत्व तो हमारे भीतर है, जिसे पाने के लिये हमें न आगे बढ़ना है। और न ही पीछे हटना है। हमें तो केवल भीतर की ओर उन्मुख होकर शनैः शनैः अंतर्मुखी मार्ग में अभ्यस्त होना है ताकि वाह्य व्यस्तता के मध्य भी हम सहज रुप से, हर विकार से परे होकर वांछित कार्य कर सकें।

विभिन्न धर्मों के प्रवर्तकों ने भी अपनी युगों युगों एवं अनेक जन्मों की साधना के बल पर ही पूर्णता प्राप्त की, मुक्त हुए तथा निर्भय होकर निष्काम भाव से मानवता की राह दिखाई तथा अपने अनुभवों का प्रचार व प्रसार करके उसे धर्म रुप में स्थापित किया। देश, काल एवं भाषा की भिन्नता के कारण अलग अलग धर्मों में विविधता का आभास होता है; परन्तु वास्तव में सभी धर्म एक ही परमसत्य, एक ही दिव्य शक्ति की प्रतीति करवाते है।

इस बात का प्रमाण सतगुरु परिवार के सदस्यों की अनुभूतियां एवं स्थिति है। सतगुरु श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी जी के मार्गदर्शन में भिन्न भिन्न धर्मों में आस्था रखने वाले लोग आज एक ऐसे दिव्य परिवार के रूप में उभर रहे हैं जिनका धर्म केवल एक निश्चय सत्य है। सतगुरु के आदेश का पालन करने में कोई धर्म, कोई संप्रदाय आड़े नहीं आता।

सतगुरु का आश्वासन है मनुष्य मात्र को, कि २४ घंटों में से थोड़ा सा भी समय उनके आदेशानुसार, निरंतर साधना के लिये समर्पित करके प्रत्येक साधक, कभी न कभी कार्यों एवं चित्त की वृत्तियो से निवृत्त होकर मुक्त हो जाएगा। जी हां, जीते जी मुक्त। फिर वह जो भी कार्य करेगा व निष्काम कर्म ही होगा तथा सबके लिये कल्याणकारी भी।

८७ वें गुरू – पर्व के अवसर पर परम पूज्य सतगुरु जी की स्नेहिल आशीष के साथ उद्बोधन का यह छठा अक समर्पित है आत्मज्ञान के सभी मुमुक्षुओं को।

हम सम्पूर्ण गुरु परिवार की ओर से हृदय की समस्त शुभकामनाओं के साथ सतगुरु जी के श्री चरणों में उनके दीर्घायुषी होने की विनम्र प्रार्थना करते हैं।

दिनांक २३ जुलाई, १९९४
स्थान – रायपुर

S/o (श्रीमती) के. के. पंधरे

दो शब्द

मानव जन्म मिलने पर जन्म से ही बहिर्मुखी होने के कारण मनुष्य वाह्य वस्तुओं को देखकर उनकी ओर आकर्षित होता है। उन्हें पाने के लिये, अपने जीवन को सुखमय बनाने के वह इधर उधर, यहां-वहां भटकता है। आखिर जब थक जाता है तब किसी सत्पुरुष की शरण ढूंढ़ता है। सत्गुरु की शरण में आते ही वह शांति का अनुभव करता है।

जब वह सत्गुरु के बताये हुए मार्ग से साधना में लग जाता तब उस पर एक नशा सा छाने लगता है। धीरे धीरे, साधना करते करते उसकी इन्द्रियां शिथिल होने लगती है तथा वह अपने आप में समाहित होता जाता है। षट–सम्पति अर्थात् शम्, दम, उपरति तितिक्षा, समाधान व श्रद्धा से युक्त होकर वह आचारवान हो जाता है। और शनैः शनैः जब उसके शरीर में व्याप्त कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है तब वह जन्म जन्मान्तर के सभी संचित संस्कारों को भस्म कर आगे बढ़ जाती है।

अब साधक जैसा चाहे वैसा रह सकता है। चाहे तो आत्म – रति बनकर अपने आप में डुबा रहे या फिर आत्म–क्रीड़ बनकर उसे जो प्राप्त हुआ है उसे सबमें बांटे। यदि हम अपने साथ साथ समाज व राष्ट्र के कल्याण की शुभेच्छा का भी विचार करते हैं तो हमें आत्म–क्रीड़ ही बनना चाहिये ताकि इस आत्म – विद्या का समुचित प्रसार होता रहे।

पत्रिका के प्रकाशन में रायपुर गुरु परिवार के सदस्यों विशेष रूप से सर्वश्री योगेश शर्मा, राजेश तिवारी और बी. एस. वैष्णव का सहयोग सराहनीय रहा है।

इस पत्रिका में उक्त बिन्दुओं पर प्रकाशित प्रवचनों को केसेट से सुनकर शब्दांकित करने व प्रस्तुत करने में सम्भवतः अनेंकों त्रुटियां हों उसके लिये हम प. पू. गुरुजी एवं समस्त पाठक-गण से विनम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करते हैं।

★
★★

० विषयानुक्रमणिक ०

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
१–	वन्दना	
२–	प्रवचन	
	अ) षट संपत्ति	१
	ब) मानव शरीर कब मिलता है	५
	स) हम जन्म से बहिर्मुखी हैं	११
	द) साधना में नशा क्यों होता है ?	२०
	इ) कुंडलिनी जब गरल उगलती है	२५
	ई) हमें आत्म – क्रीड़ बनना चाहिये	३१
	उ) जैसा चाहो वैसा रहो	४३
	ऊ) शुभेच्छा एवं विचारणा	४५
३–	प्रेरक उद्‌बोधन	४७
४–	गुरुजी का स्वास्थ्य – कहब कठिन समुझब कठिन	५०
५–	सद्‌गुरु महिमा अनंत है (शिष्यानुभव) श्री गुरुजी – ५० वर्ष पूर्व	५४
६–	परिवार – परिचय	७१
७–	आय – व्यय पत्रक वर्ष-९३	७६

प्रवचन

(कोई भी व्यक्ति प्रवचनों को पढ़कर
बिना मार्गदर्शन के अभ्यास न करें)

※ षट संपत्ति ※

(दशहरा पर्व, ९३ के शुभ अवसर पर प. पू. गुरूजी का प्रवचन)

कहां नहीं है, सब जगह है। अणु रेणु में है। दसों दिशाओं में है। ऐसी कोई जगह नहीं है जहां वो न हो। वो सत् है। चारों तरफ से हम घिरे हुए हैं। वही है और कुछ नहीं है। वो निरंजन है, वो दिखता नहीं है इसलिए निराकार कहा गया है उसको। ये उसकी पूजा है। ये हमारी पूजा नहीं है। "भावो हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्" वो सारे ब्रह्म का है। वो सत्ता का है। ये सत्ता की पूजा हो रही है। मेरी कोई हस्ती नहीं, मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। ये वैयक्तिक पूजा नहीं है, ये व्यक्तिगत पूजा नहीं है। "समवर्त्तपश्याम् भूमि दिशस्सोस्वान" दसों दिशाओं में भरपूर है। ये उसकी पूजा है। ये दशहरा है। "दशेन्द्रियाणि मनः तेषामीषः। ये आचरण में लाना चाहिए। "सत्यम् वद धर्मम् चर" जो मालूम है वही बोलना है, उतना ही बोलना और आचरण में लाना चाहिये। क्या आचरण में लाना चाहिये ? उसको षट् सम्पत्ति कहा गया है। इसमें Religion नहीं आता। ये व्यक्तिगत धर्म है। आचरण माने धर्म। उस आचरण से अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये।

वो षट सम्पत्ति कौन-सी है जिसमें Religion का आड़ नहीं आता। वो षट सम्पत्ति है-शम, दम, उपरति, तितीक्षा, समाधान और श्रद्धा। शम माने शांति। कभी गरम नहीं होना, कोई कितना ही बोले, गाली दे, अपमान करे, कुछ भी करे, अपनी जो शांति है उसमें धक्का नहीं आने देना। सुनते जाना, हां बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, आप अच्छा कह रहे हैं, ठीक है। ये समझ लेना, कहीं हमारी परीक्षा लेता हो तो, मनुष्य है आगे भूत-भविष्य हम जानते नहीं तो शांति नहीं खोना, गरम नहीं होना, Warm नहीं होना।

दम-इन्द्रिय निग्रह। अपनी जीभ, अपना मन, अपनी बुद्धि ये सब अपने काबू में, अपने बस में होना चाहिए। एक जून भोजन मिले तो एक ही जून खाकर रहना, मांगने नहीं जाना कि हमको आटा दे दो हम रोटी बनाकर खाएंगे। बिलकुल नहीं; मर जाना लेकिन मांगने को नहीं जाना। आदमी मरता नहीं; बहुत दिन तक पानी पीके रह सकता है। बहुत दिन तक पत्ती खाकर रह सकता है। बहुत दिन तक, बहुत सी ऐसी बातें है जो वो जिन्दा रह सकता है। वो दुनिया में आया है, वो भाग्य लेकर आया है। भाग्य माने ऐश्वर्य लेकर आया है तो जहां तहाँ जाएगा, वहां वहां उसको मिलेगा। वो मिलने की चीज - bound to come & appear before him इसलिए भाग्य भाग्य रोने की जरूरत नहीं है। प्रयत्न करो। आगे बढ़ो। सिद्धि नहीं मिलती, फल नहीं मिलता तो प्रकार को बदलो, विधि बदलो, Method बदलो, पद्धति बदलो।

उपरति-न कोई अपना, न कोई पराया। कुछ दिन के लिए इस बाजार में आये हैं। इस बाजार से सौदा लेकर, नेकी बदी लेकर जाना है। अपना घर दूसरी जगह है। यहां बाजार है यह। इस बाजार में आए हैं सौदा बेचने और खरीदने

के लिए, लेने देने के लिए यहां हम आए हैं। यहां उऋण होने के लिए आए है ऋण करने के लिए नहीं। न कोई ऊंच है न कोई नीच है। न कोई छोटा है न कोई बड़ा। ये भाव होना चाहिए अपने में।

तितीक्षा– सहनशक्ति। कैसी भी आपत्ति, विपत्ति और संकट आ जाए, धैर्य नहीं छोड़ना, धीरज नहीं छोड़ना, बल बनाए रखना, घबराना नहीं। अगर आपत्ति विपत्ति नहीं आएगी तो सहनशक्ति बढ़ेगी कैसे। अगर आपत्ति न आए, मारपीट न हो तो कैसे पता चलेगा कि कितनी सहनशक्ति आप में है। तो सहनशक्ति बढ़ाना चाहिये। बदला नहीं लेना किसी से। यहां बदला लेने के लिए नहीं आए हैं। सबको सीधा करने के लिए आए है, सरल करने के लिए, सहज करने के लिए आए हैं।सबको मनुष्य बनाने के लिए आए हैं। अभी हम पशु हैं। मनुष्य रूप में हम पशु हैं तो सहनशक्ति बढ़ाना चाहिए। कैसी भी आपत्ति आए, नहीं, नहीं वो डिगता नहीं, भागता नहीं, डटे रहता है।

समाधान-व्यापार करने पर, Business करने पर, धंधा करने पर, नौकरी करने पर या जो कुछ करता है अपनी जीविका के लिए, उससे जो मिलता है उसी में समाधान। "यथा नाम संतोष:"– संतोष से बढ़कर कोई उत्तम सुख नहीं है। जहां संतोष है वहां सब प्रकार की ऋद्धि सिद्धि पानी भरती है। जो कुछ मिलता है बस, वो अपना है, उतना ही अपना है उसी में मगन रहना है। आंख उठाकर दूसरे का धन नहीं देखना है कि वहां से जाकर ला लो और खा लो। वहां से मांग के बनाकर खालो, ना, ना बिलकुल नहीं। अपने पास चने हैं तो चना खाकर मस्त रहना। गुड़ है तो गुड़ ही खाकर मस्त रहना।

Dont show your cloudy face to yo neighbour तुम्हारा उदास चे अपने पड़ौसी को या किसी को नहीं दिख चाहिए। हमेशा Smiling मुस्कराते रहना मंद मुस्काते। इस प्रकार से समाधान-जि मिले, जैसा मिले, मगन है उसी के अन्द अपना है न, बस। इतना ही काफी है। ि से लेना–देना तो नहीं है न, बस हो गया।

और श्रद्धा- सत् धन था। हरि को तो हरि ही होई। "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्त भजाम्यहम्" (गीता ३४/११) "श्रद्धामः पुरुष: यो यच्छ्रद्धः स एव स:" (गीता १७ जिसको आप भजते हैं। आप वही हैं।

ऐसा कहा गया है। तो तात्पर्य ये है ये पट सम्पत्ति है। सत को मत छोड़ो– मत छांड़ो सूरिमा, सत् छांड़े पत जाय। स बांधे लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय॥ मत छांड़ो सूरिमा सत् छाड़े पत जाय-आ प्रतिष्ठा उड़ जाएगी, कोई नहीं पूछेगा, तुम जाओगे। समाज में अत्र कहीं स्थान नहीं f आपको। सत् के बांधे लक्ष्मी-जाने दो लक्ष्मी रही है तो। वो उजाड़ा, वो उजाड़ा, वो नुक कर रहा, वो नुकसान कर रहा-लेकिन तु तो कोई हानि नहीं पहुंचा रहा है न, अपना को नहीं छोड़ना, तो सत् के बांधे लक्ष्मी मिलेगी आय।

इसके पीछे कहानी है। एक धनी सेठ था। उसके लड़के, बहू, बाल-बच्चे सब बड़ा व्यापार था। सत्य पर निष्ठा थी। वैभव सम्पन्न परिवार था उसका। दानी लोगों के सुख-दुख की परवाह करता था। थक गया। लड़कों ने कारोबार सम्भाला। उ दुख तो कभी देखा ही नहीं था। अपने व्यवह

समाज के लोग दुखी होते हैं इसका उन्हें पता ही नहीं था। अपनी औरत और बाल बच्चे व उनका सुख इतना ही उनके नजर में था। व्यापार में जहां से मिले, जैसा भी मिले, लोगों से पैसा निचोड़ना शुरू किया। लोग दुखी हो गये। बोलने लगे कि सेठजी बड़े अच्छे थे लेकिन उनके बच्चे बहुत लूटते हैं। अब सेठजी के घर भी भाग्य ने करवट ली। बुरे दिन आ गये। एक दिन ऐसा मौका आया कि उनका मुनीम कहे- मैं जा रहा हू। खास नौकर चाकर जो हैं उनके, वो बोले- हम जा रहे है। ऐसा करते करते सब नौकर चाकर व घर के प्राणी सब चले गये। लड़का भी कहता है कि मैं जाता हूं अब Business बैठ गया है। अब क्या करेंगे। अब कौन पूछेगा। इसलिये अपना धधा बाहर जाकर करता हू। वो भी चला गया। सहचरियां भी जो थीं वे सब के सब आये बोले हम अब जाते हैं क्योंकि हम लोगों से कुछ होता नहीं, हमको तनख्वाह मिलेगी नहीं, हम क्या करेंगे, भूखे थोड़े ही मरेंगे तुम्हारे साथ।

एक दिन एक आदमी आया और सेठजी को नमस्ते किया। सेठजी बोले–कौन हो भाई ? उस आदमी ने कहा– तुम्हारा पुण्य हूं। क्या कहना है तुम्हारा ? सेठजी बोले। हमारा अब यहां कोई काम नहीं, सो हम जाते हैं, उस आदमी ने कहा। सेठजी बोले ठीक है भाई जाइये। इसके बाद परोपकार भी चला जाता है।

अब सेठजी के पास दूसरा आदमी आता है। वो भी नमस्ते करता है–मैं दान हूं, अब मेरी कोई जरूरत नहीं है अब तक यहां दान-पुण्य होता था। अब सब बंद हो गया है, हम जाते हैं सेठजी बोले–हां, आप जाइये।

कुछ देर बाद एक महिला आती है। सेठजी पूछते हैं–आप कौन हैं ? महिला उत्तर देती है– मैं शांति हूं। आपके घर में दूसरों पर उपकार किया जाता था तो मैं आपके पास रहती थी। अब लोगों को लूटना शुरु हो गया है। अब मेरा यहां रहना तो कठिन हैं। मैं जाती हूं वह भी चली जाती है।

अब दूसरी महिला आती है। बड़ी सुन्दर है। अलंकार आभूषणों से लदी हुई है। आती है और नमस्ते करके खड़ी रहती हैं। सेठजी पूछते हैं–आप कौन हैं। महिला जवाब देती है– मैं लक्ष्मी हूं। सेठजी ने पूछा – लक्ष्मी जी आप आज कैसे आ गई। लक्ष्मी जी उत्तर देती है–मेरे सहचर दान, पुण्य, शांति आदि सब चले गये। उनके सिवाय तो मैं रह नहीं सकती। अब मुझे भी इजाजत दे दीजिए। सेठजी ने उन्हें भी जाने के लिए हां कर दी।

अब धीरे धीरे सब सूना होने लगता है। लक्ष्मी के जाने के बाद सब वैभव जाता है। इधर उधर सब उदासी छा जाती है। सब कारबार उल्टा हो जाता है। जो लोग आकर सर झुकाते थे, वे ही अब आखें दिखाने लगे। ऐसी विपन्नावस्था में एक जो सत्य है माने उसका जो पुत्र है वेदांत के हिसाब से सत् माने उसका पुत्र है जो उसको पालने में समर्थ है। सत् को पा लेने से उसका उद्धार हो जाता है, मोक्ष हो जाता है वो सेठजी के पास आये। सेठजी पूछते हैं– अब तो हमारे पास कुछ नहीं है भाई, सब चला गया। अब आने वाले आप कौन हो और किसलिए आये हो। आगुन्तक ने कहा–मैं सत्य हूं। मुझे भी अब जाने की आज्ञा दीजिये। सेठजी बोले–सब गया तो परवाह नही, तुम नहीं जा सकते। तुम सत्य हो न। हां। तो बस यहां बैठ। तुम तो मेरा जीवन हो। तुम्हारे

बिना मैं नहीं रह सकता। सेठजी सत्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। सत्य वहां रहता है। जैसे ही सत्य वहां बैठा वैसे ही जो सब गये थे, वापस आ गये। इसलिए "सत् मत छाड़ो सूरिमा सत् छांड़े पत जाय, सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय"।

धैर्य रखो। शम्, दम, उपरति, तितीक्षा समाधान और श्रद्धा–ये आचरण में आना चाहिये "सत्यम् वद धर्मम् चर" ये धर्म है, धर्म माने आचरण। इस प्रकार से इसको बोर्ड में लिखकर टांग देना और अपना जीवन व्यतीत करना, कभी कमी होने की नहीं, तुम्हारा भण्डार भरपूर रहेगा, सवाई–ड्योढ़ा आता रहेगा, लोग खाते पीते रहेंगे, तुम्हारे घर में भीड़ बनी रहेगी। आजकल एक या दो आदमी किसी घर में उतर जाएं तो उसका मुंह फूल जाता है क्योंकि वो मानव पशु हैं मानव नहीं है। नेकी क्या है– " नेकी कर दरिया में डाल"। किसका भाग्य है कि दो आदमी उसके घर में उतरे भोजन के लिए, एक मुट्ठी आप जो उनको देते हैं, किसके भाग्य में है ये। यही पुण्य कार्य, नेकी–बदी हम लेकर जाएंगे। पाप पुण्य कर्म हम जो करते हैं वही परिणाम हम लेकर जाएंगे।

तो तात्पर्य यह है कहने का, कि यह पट सम्पत्ति सर्व साधारण मानव प्राणी मात्र के लिए है। इसमें कोई Religion आड़े नहीं आता, न किसी का कुछ सिद्धान्त आड़े आता है। इस प्रकार से आचरण होना चाहिए। हम इसको धर्म कहते हैं और "सत्यम् वद्–" जो मालूम है, वही बोलना। नहीं मालूम, तो बस जरा रास्ता बता देना उसको, स्कूल जाओ, वहां जाओ, जहां जहां होने का है। उसका काम नहीं कर सकते तो कम से कम आदरपूर्वक उससे बातचीत कर सकते है, उसको विदा कर कह सकते क्षमा करो बाबा, हमको ये शक्ति नहीं, त नहीं, हम कुछ नहीं कर सकते, आप फलां जाइये आपका काम हो जाएगा, येऽऽ। उ Redirect कर देना।

तो तात्पर्य यह है हमारे कहने का आज जो पूजा हो रही है वो सत्ता की पूजा रही है, मेरी नहीं। इसे सत्ता कहा है, कहा गया है, तो ये सत्पुरुष की पूजा है। पूजा आप कर रहे हैं, आदर कर रहे हैं, ये सत की पूजा है। ये सत्ता जो है–"एकम् सत्, मेकम् पहले वही था, अभी भी है, आगे भी रहेगा। तो ये सत् जिसमें है, वो सत्पुरुष है, ये उस सत् की पूजा है, न कि ये वासुदे मां–बाप ने इस शरीर का नाम वासुदेव र लेकिन इस नाम में भी बड़ा रहस्य है– " अस्मिन वासः चासव देव वासुदेवः"–सारा जिस सत्ता के अन्तर्गत है, वो वासुदेव है। सत् को ही वासुदेव कहा गया है।

अच्छा, आनंद हो, मंगल हो, कल्या सबका भण्डार भरपूर हो, जीवन सफल पट सम्पत्ति युक्त हों, तुम्हें आत्मबल बाहुबल मिले, राजबल मिले, धनबल मिले, प्रकार का बल प्राप्त हो। दसों दिशा अ रहे, आनंद मंगल हो, कल्याण हो। पुरुष स्त्री हों, बालक हो, बालिकायें हों, मेरी अ सबके लिए समान है।

सर्वेऽपि सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भागभ
आनन्द हो, आनन्द हो, आनन्द हो।
ओऽऽम् तमसो मा ज्योतिर्गमय,
असतो मा सत्गमय,
मृत्योर्मा अमृतम् गमय। ओऽऽऽम्

C/4–९३ (रायपु

★ मानव शरीर कब मिलता है ★

मरना न हो, मरण न हो – हर आदमी जानता है। इससे कोई दिव्य प्राणी है नहीं। दिव्य को सम्पन्न प्राणी है। दिव्यत्व उसमें है। साधु सन्त, महंत ऐसे जो होते हैं उनके पास हम जाते हैं। क्यों जाते हैं? उस दुःख को दूर करने के लिये, करवाने के लिये, उनकी आशीष लेने के लिये ताकि जितना बन जाय हमें आराम हो जाय लेकिन वो दुःख दूर कहां होता है। जनम मरण तो आज तक किसी ने टाला नहीं। कुछ परिवर्तन होता है। सान्त्वना मिल जाती है ये बात उतनी ही सही है।

रामायण में चौपाई है कि मानव शरीर कब मिलता है जब उसका पाप और पुण्य दोनों बराबर हो जाते हैं। नाना जन्मों के किये गये कर्म की राशि में जब पाप पुण्य दोनों पलड़ा बराबर होते हैं तब मनुष्य जन्म मिलता है।

ये सब हम बचपन में पढ़े हैं। गीता और पातंजल योग दर्शन, ये ही दो चीज हमारे हैं। आज भी हैं हमारे पास। कहने का तात्पर्य ये है कि ये विद्या भारत में ही है। भारत– "भा" नाम ज्ञान का है। "भा" नाम प्रकाश का है। "भा" नाम ज्योति का है और "भा" नाम नक्षत्र का। "भा" नाम नक्षत्र का भी होता है। हमारी पृथ्वी भी एक लाइट है। हमको इस प्रकार दिखता नहीं, लेकिन पृथ्वी के अन्दर बाहर सब जगह प्रकाश है। सूर्य प्रकाश अलग है। ये पृथ्वी का जो प्रकाश है वो अलग है। अब "रत", माने लगे रहना। Perseverance माने लगे रहना। Perseve माने लगे रहना। लगे रहना, किसमें? ज्ञान में। कौन-सा ज्ञान? आत्म ज्ञान। हमारे में जो है विद्यमान, जिसके निकलने पर ये शरीर को जला दिया जाता है। वो क्या है? वो आप हैं। हम देह नहीं हैं, आत्मा हैं। अंग्रेजी में Soul कहते हैं।

जीवात्मा तभी तक है जब तक कि इन्द्रियों के वस में पड़ा हुआ है। "परवश जीव स्ववश भगवन्ता"– रामायण में कितना सुन्दर दिया है तुलसीदास जी ने। परवशता माने इन्द्रियों में हम लगे हुए हैं। इन्द्रियार्थ–इन्द्रिय और अर्थ, तो किसी में अर्थ और ढूंढ़ा जा रहा है। ये मेरा, ये मेरा, ये मेरा, बस अपनी ही एक वृत्ति, और कुछ भी नहीं है। तो तात्पर्य ये है हमारे कहने का, कि ये जो पाप पुण्य दोनों बराबर होते हैं, अनेक जन्मों के कर्म करते करते जो राशि, माने तराजू जो बन जाता है उसके सारे भार से जब पलड़े बराबर होते है तब मनुष्य का जन्म होता है।

सत् किसे कहते हैं। किताब पढ़ना सत्संग नहीं है, वो प्रसंग है। सत् माने आत्मा। सत्, जिसकी ये सत्ता है। सत् माने Energy। सत् माने Cosmic Energy। सत् माने Divine Energy। वो है सत्। तो "जनम जनम के पुण्य जब उदय होहिं इक संग। तब जावे मन की मलीनता, तब भावे सत् संग॥" ये वशिष्ठ जी, विश्वामित्र जी का झगड़ा है। सात हजार वर्ष तपस्या किया। वशिष्ठ जी बोले– ये मेरा है तो मैं क्या बताऊं आपको। सत्संग उससे बड़ा है। सत् का संग उससे बड़ा है। अब

निर्णय कौन देगा। दो आदमी जब अपना विषय लिये तो निर्णय करने वाला भी होना। ये पौराणिक है। शेषनाग के पास पहुंचे। तो शेषनारायण कहते हैं– भई, ऐसा करो ये बोझा मेरे सिर पर है, कैसे न्याय चुकायें, ये जरा सा हल्का कर दो, हाथ लगा दो। तो अच्छी तरह से समझा के बता सकता हूं। विश्वामित्रजी से कह दिया गया कि थोड़ा सा हाथ लगा दीजिये। सात हजार वर्ष का जो पुण्य है तुमने किया, हाथ लगा दो। तो पृथ्वी टस से मस नहीं हुई। फिर वशिष्ठजी से कहा गया। वशिष्ठ जी ने कहा-ठीक है। बोले- लौ मात्र, लौ माने ये पलक मारना उसको लौ कहते है, जितना टाइम जाता है। जो अवधि पलक मारने खोलने में होता हैं– वो लौ है। तो निमेष जो है एक लो झुकाने पर जितना समय लगता है, बोले– इतने समय तक भी अगर मैंने सत् का संग किया हो (देखिये आप, ये Practical Side है, ये अभ्यास गम्य है। किताबों से नहीं हैं। किताब मृत गुरू हैं। वो भी गुरू है लेकिन मृत गुरू है क्योंकि वहां जवाब नहीं मिलता, उत्तर नहीं मिलता। आप कितना ही पढ़ें, आपकी शंका, संशय बढ़ती चली जाती है कम नहीं होती।) लौ मात्र भी अगर मैंने कभी इस सत्, जो कुछ है इसका संग अगर हो गया हो माने पाया हो, मिला हो या उसका मुझे अनुभव हो तो पृथ्वी उठ जाय। तो पृथ्वी उठ गई। शेष नारायण कहते है– देखिये ये निर्णय है। शेष भगवान क्या कहते हैं– ये निर्णय हो गया। तो तात्पर्य ये है कहने का कि ये सत्, आत्मा ही सत् है। इसी सत्ता से सारी दुनिया खड़ी हुई है और साइंटिस्ट भी सब उसी ओर जा रहे है। वो सत् है।

तो "जनम जनम के पुण्य जब उदय होंहि इक संग", माने वो जो पाप है वो तो गया, वो हल्का पड़ता चला जाता है और अनेक जन्मों का पुण्य जब एक साथ उदय होता है तब ये सत् की ओर (ये सत् वस्तु है, ये सत् शक्ति है) हमारा मुंह मुड़ता है। हम उस ओर जाते है और खोजने में लग जाते हैं। कब तक किताब पढ़ेंगे आप गेहूं बोना है फिर पानी आयेगा, फिर खाद देंगे फिर बढ़ेगा, फिर फल आयेगा, फिर काटेंगे माने करी शेखचिल्ली वाली बात। अरे भूख लगी है भई, जो कुछ बना हो सो दे दें। फिर स्वाद नहीं देखता आदमी, बासा नहीं देखता, सूखा नहीं देखता। भूख लग जाने के बाद, दाल भात या जूठा भात। तो तात्पर्य ये है कहने का, ये ऐसी चोट लगनी चाहिये। ये जनम जनम का पुण्य जब उदय होता है, पुण्य माने आपके कर्म राशि पु नाम नर्क का है। ण्य से न्यस बना है माने नाश। नर्क जाने के जो कुछ आपके साधन वासनाएं वो जब क्षीण हो जाते हैं, जब आप शुद्ध हो जाते हैं तब ये जो सत्ता है यजुर्वेद में मंत्र दिया है– 'हिरण्य गर्भः समवर्तताग्र भूतस्य जातः पति रेक आसीत, सत् आधार पृथ्वी आत उद्दमान कस्मई देवाय निशादि देव।" आत्मदेव से बढ़कर कौन सा देव है। जिसकी हम आहुति दें। किसको हम भोग लगाएं, किसको हम आहुति दें। इससे बढ़कर और कौन सा देव है। जब वो प्रगट होता है तो सगुण होता है। वो निर्गुण जो है, सगुण होता है। सगुण माने प्रकाश।

भाऽऽ रत – "भा" के रूप में आपको ज्ञान होता है। "भा" के रूप में बोध होता है। आत्मा का दर्शन होता है। आत्म–साक्षात्कार होता है। दर्शन होता है। मिला है, बहुत लोगों

को मिला है। भारत में यही एक विद्या है जिससे सारे जगत में उत्तम और कोई विद्या नहीं। कृष्ण ने इसको राजविद्या कहा है। विवेकानन्द ने राज योग कहा है। सोचने की बात है ये, ये विद्या हमने छोड़ दी, इस ओर हम झुकने को तैयार नहीं, करने को तैयार नहीं। अरे, थोड़ा बहुत तो चलो आगे, एक एक बूंद से घड़ा भरता है। इस दोहे में संतों के वचन हैं-" जनम जनम के पुण्य जब उदय होंहि इक संग" माने हजारों जन्मों के बाद है भाई। मुझको तो आज तक कोई नही मिला-हम दिखा दें आपको। मैं भारत में बहुत फिरा हूं। Example दुनियां भर के देते हैं। मैं भी देता हूं। ये आंख की पुतली है, आपने कभी देखा है दर्पण में, आइना में, Mirror में। आप अपने आंख की पुतली देखें हैं क्या? जिसको Pupil कहते हैं। Pupil कहते हैं इंग्लिश में। मैंने देखा है। ये जो आँख की पुतली भीतर है, बीच में छेद है, वो जो दिखता है किसी ने देखा है क्या ? नहीं। हो गया, ये फिर क्या बतायेंगे। यही ब्रम्ह है, ये झूठ बात हैं। ये तो केवल उदा. हरण है। उस ओर आपकी बुद्धि को खींचने के लिए है केवल।

आज जो लोग ऐसा करते है कि देखो, ये ब्रम्ह है। अरे, ब्रम्हा माने क्या "महान"। ऐसे आप महान हो गये हैं क्या। जब आप महान हो गये हैं तो फिर आपकी महानता में जो कुछ शक्ति और गुण है, वो कहां है। न आपका कल्याण हुआ, तो स्पर्श होकर और किसका कल्याण हो सकता है आपसे। ये सब भ्रम और भ्रांति है। मानव का जन्म इस तरह से होता है-जब अनेक जन्मों का पुण्य उदय होता है माने जब दोनों बराबर होते हैं तब जन्म होता है। जब दोनों बराबर होने पर आ गये तो इस ओर कब झुकता है जब "पु" नाम नरक का, माने जो वासनाएं हमें जनम मरण का कारण बना देती हैं वे वासनाएं, वे जो कर्म हैं, वे कर्म राशि, "पु" नाम नरक में, नारकीय जो दुखी आत्मा होने के है, ण्य (न्यस) नाम नाश का है, वे जब कर्म की, किए गए परिणाम जब नाश होता है तो कैसे नाश होता है-साधना से होता है। आगे शक्तियां मिलना है-हम ऐसा करेंगे, वैसा करेंगे ये सब कल्पना मात्र है।

मैं तत्व की बात बोलता हूं-वो है आत्मा वो हैं आप। आप देह नहीं हैं, आत्मा हैं। आत्म जो शब्द है, 'आ" से आनंद शब्द की उत्पत्ति है और मकार से त्रिगुण दूर, वही उत्पत्ति, स्थिति, लय। ये वही चीज हैं। जिस पद को प्राप्त करना है, उसका नाम है परम, परमपद। ये पद है, परम है-न घटता, न बढ़ता, सब कुछ ये है। दर्शन होता है हिरण्य नाम स्वर्ण, स्वर्णमय रंग, सोने के जैसा कलर होता है, रंग होता है, वर्ण होता है। इस प्रकार से वर्ण में ज्योति का दर्शन होता है। इस वास्ते, इस देश का नाम है भाऽऽरत। भरत नहीं भाऽऽरत। अब खींचतान के बोलते हैं-वो दुष्यंत का लड़का, शकुन्तला से पैदा भरत, जो राजा हुआ। अरे, अरे, वो तो अभी पैदा हुए, गये भी संसार से। है तो पहले से भारत। "भा" नाम ज्ञान का है। यहां का प्रधान अंग अगर है तो ज्ञान और वो कौन-सा ज्ञान है-आत्म ज्ञान। "आ" से आनंद शब्द बना है और मकार से उत्पत्ति, स्थिति, लय। वो पद, वो स्वरूप, ये स्वरुप, ये काशाय जो भाव है जो सन्यासी लोग पहनते हैं। काशाय वस्त्र, ये काशाय पूर्ण निकल जाय माने काम, क्रोध, मद, मान। राग द्वेष-ये मेरा है,

ये मेरा नहीं है। ये अपना है, ये पराया है।ये मित्र है,ये शत्रु है। भेद–उंच नीच का। ये भ्रम, जब दूर होता है। तब दूर हो, तब तक नहीं दूर होता है।

तो ये राग निवृत्ति से प्राप्त होने वाला स्वरूप, स्वऽऽरूप, स्व माने स्वयं का रूप। स्व और कौन है ? स्व माने स्वतः। स्व माने ये प्रकृति, जिसको ये लोग उपग्रह बोलते हैं। ओषो बोलते हैं माने सम्य है। हम विषयाधीन जिसको कहते है, ये ओषो कहते है। आसो भी कहते हैं। आसव भी कहते है। ये ओषो शब्द है। तो ये पद जो है आत्म–पद, ये परम है। आत्मा ही परम है। इसे शब्दो परमात्मा कहा गया है। गीता में दिया है–"मानव सु उपद्रष्टा"– वो साक्षी है, सबको देखता है। वो महान है। Cosmic Energy है, Divine Energy है– सबको देखता है। सब समझता है।वेद में उसको ज्ञाता कहा गया है। **हम मनुष्य हैं। हम ज्ञानी कहला सकते हैं लेकिन ज्ञाता नहीं कहला सकते। ज्ञाता का बोध होने के बाद ही आप ज्ञानी होते हैं।** ज्ञेय वस्तुएं हैं, संसार प्रपंच है– ये आपको ज्ञेय हो जाते हैं, ये नाशवान है, परिवर्तनशील है। तो अपरिवर्तनीय, ऐसा कौन–सा पद है। वो ज्ञाता है जिसको Cosmic Energy कहते हैं, Divine Energy कहते हैं, दिव्य कहते हैं, दिव्य शक्ति कहते है-वो ही महाशक्ति है। वहां पहुंचने पर, इसी शरीर में होता है वो पद। वही परम पद है। तब जाकर वो स्थिर होता है। इसको चरित्र कहा है।

अभी हमारा कोई चरित्र नहीं है। ये चरित्र में नियम दिन ब दिन भंग होता है। संयम नहीं है,नियम नहीं है। आप सब कोई अपनी छाती पर हाथ रखिये और देखिए, हम कितने नियमित हैं, कितने संयमी हैं। हम कितने नुकसान पहुंचाने वाले लोग हैं। हम कितने झूठ बोलते हैं, असत्य बोलते हैं, मारते लूटते है लोगों को। कैसे लोगों को भगाते हैं हम और चोरी, प्रत्येक सेकण्ड–छुपाके लो छुपाके तुम मत बोलो,दबाके रखो, इसको मत दो, उसको मत दो फिर चाहे खाना हो या पीना हो या कुछ भी वस्तु हो।

ब्रम्हचर्य ब्रम्हणि चरति इति ब्रम्हचारी। ब्रह्म तत्व में, जिसका मन, बुद्धि लीन हो गया है, वो ब्रम्हचारी है। इस व्रत को, ब्रम्हचर्य व्रत कहते हैं। ब्रम्हचारी माने ये नहीं, कि हम शादी नहीं करते, हम ब्रम्हचारी हैं। झूठ बात है ये। नाना जन्मों के जो उसके संस्कार हैं वो स्वप्नावस्था में आएंगे हजारों बार, मैं चिकित्सक हूं मैंने ये सब खोज निकाला है, मैं बीस साल प्रैक्टिस किया हूं। गोया कि मैं Qualified नहीं हूं लेकिन रहस्य को जानता हूं मैं।

अपरिग्रह- धीरे धीरे वो मस्ती चढ़ती है फिर उसके बाद कुछ भी नहीं है। आपको Resistance Power बढ़ाना है फिर आप जैसा चाहें रह सकते हैं। एक व्यक्ति के जेल में जाने के बाद उसको कम्बल मिलता है। उसमें खटमल काटते है तो वहां भी नींद आती है और तगड़ा होकर निकलते है बाद में। नीम का कीड़ा नीम में पैदा होगा लेकिन मरता नहीं और गुड़ का कीड़ा नीम में रखोगे तो मर जाएगा। ये तो खाली Resistance Power बढ़ाना है मने जीवनी शक्ति को बढ़ाना है। आप हर ऋतु में

नंगा रह सकते है। आप प्रेक्टिस करिये, होता है, Resistance Power बढ़ जाता है। चीज है जितेन्द्रिय होना। "विषयाविनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः"। ये विषय से आप निवृत हो सकते हैं? झूठ बात है। अपरिग्रही – ये स्थिति जब हो जाती है तो उसके पास कुछ रहता हैं, कुछ नहीं भी रहता, लेकिन सारा कुछ उसका है ये। सब कुछ होते होते हुए भी कुछ नहीं है और कुछ भी न होते हुए सब कुछ है - इन्हीं को समर्थ कहते है। "समरथ कहुं नहिं दोषु गोसाईं, रवि पावक सुरसरि की नाईं"! हम उपमा तो दे देते हैं लेकिन आप है क्या ऐसे? ये आप का Status, स्थिति प्राप्त हैं आपको? अपरिग्रह माने हम कुछ नहीं रखते है पास में, देखो हम नंगे हैं - ये नहीं है। अपरिग्रह ये है कि "कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम समर्थः" – नहीं करते हुए सब कुछ करता है। सब कुछ करते हुए कुछ भी नहीं करता। विद्यमान – कुछ भी नहीं करता लेकिन विद्यमान है। अभय, इसको समर्थ कहा गया है। Medical term में इसको Catalyst कहा, केटेलिटिक एजेन्ट। उसके प्रजेन्स से, उसके प्रभाव से उसका काम हो जाता है। इससे बढ़कर दूसरा उदाहरण ही नहीं है। जो समर्थ होते हैं उन्हें इसलिए "रवि पावक सुरसरि की नाईं" कहा गया है। मैंने पांच व्रत बताया ये सब हमारे अंतःकरण में घूम रहे हैं। अहिंसा, अब नाम बताता हूं – सत्य, अस्तेय माने चोरी न करना, ब्रह्मचर्य। हैं sss? और अपरिग्रह, है क्या कोई? बातें हम लोग करते हैं धर्म की, बातें करते है ब्रह्म की, बातें करते हैं आत्मा की, लेकिन हमारा आचरण कहां तक है, कहां तक हम गये हैं। खाली किताबों से कुछ नहीं होता।

आठ तरह से हम पूरे वृत में फंसे है। "घृणा, शंका, भयं, लज्जा, जुगुप्सा तितिपंचम कुलम् शीलम् च ज्ञानं च अष्टौपाशा प्रतिविदा" ये आठ पाश हैं। सारा मानव समाज बंधा हुआ है। 'पच्यंते पापकर्मभि नाना योनी सम्पन्ना पच्यते पाप कर्मभि"। घृणा उंहss, क्या रखा है। कहीं भी जाओ, छोटे बच्चे से लेकर महिला हो या पुरुष तक कहते हैं – क्या रखा है उसमें, वो सब तो मैं जानता हूं। फिर शंका – अरे s s, चोर तो नहीं, क्या लेने आया है, क्या बोलने आया है। शंका के तीन अर्थ हमारे पास हैं। एक तो शाम काशा ति इतिशकां – कोई जिज्ञासु है, जिज्ञासा लेकर आया है कुछ जानने के लिये – भई पोस्ट आफिस किधर है थोड़ा बता दें या थाना किधर है हमको बता दीजिये। ये जानने के लिए आता है ये ठीक है, ये नियम के अन्तर्गत है। दूसरी शंका–वस्तु के खो जाने की आशंका शंका। अरे भाई पड़ा है, लोग आते जाते रहते है अगर देखेंगे और कोई ले जायेगा तो। तीसरी शका - निज अस्तित्व के खोजाने की। दो आदमी आकर बोले - चलो, चलो तुमको बुला रहे हैं तुम्हारा आदमी वहाँ गिर पड़ा है। नहीं, नहीं, नहीं जाना नहीं। सोचा कि ये क्यों बुला रहा है, कौन है, पहचान का है या नहीं क्योंकि जैसा ही कहा ठहरो ऐसा हो जायेगा। वैसे ही उसका जो हेतु और उद्देश्य है सामने आएगा यहां तक की वो आगे चलकर भाग सकता है, अगर दूसरा है तो। आजकल एकदम घर दरवाजा खोल देते है लोग घुस गये तो, ये शिक्षण है ही नहीं, उसकी आवाज है तो पहचान का है, पुकारना चाहिए वो बोलता है अगर नहीं बोलता है तो कभी नहीं खोलना। हमारी शंका के तीन अर्थ आपके सामने रखा है। तो ये Resistance Power बना रहें ये Status

है ये अन्तिम परिणाम है। ये अभ्यास करने पर जो लोग कहते हैं अहिंसा है, सत्य है, व्रत करेंगे वो सब व्रत ठीक है, सब ठीक ही ठीक है यहां से वहां तक। उनके जाके चरित्र देखो ये चरित्र नहीं है। चरित्र ये है – चरि + त्र, ऋ से यकार वहां प्राप्त होता है, "ई" को यनज– 'ई" से ये आता है। "य" उद्यप्त होता है तो चर्य बना है तब ऋ उड़ गया और चर्य बना। प्रकायते – ये चर्या जब आपकी होगी, दिनचर्या रात्रीचर्या ये मालूम हो जाय उसको ये चरित्र जो है य चर्या, आचरण है कुछ हमारे पास, ये चर्या है तब त्रायते महतो भयात्। अब स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य– ये धर्म एक बार भी, लब मात्र उस सत्ता के माने आत्म ज्योति का एक बार भी दर्शन हो जाय तो आपका कल्याण हो गया, इस जन्म का कल्याण बन गया, आगे से वही रहेगा। फिर न पाप है न पुण्य, बस केवल पुण्य है, एक बिजली चमका देने से सब अंधेरा दूर हो गया। ये ऐसे है। हिरण्य गर्भ – उस गर्भ के अंदर हम सब लोग हैं, उसके बीच में हम है। अंदर बाहर सब जगह ज्योति है वो ज्योति हमको दिखाई नहीं देती, लेकिन दिखाई देती है बिल्कुल दिखाई देती है बिल्कुल सत्य है, आत्मा स्वयम् ज्योतिर्भवति। ओम् शांति शांति शांति।

C/19– मुंगेली

※ ※

"प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म" है। प्रकृति माने स्वभाव। प्रकृति जो हमारे आजू बाजू सक्रिय है उसका धर्म है – उत्पत्ति, स्थिति एवं लय। इसको कोई आज तक बदल नहीं सका। दो के संयोग से तीसरे की उत्पत्ति होती है। इसकी भी अवधि है, सीमा है। प्रकृति की इस क्रिया में आज तक कोई परिवर्तन नहीं ला सका। Cross कर सके, संकरता ला सके लेकिन कोई नवीन पौधा हमारे सामने नहीं लाया जा सका और न ही प्रकृति की ये जो गति है, क्रिया है इसमें ही कोई परिवर्तन या नवीनता लाई जा सकी है। इसलिये "प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म" कहा है।

※ ※

प्रकृति माने स्वभाव, जिसे अंग्रेजी में Habits कहते हैं। जिसको व्यसन कहते हैं। आज हमने अपना स्वभाव ऐसा बना लिया है कि हमारा स्वभाव बिलकुल नकली हो गया है। हम जो करते हैं वह हमारी आदत के अनुसार है। हमारे व्यसनों पर आधारित है। हमारा जीवन व्यसनाधीन हो गया है याने विषयाधीन हो गया है। हम पराधीन हो गये हैं। हम स्वाधीन नहीं हैं। इसलिए "भाव" जो शब्द है उसे स्वभाव कहा गया है। "स्व" माने "आत्मा"।

हम जन्म से बहिर्मुखी हैं

हमारी प्रकृति जो है, ये केवल विकृति के सिवाय कुछ नहीं है। विकृति माने विकार। हमारी प्रकृति शुद्ध नहीं है। साधना में प्रकृति को शुद्ध करना है और कुछ नहीं। प्रकृति माने स्वभाव। "स्वभाव मुनवर्तते"– प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार ही आचरण करता है। अभी हमारा स्वभाव सारे दोषों से भरा पड़ा है। प्रत्येक व्यक्ति कहता है कि ये दोष छोड़ दो, ये दोष छोड़ दो लेकिन ये छूटता नहीं। दोष चार हैं– कल्पना, भावना, वासना और कलना। ये चार ही हमारे चारों ओर चल रहे हैं। कल्पना- हम बैठे बैठे कल्पना किया करते हैं। दुनियां भर की कल्पना करते हैं। यहां से स्वर्ग तक की सीढ़ी बांध देते है। कल्पना, कल्पना ही है। कल्पना क्यों करते है- एक तो अनेक जन्मों का संस्कार पहले से है हमारे मस्तिष्क में। समाज में आते है पढ़ते, लिखते, देखते और सुनते है तो प्रलोभन में पड़ जाते है क्योंकि उसके शरीर में जो इद्रियां हैं ये सब बहिर्मुखी बनाई गई है। चाहे कोई भी सम्प्रदाय का प्राणी हो, कोई भी देशवासी हो, उनकी इद्रियां बहिर्मुखी बनाई गई हैं। तो वो फंसेगा ही फंसेगा, वो छूट नहीं सकता है। ठीक है अपने मुंह से कहा करो कि हम विद्वान हैं, हम पहुंचे हुए है या हम बड़े त्यागी हैं।

संसार को देखने से रोज नित्य हमारे सामने कुछ चरित्र आते हैं जो सारे विकार युक्त रहते है। सारी दुनियां कहती है कि ये ठीक नहीं है, ये बंधन है, ये भय है, ये धोखा है लेकिन उससे निकलने के लिये प्रयत्नशील कुछ ही लोग हुए हैं। और प्रयत्नशील होने पर भी मार्गदर्शक उनको नहीं मिलते हैं। बहुजन समाज बहिर्मुखी है। क्वचित लोग अन्तर्मुखी होते हैं। ज्ञानेन्द्री, कर्मेन्द्री, बुद्धि, चित्त, मन ये हमारी सारी इद्रियां बहिर्मुखी हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहं- ये चार अन्तःकरण कहते हैं। ये अन्तःकरण केवल काम का है। ये अन्तर्मुखी के लिये है और बहिर्मुखी के लिये भी। जब तक हम बहिर्मुख हैं, अन्तर्मुख नहीं हो पाये हैं तब तक हम विकार ग्रस्त हैं। ये लांछन नहीं है, ये आरोप नहीं है, ये सत्य है।

प्रत्येक व्यक्ति राग द्वेष,अविद्या, अस्मिता और अभिनिवेश– ये पांच क्लेश में बधा हुआ है। अविद्या– कुछ भी नहीं जानता, बोलने से समझता है और बोलने पर भी नहीं समझता है। क्यों बोल रहा है ये भी उसको मालूम नहीं। अस्मिता- मैं हूं। भई, कौन हैं? मैं हूं। अरे बाबा नाम वाम तो होगा। नाम नहीं बोलेगा। मैं हूं मैं हूं, जो कहता है, इसको Ego कहते हैं। ये अहंकार है। अहम्– मैं, मैं हूं, मैं करता हूं। अपने आपको कर्ता मान लेता है। राग-ये अपना है, ये अपना नहीं है। द्वेष– ये शत्रु है इसका नाश हो किसी प्रकार से। ये उजड़ जाय, न आय तो ठीक है। ये सब बातें पैदा होती हैं। कोई व्यक्ति ये नहीं कह सकता कि मैं शुद्ध हूं। आप नहाकर आये, बाहर से पाउडर वाउडर लगाकर, स्प्रे वगैरः लगाकर आये वो ठीक है, आप अच्छे हैं। अच्छा भई, इत्र लगाये हैं, वाह वाह क्या बात है। बस, इतना ही है। बाकी जीवन में

कोई परिवर्तन नहीं है। सब विकार उसमें भरा है। अभिनिवेश- Fear of death माने मृत्यु भय। मैं मरूं क्या, मर तो रहा हूं। मरना ही है सबको। ये पांच क्लेश है।

तीन प्रकार के कर्म होते हैं- शुभ कर्म, अशुभ कर्म और शुभाशुभ कर्म- निष्ठ कर्म। ये तीन कर्म अबाध गति से होते रहते हैं। करता है, करवाता है और अनुमोदन भी करता है। ये तीन प्रकार के कर्म से मनुष्य ऐसा बद्ध है, ऐसा बंधन में पड़ा है, ऐसा जकड़ा हुआ है कि वो हिल नही पाता। क्या करना है भई, रोजी रोटी की बात है। ये बहिर्मुखी होने के कारण उसका सारा जीवन अभावपूर्ण रहता है। अभाव के सिवाय उसके पास कुछ भी नहीं है। ये कम है, ये कम है, ये कम है। ये नहीं, ये नहीं, ये नहीं। वो देना है, वो देना है, ये देना है। तुम भूखे रहो, हमको तो ये देना है, देना है। अगर जिनको खाने को नहीं है वो कर्जा लाकर नहीं दिया तो ठीक हैं, क्षम्य है। जिनके पास खूब है और वो नहीं देता है, ठीक है, लेकिन न्याय सबको पीसता है। खाने को नहीं है तो बर्तन दे दे, तू मर भूखा हमको इससे मतलब नहीं है।

अभिनिवेश- सदा भय बना रहता है। पक्का मकान सीमेंट कांक्रीट का, फिर भी ताला- एक दरवाजे पर, दूसरे दरवाजे पर, तीसरे दर-वाजे पर और खिड़की ऐसी कि उस तक हम पहुंच न सकें लेकिन घुसने वाला घुसता ही है।

हमारे कर्म जो हैं इस प्रकार से कर दिया जाता है, करवाया जाता है और अनुमोदन किया जाता है। हां, हां, बहुत अच्छा, मार उसको, देखा जायेगा। मैं हूं न। मैं खड़ा हूं न, क्या देखते हो। और जहां तुम आगे बढ़े त्यूं खिसके। ऐसे जो होते हैं, उनके लिए एक शेर है "जहां में जहां तक जगह पाइये, खिसकते खि-कते खिसक जाइये।" काम होने पर- अरे भा क्या करता, मानसरोवर जाना पड़ गया इसलि समय पर नहीं आ सका Preside क के लिये, लेकिन वो सोये थे घर में। ऐसा होता ये खिसकना पड़ता है। नाम नहीं लेता लेकि सत्यकथा है। मनुष्य इतना विकार ग्रस्त है उसके मन में ये विकार हैं- कामना, का क्रोध, मद, लोभ, मान और मत्सर।

रामायण में तुलसीदास जी ने साफ लि है- "ऊंच निवासु नीचि कर तूती, देखि न सक पराई बिभूती"- ये सबको लागू है। मेरे बढ़कर पैसा वाला हो जाय, कैसे बढ़ता है आ इसको वित्तैष्णा कहते हैं। ये तीन इच्छा मनुष्य के जीवन में। खूब पैसे वाला हो जा सब मेरे पास आयें। लोक में मेरा मान हो लोकेष्णा। हमारी संतान होना चाहिए। ए शादी से नहीं होता, दो शादी से नहीं होता तीसरे से, फिर करते चले जाओ। एक लड़क और होना, बस हो गया। मेरा नाम चलायेगा संतान से नाम नहीं चलता। दशरथ गये गु महराज के पास, बोले- चौथा पहर होने क आया, संतान तो होना, गादी कौन चलायेगा गुरू महराज बोले- हे राजन, ये ख्याल गलत तेरा, संतान से नाम नहीं चलता। क्या बड़े ब महानुभावों ने अपना नाम नहीं कमाया है उन्हें भी अपना नाम कमाया है। अज, भगीरथ, रघु दिलीप देखिये, जितने बड़े बड़े लोग, बड़े ब तपस्वी, बड़ी बड़ी हस्तियां जिन्होंने दुनियां क हिला दिया, प्रवर्तांचार्य, जिन्होंने नये नये सम्प्र दाय खड़े किये, अपने आप से नाम कमाया।

संतान से नाम नहीं होता है। राजन, ये ख्याल तुम्हारा बराबर नहीं है, ये भ्रम है। यदि संतान लायक हुई तो आपको कमाकर देने की जरूरत नहीं, खुद कमा लेगा और यदि नालायक हुई तो आप जितना देगें, एक दिन में साफ कर देगा। ना, ना इससे काम नहीं चलता। आप सोच के रखिए ये अपनी नियति है और हमारा जीवन विकार पूर्ण है।

अमर जो हो चुके हैं ये भी एक Creation है, ये भी एक सृष्टि है उनका मानव से कभी भला नहीं होता। इसलिये तुलसीदास जी ने लिखा है 'देखि न सकहिं पराइ विभूती'– विभूती माने वैभव। उसका सुख, उसका कल्याण, उसका यश, उसकी कीर्ति वो देख नहीं सकते क्योंकि वे खुद तो सुखी हो चुके हैं।

हम विकार ग्रस्त है। हमारा मन मल से मलीन है। सोचना, विचारना, विवेक करना ये दूर हो चुका है। अब जो जैसा कहे चल पड़े– अरे, कौवा कान ले गया, ऐसा क्या! चला कौवा के पीछे। कान टटोलेगा कोई नहीं। फुरसत नहीं कान टटोलने की। कान तो ठिकाने पर है। जब धक्का खाता है तो देखता है कि कान तो अच्छा है। ये आज हमारी हालत है। इस प्रकार हमारा स्वभाव आज इन तमाम मलों से मलीन हो चुका है। इन्हें दूर करने के लिए मनीषियों ने मार्ग ढूंढ़ा। हमारे प्रवर्ताचार्य हुए है, प्रत्येक सम्प्रदाय के जो आदि पुरुष हुए हैं, वो किस प्रकार महान हुए और क्या, कैसा है, दुनियां में आके उन्होंने करके दिखाया कि तुम भी ऐसा करोगे तो हमारे जैसे हो जाओगे। लेकिन हम इतने मतलबी है– अरे भई, वो करके गये, अपने से नहीं होता, अपने से नहीं बन सकता। उनने किया, वो जानें।

योग दर्शन में एक शब्द है जिसे त्यान कहते है। नौ विघ्न होते हैं– व्याधिस्त्यान, संशय, समादालस्य, अविरत अविरति अलब्ध भूमिगत शांति दर्शन अलौकिक तत्व, चिर दीक्षात विक्षेपात त्येनपराय– चित्त को विक्षेप करने के लिए यहां मंत्र दिया गया है। चित्त को विक्षेप करने के लिये, विशुद्ध करने के लिए नौ विघ्न हैं। दसवां नहीं है। ये हमारे यहां की लाजिक है। इसके बाद कोई साइकोलाजी नहीं है, चाहे कोई भी विषय हो। त्यान का अर्थ ये होता है कि राम ने सेतु बांधा और दूसरे इससे पहिले उनको पूजते चले आ रहे हैं। सेतु लोभी नहीं हैं हम और सेतु राम ने नहीं बांधा बल्कि नल भील और बंदरों ने बांधा है। ऋषियों का शाप था उनके कि तुम पत्थर छियो तो तैर जाएगा। तो उस पार जाना है भई, कैसे जाएंगे। तात्पर्य ये है जो मानो मालिन्य है इस तरह के बिना दूर नहीं होते क्योंकि हमारी इंद्रियाँ बहिर्मुख हैं तो बाहर के प्रलोभनों में फसेगा ही फंसेगा। इसलिए हजारों साल तपस्या करने पर भी अपने ब्रख लोग विचलित होते गए और तपस्वी होने के कारण उनकी जो संतान हुई हैं वे बहुत भ ग्यवान, पुण्यवान हुई हैं माने बाहर के वैभव, ऐश्वर्य वाले हुए हैं और खुद धनवान, राजा महराजा हुए हैं लेकिन राजा महराजा होकर भी संस्कारी तपस्वीयों के संपर्क में आकर घर छोड़ दिए, निकल गये अपने आपको जानने के लिए और उस चीज को प्राप्त किया, उस पद को प्राप्त किया। पद प्राप्त करके हमारे सामने सम्प्रदाय रखा। सांप्रत, अभी क्या चाहिए, उन्होंने हमको दिग्दर्शन किया, मार्गदर्शन दिया लेकिन वो मार्ग-दर्शन हमने छोड़ दिया। उनकी खाली Statue

बना दिया, बस । तू ही भगवान है । न खाता, न पीता, न बोलता, न चालता । इसलिए दुनियां तो भगवान बोलती है । इसलिए हम उनकी पूजा करते हैं क्योंकि आदर्श थे । अनुयायी हम हो नहीं सकते, क्यों नहीं हो सकते क्योंकि आज मार्गदर्शन करने वाला नहीं है ।

वो रास्ता है अन्तर्मुख होना, उस दिन जो कहा कि 'सनमुख होई जीव मोहि जवहीं, जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं,तभीSSS । 'ब' "ह" मिलकर"फ"बना है,तभीSSS । जब सनमुख आयेगा तब । सनमुख माने क्या । मुख नाम विवर का है । ये विवर हैं, खोल है, छेद है, छिद्र है इसमें हम जाते हैं । इधर बाहर ही बाहर हैं हम । एक विवर और है भीतर, इधर डालते हैं उधर से निकल जाता है, ये सब कोई जानते हैं । लेकिन एक विवर और है वो विवर बिल्कुल गुप्त है । वो गुप्त विवर सत्पुरुष के द्वारा, सद्गुरु के द्वारा या जो कोई हो, अनुभवी के द्वारा अगर मार्ग-दर्शन पा लिए या उनके बताए हुए मार्ग से, आदेश का पालन करें तो फिर दरवाजा भी खुलता है, ओदवान खुलता है, विवर खुलते हैं । जैसे सुग्रीव ने बाली को बंद कर दिया था । राक्षस से लड़ा और खून बहा तो बाली का भी खून वैसा था, वो डर गया कि जो आयेगा, हमको भी मारेगा तो उठाकर पत्थर डाल दिया तो बाली था उसको हटाया । तो वो जो दरवाजा है, ऐसा बन्द है ।

वासना, कल्पना, भावना और कलना-ये चार शब्द हैं । तो बाहर की जो चीज हम देखते हैं ये केवल कल्पना करते हैं-हमको भी हो जाय, हम भी ऐसा बना लें, ऐसा बना लें, इसमें सारी जिन्दगी चली जाती है प्रत्येक सांस, चाहे सपने में हो या जागृत अवस्था में हो । भावना- इसके अलावा उसके पीछे हमको भी बनाना है म... हमको भी बता दो, एस्टीमेट बता दो, नक्शा ब... दो कैसा बनाना है । ऐसा ऐसा । ये अच्छा है ये अच्छा नहीं है । वासना - कि बनना चाहि... फिर पैसा जमा होता है । कैसे भी करके बा... शुरू कर देते हैं उसको पूरा करने के लिए अगर नहीं पूरा हुआ तो वासना की वासना र... रह गई । नहीं पूर्ण हो सका, न बना सका... बेचारे की अधूरी ही रह गई सारी वासना इसलिए मरते समय पूछते हैं न, अरे भई, किस... तुम्हारी वासना रह गई है ठहरो, हम कुछ कर... हैं, थोड़ा बहुत दान पुण्य करते हैं, तुम जाओ उस वक्त कोई नहीं बोलता तुम वापस आ जाओ अब तो जा ही रहा है तो ले भई, कुछ खर्चा क... देता हूं । इस प्रकार वासना अधूरी रह जाती और वो वासना फिर अगले जनम में आ... भोगना पड़ता है । ये सारे विकार हम लेके... रहे हैं । हम सब उसी में हैं । और कलना-... व्यक्ति मर रहा है, Accidental नहीं जिसको Natural death कहते हैं, जिस... Molecular death कहते हैं, जो स्वाभावि... मृत्यु होती है वो प्राणी जिस समय शरीर छोड़... है उसको दिखता है कि वो कहां जाता है ।

ये सब हमारी भारतीय संस्कृति में है ये सब बातें वेद में हैं । वेद हमारा मूल धरोह... मूल धन है । उसके पीछे जाने, देखने को तैया... नहीं, समझने को तैयार नहीं, चलना तो बहुत ... है । हमारी बुद्धि में जो कुछ कूट कूट कर भ... दिया गया है और नाना जन्मों के संस्कार ... इसके पोषक हैं । पुष्टि में हैं वे । इस विवर घुसने के बाद छः केन्द्र हैं एक और है सात ।

सात प्रमुख केन्द्र हैं। ये जो केन्द्र हैं ये हमारी रीढ़ के अन्तर्गत हैं। इसी को सुमेरू कहा गया है। जिसको Medula कहते हैं, जिसको सुमेरू कहते है और जो मेरूदंड है ये सुमेरूगिरी है पर्वत है पृथ्वी के त्रिजकुल बीच में है । ये सब रूपक हैं . ये सब बराबर यहां हैं। तैंतीस कोटि देवता बीतते हैं. तैंतीस करोड़ देवता नहीं। तैंतीस प्रकार का वर्ग है : तैंतीस Vertebrae हमारी है। मनके जिसको कहते हैं, कशेरूका जिसको कहते हैं। ये कशेरूका जो है वो तैंतीस हैं। तीन जुड़ गए हैं इसलिए इकतीस ही माना जाता है लेकिन हैं तैंतीस। हमारे Costics जो हैं,मेरूपुंज जो हैं वो तीनों कशेरूका जम गए हैं। वो अलग अलग नहीं है। उसमें अन्दर कुछ गया नहीं है । आगे जिसको मूलाधार कहते हैं, मूल कहते है वहां तक है। हमारे Spine के अन्दर पानी भरा हुआ है। उसके नीचे एक कार्ड बना हुआ है जो Hard है, बिलकुल ठोस है, कठिन है और पीछे घोड़े के पूंछ जैसा बाल होता है ऐसा पूंछ है नीचे। वो खास चीज है। उसी के अन्दर से रास्ते हैं। वो Central Canal उसी के भीतर सूक्ष्म है,। उसको बड़े से बड़ा Microscope लगाकर देखने से ही वो देखने में आता है। उसको लाखों करोड़ों बार बड़ा करके तब ये लोग देखते हैं। Medical term में उसका नाम भी लिख दिया गया है।

कबीरदास ने उल्टा कुआं, वो कुआं राम नहीं, ये उल्टा कुआं इसमें घुसने के बाद प्रत्येक सेन्टर को क्रास करते हैं। सत्पुरुष के द्वारा, सद्गुरु के द्वारा, अनुभवी व्यक्ति के पास रहकर, कब ? 'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्यवरामि बोधक'– वरामि प्राप्य, जब तक निबोध नहीं होता, जब तक ये बाहर का कुछ भी न रह जाय- देख रहा है लेकिन नहीं पहिचान रहा है। सुन रहा है लेकिन नहीं सुन रहा है। न भूख है, न प्यास है। चलता है, फिरता है, सो गया है– ये सब बातें हैं। ये स्थिति जब तक नहीं आती है उसमें घुसने के बाद। एक एक सेन्टर घुसने के बाद, धीरे–धीरे धीरे उसमें जाने के बाद ये तमाम बातें पैदा होती है। जब छठवे केन्द्र में हम पहुंचते हैं जिसको जागृत अवस्था कहते हैं, जिसको स्वप्नावस्था कहते हैं, सुषुप्ति कहते हैं फिर तूर्या कहते हैं। तूर्या में आने के बाद ये मोल हैं। धीरे धीरे जब इस सेन्टर में आते हैं Centre of death को क्रास कर Sixth में आते हैं तब हमारे संस्कार जनम जनम के व इस जनम के सामने आते हैं और सामने आने के बाद उसकी सारी चर्या दिखाई देती है। उसके मुंह से वो ही बोली, निकलती है,वो ही चर्या आती है। उनका उठना, बैठना,बोलना चालना ये सब होने लग जाता है। ये ही चोरों को कबूल कराते हैं,सब दूर करते हैं, जनम भर की बातें कबूल कराते हैं वो कैसा बोलता है ? ये ऐसा ही है।

योग में हमकों पीछे जाना है आगे थोड़े ही जाना है। बोले, प्रगति बताओ– अरे, काहे की प्रगति। प्रगति नहीं है, वो Ingress है । न वो Retrogress है न Progress है। हमको तो अन्दर ही जाना है, वापस जाना है जहां से हम आये हैं। इसलिये जो किये हैं जितना किये हैं वही हमारे सामने आते हैं। तुलसीदास जी नें लिखा है– 'कोउ न काहू सुख दुःख का दाता, निज खुद कर्म भोग फल पाता'। कोई किसी को सुख दुख देने वाला नहीं है। ये वेदान्त में कहा

गया है। ये व्यवहार में नहीं है। व्यवहार में कानून कायदा बना है ताकि समाज, आपस में लड़े नहीं.मरे नहीं,अच्छी तरह से रहे। हम भी जियें, और आप भी जियें जिसे एक ने Legal कहा और अंदर जाने पर उसकोReal कहा। Legal और Real में बहुत अन्तर है। ये जो तमाम Legal है, जैसी स्थिति आती जाती है बदलते चले जाते हैं।

इस प्रकार हम अन्दर घुसते हैं। Fifth Plan में जाते हैं। चौथे Plan में तो हो ही जाता है। चौथे Plan से आपकी भाषा में शक्ति आ जाती है। आपके चरित्र में बहुत कुछ परिवर्तन हो जाता है माने जब आप अनाहत चक्र में आते हैं; गायत्री के हिसाब से जब आप महत्‌ लोक में आते हैं ये सब बदल जाते है। तब आपका मल धीरे धीरे दूर होता है। और जो काम, क्रोध, मद, लोभ, मान व मत्सर हैं, ये भी बद हो जाते हैं। और कुछ नहीं होता केवल इस बाजू से उस बाजू हो जाते हैं। तुम्हारी कामनायें दुनियां के कल्याण के लिए होंगी। 'क्रोध होगा, दूसरों को रास्ते पर लाने के लिए होगा। दूसरों का कल्याण के लिए होगा। मद होगा, तो अपनी संस्कृति का होगा। जो कुछ कह रहा हूं वो सत्य है। ये बराबर होता है।

आज ये जो किताबें पढ़ाई जाती हैं, वो शास्त्र नहीं है। शास्त्र माने ऐसा कहा जाय– 'अनुभूतविषया सम्प्रमोषः स्मृतिः,' स्मृति नाम शास्त्र है। कोर्ट में जो स्मृति कहा गया है– 'तुमको याद है ऐसा ऐसा हुआ है,' पूछते हैं कि नहीं ? जो सुना गया, देखा गया और किया गया– इन तीनों के सम्मिलित रूप का सत्य कहते है। ये जिस पुस्तक में आपको मिले, उसी का नाम है शास्त्र। शत माने शासन बनाये हुए, प्रकाशते– जिसको अनुकरण करने में, आचरण में लाने से आपका चरण प्रारम्भ हो जाता है चाहे बाहर हो या भीतर। यही सब चीज हमारे शास्त्र में है। लोभ होगा ताकि सबका कल्याण हो। हमारे जैसे सब विद्वान बने। मोह होगा ताकि हम सबके काम में आयें। हमारे पास जो कुछ है सबके काम आ जाये। मान चाहिए, कौन-सा ? मर्यादा का। मर्यादा का उल्लंघन न हो। "जग मर्यादा जगत की बांध लियो करतार राजा रंक जती सती करत सोई व्यवहार'। मत्सर- पहले दूसरों को गिराने का था, अब उनको उठाओ,सबको उठाओं,अपने जैसे सबको उठाओ। देखिए,वो विकार वो काम, क्रोध, मद, लोभ, मान, मत्सर जिनसे बहिर्मुख होने पर हम पतित होते है, पतन की ओर हम चले जाते हैं। वे ही छः विकार, अन्दर जाते हैं तो इस प्रकार बदल जाते हैं।

इन्सान, इन्स माने गुण। जिन्स माने वस्तु। इन्सान कहते है जो गुणी हो बाकी हम तो जिन्स के पीछे मर रहे हैं माने वस्तु के पीछे मर रहे हैं। इन्स कहा है, गुण कहां है। बोलते अवश्य हैं। इसलिए भाषा भी समझना चाहिए, शब्दों को भी जानना चाहिए। तो तात्पर्य ये है कहने का कि मनुष्य का जो मनो मालिन्य है वो दूर होने पर वो महान हो जाता है। उसकी आत्मा चतुर्थ केन्द्र में आने पर, जिसे अनाहत चक्र कहा गया है। जिसे गायत्री में महान लोक कहते हैं। वो महान हो जाता है, वो अवधूत हो जाता है। वेदान्त में घुसने पर साधुओं के वर्ग हैं। तीन तक मायावी केन्द्र है। भूर्भुव स्व– ये तीनों माया है। रावण, कुम्भकरण, कंस आदि वहीं तक रहे। इसके बाद वो अवधूत होता है, जैसे दत्तात्रय आदि आए और संसार में कार्य किए,

सबको मार्गदर्शन दिया । तरण तारण मृत्यु केन्द्र–जिसने अपनी मृत्यु को देख लिया, मृत्यु के सिर पर पैर रखके ऊपर चला गया उसे संत कहा गया है । "मी आपण मरण पाहिल्या मिया डोला" – तुकाराम महराज जी ने मराठी में बोले मैं अपनी मौत अपनी आंखों से देखा हूं । सब जो हैं मर हुए पड़े हैं । उसमें जाने का मन नहीं होता । आप में से कोई किताब नहीं पढ़ते । किताब पढ़ें तो आपको सब मिलेगा ये । हमारे पास ऐसे साधक हैं, जो मैं कह रहा हू । जीवित हैं । तो तात्पर्य ये है कहने का कि ये हैं संत । "त" भविष्यत् है लेकिन नहीं, इसी जन्म में पूर्णता की ओर अग्रसर हो गया ।

योगाभ्यास में पीछे जाना है आगे नही । इसमें प्रगति नहीं है, Progress नहीं है । ये Ingress है । जाना है, जा रहे है हम धीरे–धीरे । Gress माने Movement, move हो रहे है माने गतिमान हैं । हम गति रहित नहीं हैं । ये दुर्गति है न सुगति । हमें सद्गति चाहिये । हमें क्या चाहिये ? सत् गति । इस ओर जाने के बाद ये सद्गति है । जहा न पुण्य है न पाप । फिर छठे केन्द्र में जाने के बाद जो हमने किया है वो सामने आते हैं । इसके बाद आगे जाने पर बात दूसरी है लेकिन ऐसी स्थिति हो जाती है । उस केन्द्र में जाने के बाद जब और ऊपर स्पर्श होने लग जाता है, भोगते भोगते सब बातें जब हो जाती हैं (वैसे कोई भी केन्द्र में जायेंगे) तो आप बेहोश हो जायेंगे । दुनिया देखेगी-बेहोश । अरे भई, बेहोश नहीं है वो होश में है । हम थोड़ा सा अभ्यास करने बैठे हैं, झटके आये तो डर जाते हैं–भई, झटके आ गये, कहीं लकुवा तो नहीं हो गया, अरे छोड़ो । बैठे बैठे ऐसी गर्मी फूकती है कि कपड़ा उठाकर फेंक देता है । ऐसी गर्मी, कहीं बुखार तो नहीं हो गया, कुछ बिगड़ तो नहीं गया, कुछ हेमरेज–नस नाड़ी कहीं फट तो नहीं गया । चक्कर आया, मूर्छा आ गई अरे अरे ये तो हमारा ब्रेन खराब हो गया । ये सब होते हैं । ये सब लक्षण हैं अन्दर घुसने के पसीना आता है, मूर्छा आती है, झटके बैठते हैं, अंग भेद होता है, ये सब बातें होती हैं । इसमें अगर न डरा कोई और उस मार्ग से चलता रहा, जैसा बताया गया है वैसा पालन होता रहा तो बराबर निकल जाता है । सारे बंधन, भय, भ्रम सब छूट जाते हैं । तो मरते समय, जिसको स्वाभाविक मृत्यु कहते है, प्राकृतिक मृत्यु कहते हैं, जिसको Natural death कहते हैं, उसको दिखता है कि कहां जा रहा है ।

ये हैं चार शब्द, शायद कबीरदास ने यही कह हो कि "दास कबीर ले आयो सदेशवा, चार शब्द वही चलो वह देसवा" – ये भी हो सकते हैं चार शब्द कि भाई, सम्भलो, समझ जाओ तुम । ये बाहर जो हमारी इन्द्रियां बनी हुई हैं, बाहर खेंच दी गई हैं, तो भीतर आप जा ही नहीं सकते । व्यक्ति चाहे कितनी ही पूजा पाठ करे लेकिन ये विकार दूर नहीं होते हैं । उसका व्यवहार बड़ा नम्र होगा, बड़ा नीतिपूर्ण होगा, सब कुछ होगा लेकिन ये विकार जो हैं वे नहीं जा सकते क्योंकि इन्द्रियां बहिर्मुखी हैं । लाख कोशिश करने पर भी अंतिम श्वांस पर्यन्त किसी पर विश्वास नहीं करते । वो भयंकर खूनी हो सकता है किसी भी समय । इसलिए हम अपने पर विश्वास करते हैं और वो ही हम सबको सिखाते हैं – आप अपने पर विश्वास रखें । किसी पर अविश्वास करों – ये नहीं सिखाता । मेरे ये

शब्द नहीं है। मेरा शब्द याद रखना – "अपने पर विश्वास रखो"।

जब तक सांस है तब तक अपने पर भरोसा रखो। जो कुछ करो अपने भरोसे से करो। जो कुछ दो, भरोसे से दो। जो कुछ पावो, भरोसे से पावो। विश्वास तो ये है कि सांस है जब तक, ठीक है, न सांस रहा, तो ? तो लिखा पढ़ी कर के दो ताकि बाल बच्चों से वसूल कर ले। हम विश्वास करते हैं, ऐसा कहते हैं – श्वस धातु से बना है, वि उपसर्ग है। विश्वास है, सांस है जब तक तो सारा खेल, सांस नहीं तो काहे का खेल। उठा, ले चल। तो इसके पहले अपने पर भरोसा करो – हमारा भार अपने पास, अपने आपको जानो न। तो जैसे वो रास्ता जब खुल जायेगा आपका, मार्गदर्शक अगर मिल जाय और आदेश का आप पालन करें तो आप को भी अंदर जाते जाते ये स्थिति प्राप्त होती चली जाती है और आप शुद्ध होते चले जाते हैं। जब आज्ञा चक्र में आते है जब Sixth Plan में आ जाते हैं तो हंस हो जाता हैं। तुलसीदास जी लिखे हैं– सो. "हमस्मि इति वृत्ति अखण्डा दीप सिखा सोई परम प्रचण्डा, आतम अनुभव सुख सुप्रकासा तब भव मूल भेद भ्रमनासा"। कितना साफ लिखा है। वो जो अखण्ड ज्योति है सारे Universe, सारे ब्रह्माण्ड में फैल जाती है। अभ्यास करते करते वहां पहुंचने पर, एक जनम की बात भी है, एक सेकेण्ड की बात है और न मालूम कितने जनम बीतते हैं। लेकिन ये होता है। ये भी हंस है, अहंसा, सो. हमस्मि-ये ही अर्थ होता है उसका। वो जो देख रहा है खुद को देख रहा हैं। ये अपने को देखना है। अभी जो दिखाता है वो अपने को नहीं है वो तो अभी बहुत दूर है। ये अपने को देखना है।

तो तात्पर्य ये है कहने का कि यही काम, क्रोध, मद, लोभ, मान और मत्सर, जिसे विकार हम कहते हैं अन्दर जाने के बाद हमारी प्रकृति जो है, हमारा स्वभाव जो है वो शुद्ध हो जाता है और हम संत हो जाते हैं। 'मुद मंगलमय संत समाजू जो जग जंगम तीरथ राजू" – मुद माने मुदित, मोद में, आनन्द में रहता है सदा। बिलकुल आनंssssद। किसी भी स्थिति में रहेगा वो संत, वो आनन्द में रहेगा और मंगलमय हो–जहां जाता है लोगों का कल्याण होता जाता है। ये समाज ऐसी होती ही नहीं। समय समय पर लोग आते है और मार्ग-दर्शन करके जाते हैं। हम कहां उनके आचरण में, अपने को लाते है, कुछ भी नहीं। नाम लेते हैं और अपना व्यवसाय करते हैं, बस। जो जग जगम ये जग जो है, ये Universe जो है ये ब्रह्माण्ड है माने मृत्यु लोक जो है उसमें आकर वे लोग, जंगम-'ज" माने आना, "ग" माने जाना माने घर घर आते जाते है, क्यों ? क्योंकि वो तीरथराज है। वो नहीं, जो इलाहाबाद आप जाते हैं। तीरथ यहीं है। ये चलते फिरते "तीरथ राजे" कि जिनके स्नान करने से ज्ञान रूपी गंगा में स्नान करने से कल्याण हो जाता है।

हमारी जो प्रकृति है वह विकार युक्त है और विकार युक्त होने के कारण इनसे बचने के लिए कानून बनाया गया है। अगर विकार न होता, विकृति न होती तो कानून भी नहीं बनते। फिर तो सब संयमी रहते। संयम माने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह ये पांच संयम है। तो इनसे बचने के लिये, आगे चलकर अपने कल्याण के लिए (कल्याण माने विमल होना,

मल रहित होता है), हम समाज के काम में आयें ऐसा दृष्टिकोण करके, इस आत्म विद्या को प्राप्त करने के लिए जो उत्तिष्ठत, जागृत प्राप्त वरान्नि बोधक–उठो, जागो और चेत्त पुरूष को प्राप्त कर, तब तक वो देखो उसमें जब तक ये दूर नहीं होता, वो निश्रेयस का बोध जब तक नहीं होता है तब तक वहां से मत हटो, बने रहो उसमें। नहीं तो "क्षुरस्यधारा निषिता दुरतया दुर्गम् पतः तत्वयोवदन्ते"– वो पथ बड़ा दुर्गम है। दुर्गम – दुर माने दुख, जब वो उसमें घुस रहा है तो काहे का दुख। वो मिटता है।

अभी बहिर्जग में हमारा विनाश और ह्रास हो रहा है, वो छूरे की धार है, गिरे कि कटे। हर एक आदमी होशियार है अपने घर में। जरा भी हिला कि कटा। जरा भी देखा तो मुंह फूला, ये सब बाते हैं। सारे घर भर–लड़का हो, औरत हो, मां हो, भाई हो, दोस्त हो – दोस्त तो कोई है नहीं। दोस्त तो सब मतलबी है। दोस्त के लिये जान लगा देने वाला आजकल तो शायद होगा। अपवाद हो सकता है लेकिन नहीं होते। "दो सत्वादी जब मिले दोस्ती उसका नाम"।

तो तात्पर्य ये है कहने का कि ये जो विकार है, ये जो मल है यही मलपूर्ण हमारा सारा व्यवहार है। गुरू कृपा से अन्दर घुसने के बाद ये मल, विमल हो जाता है और आप महान हो जाते हैं। आज हम अभावपूर्ण हैं लेकिन उस स्थिति में भावपूर्ण होता है। भाव जो है साइड में चार आदमी है। चार ही हैं ये, सब जगह दिख रहे हैं। पहले दिया है – विभाव, दूसरा अनुभाव, तीसरा संचारी और चौथा स्थायी भाव। कहां तक आप पढ़ेंगे, कहां तक आप दौड़ेंगे, स्थायी तो होना है कभी। तो उसको स्थायी होना है। जिनको समझना है, जानना है, वो ही आदमी इसमें आ सकता है दूसरा नहीं। ये साहित्य के चार ही शब्द हैं, चार ही अर्थ हैं।

ये तमाम बातें अन्दर जाने के बाद उस आदमी को प्राप्त हो जाती है और अपना जीवन भावपूर्ण हो जाता है। "भावो हि विद्यते देवस्त-स्मात् भावो हि कारणम्" – देव यहां कहां हैं। दिव्य कहा, दिव्य शक्ति कहा, दिव्यत्व कहा है। आप मनुष्य हैं। आप देव नहीं हैं लेकिन दैवीय शक्ति सम्पन्न आप हो सकते हैं। देवत्व प्राप्त कर सकते हैं आप। देव के सारे लक्षण आप में आ सकते हैं। शरीर को रखना ही पड़ेगा, आपका निर्वाण होना ही होगा। आपका कल्याण और औरों का भी कल्याण होता है। ये वो मार्ग मनीषियों ने ढूंढ़कर दिया है हमको। ये विकार बाहर दुःख का कारण है वही क्लेश का कारण है और अन्दर जाने पर "तेषाम्भिघा क्लिष्टा क्लिष्टा" दो प्रकार – बाहर हैं आप, तो क्लेश पहुचाते हैं, भीतर के हिसाब से क्लेश को दूर करते हैं।

बस इतना कहके – ओम् शांति शांति शांति. इत्यलम्।

C/21 – मुंगेली 25-11-85

✲ ✲

★ साधना में नशा क्यों होता है ? ★

आप बैठे हैं आसन लगाकर। मंत्र जपते हैं या ध्यान करते हैं। ध्यान माने किसी भी आकृति को स्मरण करना। ये ध्यान हो जाता है याने मन को उस आकृति में Fixed कर देना। Meditation माने Fixation of mind ध्यान माने "तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्"। वहां एकतानता बनी रहे–माने ध्यान। मन जो इधर उधर दौड़ता है उसे ले जाकर एक जगह Fix कर देना। ध्यान माने दौड़। मराठी में धाव कहते हैं। हिन्दी में धाय कहते हैं। संस्कृत में ध्या कहते है – ध्याय। ध्यान शब्द बन जाता है। अन प्रत्यय माने भविष्यत्। अन प्रत्यय लगा याने अर्थ होता है – "लाना है"।

जब कोई बैठता है ध्यान करने, आप देखते हैं कि किसी भी विषय का, कोई भी Subjec' जब बैठ जाता है टेबल पर, कोई भी बिन्दु हो, कोई भी वाक्य पद हो, तो लक्ष लगाता है। लक्ष लग.ते लगाते एक धुन में आ जाता है। यहां तक धुन में आ जाता है कि सामने कौन गया, आगे पीछे कौन गया, कौन जाता है, कुछ स्पर्श नहीं होता। इतना डूब जाता है। विषय कोई भी हो, ध्यान इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि आजू बाजू कौन आता जाता है– आंखे खुली हैं लेकिन उसको दिखता नहीं। बातें करते निकल जाते हैं पर उसको पता नही चलता, उस विषय में वह इतना डूब गया।

ध्यान में भी इसी तरह से हमें डूबना है। ये आवश्यक है। इससे एकतानता हो जाती है। चिता है – उसका परिणाम दुःख है। लेकि
ध्यान एक ऐसी चीज है जिसे आप
सोचते हैं वह भी एक थाट है। वह
एक संकल्प है। इसलिए जब आप उस
डूब जाते हैं, तो यहां तक कि पल्पिटेश
शुरू हो जाता है। मन अस्थिर होकर
दुख और बढ़ जाता है। Intermitten
beats भी आ जाते हैं। हृदय कम्पन शु
हो जाता है। Blood pressure बढ़ जात
है। नींद नहीं आती है। वह भी सोचो
वह भी ध्यान है। Thoughts के आधार प
जैसा जो आपका thougtht होगा, एक संक
होगा, एक तत्व जो होगा, वैसा उस
परिणाम होगा।

अब आप ध्यान जिसको कहते हैं, ए
मूल शब्द है। ध्यान माने योग आ गया। व
कुछ नहीं होता। व्यवहार हो या योग हो
भोग हो। तीन ही तो तरह हैं – योग, भो
और उद्योग। जब तक आदमी उसमें Merg
नहीं हो तब तक परिणाम को प्राप्त होता नहीं
मिलता ही नहीं उसको। परिणाम को प्रा
नहीं। सूझ बूझ मिलती नहीं। अनुभव हो
नहीं। जब वो डूब गया चाहे योग हो, उद्यो
हो या भोग हो।

अब उसने गांजा तो पीया नही, भां
पीया नही, मदिरा पी नहीं। आजकल ए
Powder निकला है। आजकल, चारों तरफ...

......सब खाते है कम ज्यादा । नहीं, सो बकते हैं । नहीं, सो करते हैं । ये खालो तो योगी बन जावोगे । वो योगी तो बना नहीं, हत्यारे बन गए । हाँ, दूसरों की मुक्ति कर देते हैं । उठाये छुरी, मारे, जाऽऽ । कहने का मतलब यह कि ये Artificial मादक वस्तुएं जो हैं, न खाते पीते हुए आप ध्यान करते हैं कि नशा हो जाय । ये नशा कहां से आता है । आप कहते हैं कि शरीर बड़ा उपयोगी है । मानव शरीर से ये तमाम बातें हैं । मानव शरीर में रहकर यह Goal जो है, आप उसको प्राप्त कर सकते हैं । Goal माने आप उसको प्रकट कर सकते हैं । वही God - almighty है, वह जो समझ नहीं आया अब तक । न दिखता है, न समझ में आता है, न उसका आदि अन्त है । लेकिन आप उसको एक रूप दे सकते हैं अपने Big Thought में । तुम्हारे Big Thought के सांचे में आ सकता है । तो, हमारा मन रूपी सांचा, हमारी बुद्धि रूपी सांचा–जो अहं का सांचा है, वह संचित जो है–वह जो Big thought है जिसे हम ज्योति कहते हैं । वो हमें अभ्यास के द्वारा प्राप्त होता है । वो ज्योति इतनी फैलती है कि सारा विश्व, सारा जग उससे भर जाता है और ज्योति बीच में आ जाती । सारा ब्रह्माण्ड भर जाता है ज्योति से । ये सत्य है जो मैं कह रहा हूं । यह जो Big thought है बड़ा आनन्द है । जैसे जैसे ज्योति फैलती है वैसे वैसे भूत भविष्य सब जान लेते हैं । तात्पर्य ये कहने का कि नशा जो बढ़ता है, नशे में एकतानता बहुत जल्दी बढ़ती है । मैं शराब पीता हूं, क्यों ? दुःखों को भूलने के लिए, अपने विषय को आगे बढ़ाने के लिए सारी दुनिया कहती है । मैं नशा क्यों करता हूं ? इससे बुद्धि स्थिर हो जाती है । एक किसी निर्णय पर हम पहुंच जाते हैं किसी भी विषय के । ये ठीक है लेकिन ये Artificial है । ये तो उतर जाता है । ये बाहर से लेना पड़ता है लेकिन हमारे योगाभ्यास में जो पद्धति है उससे नशा बढ़ता है । वह क्या है ? बाहर से तो आया नहीं, हमने पीया नहीं, किसी ने दिया नहीं, किसी ने कहा नहीं । आप देखते हैं सोचते सोचते सारा शरीर सुन्न हो जाता है । हाथ पैर भी नहीं हिला सकता और न उठा सकता है । करवट भी नहीं बदल सकता । ये सबको अनुभव है कम ज्यादा, अगर किसी ने विचार किया हो इस पर। जब सरकत गाढ़ा आता है आदमी सोता नहीं । पड़े पड़े सोचता है । उसी में डूब जाता है । हालत ये हो जाती है । ये ध्यान है लेकिन एक विषय तक । इस प्रकार अपने को जानने के लिए, ये जो Big thought है उसे प्राप्त करने के लिए, उसे समझने के लिए, जानने के लिए, Merge होने के लिए ये जो ध्यान है – एक पद्धति है । उसी को सोच कहते हैं । हम सोचते हैं – ऐसा ऐसा है, ऐसा है, ऐसा है, ऐसा है । To the point आ गया कि नहीं । जैसे बाहर के विषय में To the point आते हैं। निर्णय लेने वाले, निर्णय करने वाले जो हैं। ऐसा ये भी है। वह बिन्दु है । बिन्दु पर पहुंच जाते हैं । लेकिन नशा बना रहता है । ये क्या है ? यह एक प्रश्न है ।

Scientific कहता हूं । विज्ञान सिद्ध कहता हूं। Scientific याने वैज्ञानिक । Science याने विज्ञान । विज्ञान जो जानते हैं वे ज्ञानी हो जाते हैं । यह है ज्ञान । यह Knowledge है । कैसा करना कैसा नहीं करना । कराना वराना सब । ऐसा Analysis है। Analysis याने विश्लेषण। Analytic माने विश्लेषणात्मक । तो तात्पर्य

ये है कहने का, कि ये क्या है ? हमारे शरीर में है ही । यदि शरीर में न होता तो मादकता क्यों छाई ।

Response मिलता है । यदि Response न मिलता होता तो आज Medical Science इतना अग्रसर न होता । आप जानते हैं आप्रेशन करने के लिए क्या करते है । मरीज के शरीर में मादक तत्व प्रवेश करा देते हैं सूची वेध के द्वारा । ४ घण्टे, ६ घण्टे, आठ घण्टे, दस घण्टे जितना काम करना है उतने प्रमाण में द्रव जो है आपके शरीर में प्रवेश कराते हैं । यदि Response न हो तो जो आप प्रवेश कराते हैं, उससे नशा कभी न आता । उसकी मादकता न छाती । क्योंकि प्रकृति फेंक देती । विजातीय तत्व को तुरन्त । क्योंकि वहां सजातीय है, Response मिलता है । वह हमारे शरीर में है । हमारे Cerebrum में है । हमारे वृहद् मस्तिष्क में है । उसको कहते हैं Opiate receptors । ओपिएट रिसीप्टर्स हमारे वृहद् मस्तिष्क के कोषों में है । उसमें अफीम जैसी मादक वस्तुओं को धारण भी कर सकते हैं । वृहद् मस्तिष्क स्वय मादक तत्वों का उत्पादक भी है ।

जब ध्यान करते हैं, तब कोषों पर प्रभाव पड़ता है । जब प्रभाव पड़ता है तो प्रभाव से क्या होता है । उन कोषों में से वह द्रव्य स्रवित होता है । वह द्रव्य जहां तक हमारा मस्तिष्क है वहां तक पसर जाता है – फैल जाता है । जितना अधिक पसरता है, जितना अधिक गाढ़तम द्रव्य फैलता है, उतनी देर तक वह रहा आता है । नापा गया है Measurement किया गया है कि कितनी देर तक मादकता रहेगी । उसके बाद वह कम होती जावेगी ।

यदि मादक द्रव्यों के ग्राहक Opiate receptors हमारे मस्तिष्क में नहीं हों तो बाहर का कोई भी द्रव्य बेकार है । जैसे General Anaesthecia जब देते हैं – दो घण्टा, तीन घण्टा, चार घण्टा, तो उसको ग्रहण करने वाला अन्दर है इसीलिए बेहोशी होती है । अगर ग्रहण करने वाला अन्दर न हो तो बेहोशी न होगी । ऐसे तत्व बहुत है शरीर में । उसको एन्डार्फिन और एन्केफलीन कहते हैं । इससे मादकता छाती है । जितना आप ध्यान करेंगे – ये द्रव्य जो है, पसरते हैं और नशा चढ़ जाता है । और बहुत देर तक तक आपके मस्तिष्क में बने रहते हैं । जब तक वो बने रहते हैं तब तक नशा बना रहता है ।

क्या मस्ती है भैया ! जिसको मस्ती बोलते हैं, यह सब देह की स्थिति है । योग नहीं है । न कोई शक्ति मिली उसको । यह देह स्थिति है । आचार्य वह है जो दोनों स्थितियों को जानता है । देह की स्थिति का बोध हो और रूप की स्थिति का भी बोध हो । रूप स्थिति माने आत्म स्थिति । ऐसे बहुत से लोग बैठते है सोचते हुए । नशा चढ़ता है मस्त हो जाते हैं । फिर जो सोचते हैं उनके सामने आता है । वो सब Thoughts हैं । Thoughts हैं आपके । ये आपका सकल्प है जो सामने आता है । नशा गया, वो भी गया । इसलिये ये मादक द्रव्य रिसेप्टर्स आपके शरीर में न हों तो बाहर से जो मादक पदार्थ आप पीते है उसका नशा कभी न न हो । ऐसे हमारे Cerebrum में, वृहद् मस्तिष्क में सात Centers हैं । ये एक में एक मिलकर सब कार्य करते हैं । Pre frontol lobe जो है उसको Silent area कहते हैं माने ये सात Centers जो है, Neuro surgeons जितने

हुए हैं वे लोग अपने Electrode से उन Centers का स्पर्श करते हैं तो response मिलता है। लाभ हो या हानि। पागलों को Electric shock देते हैं तो कोई अच्छे होते हैं, कोई नहीं भी होते हैं। तात्पर्य यह कि response है उसमें। जवाब मिलता है। भला बुरा होता है। लेकिन Prefrontol lobe जितना हिस्सा है, उसमें response नहीं मिलता। Electric shocks वहां देते हैं, कोई response नहीं। स्पर्श ही नहीं होता। ये Prefrontol lobe जो हमारा है, ये बहुत Importent है। Unresponsive to Electrical stimulus। ये neuro surgeons जितने हैं उनको वहां से कोई response नहीं मिलता – बिल्कुल नहीं। डमी है। लेकिन वही हमारे काम का है। योग में जब हम वहाँ जाते हैं, तभी हमारा काम होता है। Higher ज्ञान के लिए, Higher concience के लिये।

ये मैं Scientific बोल रहा हूं। हमारी बात को कोई काट नहीं सकता। मैं खोज में हूं सत्य की। इसी शरीर में वह सब प्राप्त होता है। ये मेरा विषय है। ये ओपियम पदार्थ जो है, एनकेफर्लिन और एन्डार्फिन-ये जब पसरते हैं तो मादकता छा जाती है। उस मादकता में मनुष्य अपने आपको भूल जाता है। कितना काल निकल जाता है, उसको पता नहीं चलता। इसका मतलब है वह योगी है? यह झूठ है। योगी नहीं है माने आत्म योग नहीं हुआ। यह देह स्थिति है।

मुझे सब दिखता है। Golden Light में सब कुछ दिखता है। अभी भी Golden Light हमारे सामने है। सुनने में आता है। सब कुछ होता है। हमारा ये जो विषय है ये विज्ञान सिद्ध है। "ज्ञानं विज्ञान सहितं यज्ज्ञात्वा मोक्षसेऽशुभात्"। (गीता–9/1) यह गीता में कहा है। झूठ नहीं है। ज्ञान विज्ञान सहित जो जानता है वही आचार्य हो सकता है। वही दीक्षा देने में समर्थ होता है, अन्यथा नहीं। बाकी ये सब कनफ्यूज किया हैं। (अस्तु) ऐसे बहुत से द्रव हैं हमारे मस्तिष्क में जो सीक्रेट होते रहते हैं। ये केमिकल्स पैदा होते हैं। केमिकल्स से क्या लाभ हैं हमारे शरीर में? हमारे स्वास्थ्य के लिए क्या लाभ हैं? योग में उनका क्या काम है? योग के द्वारा माइंड को हम ब्लास्ट करते हैं तो केमिकल्स बदलते जाते हैं। हमारे अभ्यास से क्या होता है? ये जो केमिकल्स Ordinary है वो बदलकर Extraordinary हो जाते है। यहां तक वे Supreme power के रुप में आ ज ते हैं। वे Divine power में बदल करके ये जो Cosmic energy है वो बदल करके Divine Energy में परिवर्तित हो जाता है। वे ही Chemicals हैं अभी। कोई शक्ति नहीं। कोई सामर्थ्य नहीं। लेकिन वहां पहुंचने के बाद अपनी शक्ति बढ़ जाती है। समझता है, बूझता है, बिना कहे सब बातें होती हैं। वो सब जानता है। क्रम से जानता है, क्रम से, sequence से। एक के पीछे एक। आप बड़े सर्वज्ञ हैं – आप बोलते हैं। ठीक है। सर्वज्ञ तो केवल Almighty है। Brain जो हमारे देह में है। Instrument जो हमारे देह में है। ये सीमित है। ये Limited है। Under Limitations वह अपना काम करता है। इस तरह Mind जो है वह भी एक के बाद एक काम करता है। जो बहुत तेजी से

किताब पढ़ते हैं उनको भी क्रम से ही पढ़ना पड़ता है। Formation of thought-choice of words in sequence होता है। ये अन्डर लिमिटेशन हैं। आप सर्वज्ञ बोलते हैं, वह ठीक है। आप प्रशंसा करते है लेकिन मैं नहीं भूलता। मैं जानता हू कि सर्वज्ञ क्या है। सब जानते हैं। ऐसा होता है लेकिन सब एक समय में नहीं। मेरा Instrument माइंड ही है। मेरा Instrument इन्टेलीजेन्स है। बुद्धि है। वो अपनी सीमा से काम करती है। वह एक के पीछे एक क्रम से कार्य करती है। इसलिए मानव प्राणी को अल्पज्ञ कहा गया है। जैसे जैसे वह सर्वज्ञ की ओर जाता है उसकी शक्ति मिलती चली जाती है। लेकिन काम एक के बाद एक ही होता है। एक समय में सारे जग को नहीं समझता है कोई। ये मैं अनुभव के बल पर कहता हू। ये शास्त्रोक्त है। विज्ञान सिद्ध है। "क्रमानत्वं परिमाणानत्व"। ये हमारा भारतीय मानस शास्त्र है। तात्पर्य यह कि जो द्रव्य हमारे शरीर में है ये सब स्थिति करते है। स्थिति माने स्टेट – स्टेटस।

अभी तक जो नशा चढ़ता है उसमें बड़ा मजा आता है। बड़ी शांति मिलती है। अरे, वह न शांति है न मजा वजा, कुछ नहीं है। वो एक नशा है जो चढ़ता है और उतर जाता है- जैसे पीने पर। ये जो चढ़े तो उतरता नहीं – रूपस्थिति जो है। जिस समय वह डिवाइन शक्ति, डिवाइन पावर जिस समय तुम्हारे आवरण को Penetrate करके chanalise करके चढ़ती जाती है यह उतरना नहीं जानती ये आत्म स्थिति है। अब यहां लोग छोड़ देते हैं। ये मोह में पड़ जाते हैं। मेरा पति, मेरा घर – ये देहस्थिति है। देह से कितना मोह है आपको। न औरत से मोह है, न लड़के से मोह है, बस देह से मोह है।

हम सब की एक ही स्थिति है। मेरे और आपमें कोई अन्तर नहीं है। आपको ही नहीं कह रहा हूं। मैं भी आप लोगों में हूं लेकिन हम सर्च में हैं, खोज में हैं। जो कुछ मिला आपके सामने रख दिया। इसलिये वो कहते हैं न हमारा ये Culture है। भारतीय संस्कृति, योग जो है यह Scientific base पर है।

लोग कहते हैं – "हरि जब कृपा करेंगे" "बिना हरि कृपा संत मिलते नहीं"- ये आश्वासन है। हरि का भजन करो, पूजन करो, कभी न कभी कोई न कोई मिल ही जायेगा- ये आश्वासन है। इसका मतलब ये नहीं कि आप पहुंच गए। बहुत दूर है। दिल्ली के दरवाजे बहुत दूर हैं। मैंने अपना Cerebrum देखा है। Millions of neurons हैं जिसे सहस्त्र दल कमल कहते हैं। मैंने कमल कभी नहीं देखा। कोई दल नहीं देखा। Scientific देखा है। एक-एक कोष देखा है। श्रीनगर में हमने Chromosome देखा, स्प्रिंग जैसा देखा। डा. शिंदे से पूछा। उन्होंने कहा - स्प्रिंग नहीं क्रोमोसोम है। क्रोम माने बॉडी क्वालिटी, सोम माने बाडी, इसमें जीन्स है जीन्स।

ये शरीर आत्मा के बिना नहीं रहता और आत्मा शरीर के बिना नहीं रहता। अनादि है। ये सत्य है। आत्मस्थिति क्या है उस Proper channel से channelise होने के बाद उसमें जाने पर उसके लक्षण और होते हैं। जैसे देह के लक्षण हैं वैसे आत्मस्थिति के भी लक्षण हैं। वो लक्षण माने क्या ? शक्तियां मिलती हैं। आप पावरफुल हो जाते हैं इसमें हमारा Spinal Cord Important role अदा करता है।

कुंडलिनी जब गरल उगलती है

बिरह भुवंगम पैसि करि, किया कलेजैं घाव।
साधू अंग न मोड़ही, ज्यं भावै त्यूं खाव॥

कबीरदास ने अपना अनुभव सामने रखा है। यहां थोड़ा आपके सामने रखता हूं। अभ्यास करते करते जब कुण्डलिनी शक्ति (Serpent Power) जागृत होती है तो इतनी उष्णता बढ़ जाती है कि आग लग गई शरीर में, ऐसा अनुभव होता है। **बोध होता है। वो शरीर पर कपड़ा तक नहीं रख पाता।** इतनी जलन होती है उस आदमी को कि कपड़ा तक नहीं रख पाता शरीर पर और तड़पता है। चाहे धूप हो, गर्म हो, हवा हो, कुछ भी हो उसके सामने कुछ नहीं लगेगा, निकल जाती है। शांत हो जाती है।

तो तात्पर्य ये है कि जब वो जाग जाती है तो शरीर, जो सप्त धातु है उसको चांट जाती है। चांट जाती है माने क्या? फिर क्या शरीर रह ही नहीं जाता है? नहीं, नहीं, चांटने का अर्थ ये होता है – वो जो हमारे नाना जन्मों के किये गये वासना द्वारा कर्म राशि, जो सुख-दुख का भोग है और शरीर में जो इन्द्रियां हैं, मन, बुद्धि और विषय से विषाक्त हो करके जो हमारी इन्द्रियां दूषित हो गई हैं और बार बार उस ओर आती जाती है तो कुंडलिनी शक्ति जगने के बाद ये स्थिति जब आ जाती है तो शरीर का शोधन हो जाता है। वो सब दोषों को निगल जाती है। खा जाती है। इससे क्या होता है - पहले गरल उगलती है उसके बाद उस गरल से सब संशोधन होता है।

गरल माने विष। विष में अय प्रत्यय लगने से विषय बन गया। तो विष किसको कहते है? विष माने व्यापक। विष जो शब्द पद है वो व्यापक होता है। "म" प्रत्यय लगने से ककार हलंत होने से लोप हो जाता है। हलो-लंतरा द्वय विष्णु-शत बन गया। विष्णु माने वो सर्वव्यापक है। इससे विष, जो धातु, पद है वो सर्वव्यापक होता है।

जब वो जगती है, उस जगह से फूटती है, जब खड़ी होती है तो सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो जाती है। जब व्याप्त हो गई तो सारे शरीर को व्यापक कर दिया याने क्या होता है, फैल जाती है। एक एक सेल में, एक एक कोष में वो घूम जाती है और घूमने के बाद जितने दाग हैं, जितने मल हैं, उसको जलाकर भस्म कर देती है। माने अपने विष से उन सबको साफ कर देती है। बाहर में जो विषय, इन्द्रियों में जो आदत है, वे विषय और इन्द्रियां जो दूषित हो गये हैं, जनम जनम के संस्कार जो हैं उन सबको दूर कर देती है। जब वो दूर हो जाते हैं, जब सब वो चांट लेती है तब प्रसन्न हो करके, ऊपर जाकर खड़ी हो जाती है। और खड़ी होने के बाद, जब तक ये दूर नहीं होते तब तक मनःस्थिति जो होती है, वो डावांडोल हो जाती है कभी गिरता है, कभी बोलता है, कभी हसता है, कभी गाता है, कभी नाचता है, कभी पागल जैसे हो जाता है, और कभी लकड़ी जैसे पड़ा रहता है। जैसे लकड़ी पड़ी है सूखी, वैसे पड़ा रहता। साधक जब शुद्ध, सत्व शुद्ध हो जाता है उसका नाम है

पवित्र। जब वो पवित्र हो जाता है तब जो खजाना, सहस्त्रदल कहते है जिसको Cerebrum इंग्लिश में कहते हैं। वहां जाके Seat बनाती है। जिसको कबीरदास की दसवीं खिडकी कहा, उसी को ब्रह्मरन्ध्र कहा, उसी को विज्ञान ने Inter - ventricular foraman of Monro कहा, वहां जाकर Seat बन जाती है माने वहां जाकर के घर बन जाता है। वहां रहने पर नाना प्रकार की शक्तियां जो आप में भरी पड़ी हैं वो सारी शक्तियां अपने आप काम करने लग जाती हैं।

इस प्रकार से जो संत लोग हो गये हैं बड़े बड़े सिद्ध लोग जो हुए हैं उनका शरीर वैसा है, हमारे तुम्हारे आपके जैसा है लेकिन उनका कारबार Extra - ordinary है। वो बहुत ही गूढ़ हैं जो हमारी समझ में नहीं है। इसीलिए जब कुण्डलिनी शक्ति जग जाती है, क्षुब्ध होकर उठती है। और फुसकारते हुए सारे शरीर को व्याप्त हो जाती है। उसका जो विष है सारे शरीर में व्याप्त होकर के जो विषय हमारा है वो सारे विषय को दूर करके अपने विषयों को Neutral कर देती है और दूर करने के बाद आगे स्थिति अलग है। साधु ने कहा भई, मैं तो हिलूंगा भी नहीं डिगूंगा भी नहीं, तुम चाहे जितना चाओ। तो हिलेगा क्या? डुलेगा क्या? कुछ नहीं हिलता। उस समय तो सारा बाह्य संवेदना शून्यत्व, बाहर वो रहता ही नहीं। उसका शरीर है या नहीं ये भी बोध नहीं रहता। इस वास्ते एक पद जो है कबीरदास का, वो अपने अनुभव से कहा है उसे लें। मैं थोड़ी सी अपनी बुद्धि लगाता हूं।

अभी जो जलन बताया आपको ये जलन क्यों हुई सारे शरीर में, ये है कुण्डलिनी शक्ति। ज्ञानेश्वरी गीता में भी लिखा है कि जगने के बाद क्षुब्ध होती है इसलिए कि वो स्वयं ज्ञान है। जिसको कुण्डलिनी शक्ति आप कहते हैं। वो ज्ञान हमारे अनेक जन्मों की वासनाओं से दबते दबते दबते इतना दब गया है कि ज्ञान, जिसको आत्म ज्ञान कहते हैं हमारे पास रह नहीं गया। खाली विषय ज्ञान मात्र हमारे पास है जिसका नाम है अज्ञान।

भारतीय संस्कृति की पुस्तकों के आधार से, दर्शन के आधार से ये अविद्या, अस्मिता राग, द्वेष और अभिनिवेश माने मृत्यु भय हमारे साथ मर गया। ये अज्ञान है। अहं मैं हूं मैं। कौन हैं? बोले-मैं। नाम नहीं बतायेंगे हम फलां हैं। मैं हूं। अरे, मैं माने क्या? बड़ा मुश्किल हो जाता है। तात्पर्य ये है कहने का ये शरीर में वो आग है जो बुझजाती है। ये ज्ञान है। तो क्षुब्ध माने क्या? ये अज्ञान जो हमारे सामने- मन, बुद्धि, चित्त, अहं और सारे देह की इंद्रियां जो दूषित हो चुकी हैं उन सब को निर्मल कर देती है। वो जो मल है जिसको दोष कहा गया है, पाप कहा गया है, दुख कहा गया है जो आप नाम दें पर्याय में। उससे वो पवित्र होता जाता है।

हमारे कहने का तात्पर्य है कि ये जो जलन पैदा होती है, अंगार है, सारे शरीर में जलन है, कपड़ा तक अंग पर नहीं रख पाते तो आप लोग बताइये ये जलन क्यों पैदा हुई। साधारण व्यक्ति को जलन क्यों नहीं होती - उनको क्यों जलन होती है। आग लगती है सारे शरीर में। श्री नगर में एक साधक थे उसने अभ्यास

किया तो उसके सारे शरीर में जलन पैदा हो गई। आगे वो जा नहीं सका और उसने बहुत से योगियों को जो भारत में आज फिर रहे है उन्हें लिखा और पूछा-किसी ने उसको कुछ बताया नहीं। बहुत दिन के बाद फिर धीरे धीरे उसका शांत हुआ। तो ये चीज जो पैदा होती है ये क्यों पैदा होती है मैं तो जानना चाहता हूं मैं एक विद्यार्थी हूं। आप लोग सब विद्वान लोग है अच्छे पढ़े लिखे लोग है। खूब समझते हैं मुझे भी ये सब अनुभव हो सकते है। ये सब परि-णाम मुझ पर भी आ सकते है। एक शरीर पर जब हो सकता है तो सब शरीर पर भी हो सकता है। ये मेडिकल-साइन्स का एक आधार है, एक व्यक्ति जो कर सकता है तो दूसरा व्यक्ति भी कर सकता है। न्यूनाधिक हो सकता है।

जो न करना चाहे बात अलग है आपको जो अनुभव होता है औरों को भी हो सकता है एक शरीर जो है भारत से ले करके अमेरिका, हिप्पो, जिप्सी तक सब की रचना एक है सब बराबर एक हैं। तो तात्पर्य ये है कि ये जलन क्या चीज है। अभ्यास करते समय ये मालूम होना चाहिए आपको-"ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्"। (गीता - ९/१) ये विषय ज्ञान विज्ञान सहित मालूम होनी चाहिए विज्ञान क्या है - हमारे वृक जो है, Kidney जिसको कहते है, उप वृक कहते है उसको-ये दो ग्रंथियां और है उसके पास, थोड़ी सी ऊपर। उप वृक का हमारी नाभि से संबंध है। उसमें एक द्रव्य है जो अग्नि उत्पन्न करता है, दाह उत्पन्न करता है उसको मणीपुर कहा गया है। जिसको गायत्री के आधार से भू-भूर्वस्वः कहते हैं और वो अग्नि तत्व है स्वर लोक है। मैं उसका स्पष्टीकरण कर रहा हूं क्योंकि मैं वही कार्य करता हू, अनुभव के बल से बोलता हूं। उसकी दवा भी है वो शांत हो जाते हैं। मैं जानता हूं उसकी दवा, कितने लोग अच्छा हुए है। तो तात्पर्य ये है कि Adrenals जो Glands है हमारे, वो **Secreate** करते हैं। अभ्यास करने पर सारे अवयवों पर प्रभाव पड़ता है और आगे चलकर हमको सूझबूझ दे देता है, हम निकल जाते है और हमारी सोई हुई शक्ति जाग जाती है। माने ज्ञान की भूखी, अज्ञान के मल से दबी हुई, हजारों जन्म से दबी हुई, जब वो खड़ी होती है तो अन्धेरा, अज्ञान सब चाट जाती है और रास्ता बना कर ऊपर चली जाती है, ज्यो-तिर्मय पिंड में पहुंच जाती है, अपने असली रूप में आ जाती है। ये शरीर ज्योतिर्मय पिंड है इसमें आ करके सर्व व्याप्त हो जाती है। सर्व व्यापिका हो जाती है।

विष्णु जो शब्द है-दुख प्रत्यय है, क हलन्त है, विष+उ, विष माने व्यापक इस वास्ते नुक लगने से वो विष्णु हो गया। विष्णु माने सर्वव्यापक। तो ये जो शक्ति है इस विष को निर्मल कर देती है। सारे शरीर में, रोम-रोम में, कोशिका में, कोष कोष में सब जगह वो रम जाती है।

विष्णु ने भी योग साधना किया है। ब्रह्मा ने भी योग साधना किया है। ये लोग भी साधना किये है। साधना करने के बाद इनको आशीर्वाद मिला कि शक्ति तुमको मिली है ऐसा ऐसा करो। ये इच्छा लेकर साधना किये उस इच्छानुसार उनको शक्ति दी गई। "पूर्वेषामऽपि

गुरू" – पूर्व से ये जो गुरूजन है, कौन – से गुरू हैं "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरूदेवो महेश्वरः", ये तीनों को गुरू माना गया है लेकिन ये तीनो गुरू नहीं, उनके आगे भी एक गुरू हैं उस गुरू को प्राप्त कर शक्ति मिली और शक्ति मिलने पर देवतादि इस तरह से किया गया है। ये सूत्र है।

आपने जो बोले हैं – वो कबीर ने कैसा कहा, मुझे नहीं मालूम, लेकिन मेरी मति जो है। मति नाम बुद्धि का है। बुद्धि – ये भोग के लिये है इसको छठवां केन्द्र कहते हैं। छठवां ज्ञानेन्द्रिय है। पंच ज्ञान के हिसाब से, छठवां माने बुद्धि बोलती भी है। उसके आधार से ये दोहा मैंने आपको बताया। उसका मैंने आपको कुछ स्पष्टीकरण दिया, कहां तक बराबर है, मालूम नहीं। मुझे जो अनुभव में आता है उसके आधार से बोलता हूं।

तो तात्पर्य ये है – ये चीज विज्ञान है। मैंने जो दिया – ये विज्ञान दिया। सुषुम्ना माने **Ependymal lining of central canal** है। वो कहां है मुझे मालूम है, वहां जाने पर होता है ये सब। **Canal** के अन्दर जो **Lining** है वही सुषुम्ना है। कबीरदास की दसवीं खिड़की, ये सभी बाते हैं।

वेद में दिया है उसका स्पष्टीकरण बता देता हूं आप लोगों को "सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात स भूमिक ग्वं स्पृष्टवा त्यत् तिष्ठति दशाँगुलम्"। सभी लोग गाते है फिर भी बोलते है – दशांगुल वाला – दशांगुल में है, दशांगुल प्रदेश म है। कोई बताये-ये पैर के दशांगुल है। कोई कहते हैं – ये हाथ के दशांगुज है। कोई कहता है – ये दशांगुल है, कोई कहता है – ये दशांगुल है। ये हमारी समझ में नहीं आया। मराठी में है – "स्थावर जंगम व्यापुनि परमात्मा दशांगुली पूर्वा" - पूर्वा शब्द नहीं, वो है वसला, माने बैठा है। गीता में भी दिया है – इसके अन्तर्गत निर्माण करके, रचना करके, उसको खेल करके, लपेट करके उसके अन्दर बैठा है। जिससे हमको चलाता है। क्या दिया है शब्द – "त्यत् तिष्ठति दशांगुलम"–ये वेद है। त्यत माने तहां, तो तहां माने कहां, दस अंगुल वाला प्रदेश – ये मिला मुझे – ये हमारा जो मस्तिष्क है। वृहत् मस्तिष्क – दस अंगुल परिमाण है वो। उसी वृहत् मस्तिष्क में, जो कबीरदास जी की दसवीं खिड़की है, जो विज्ञान में **Foroman of monro** है, अभ्यास कर पीछे की ओर जाइये, वहां जाइये, वो बिलकुल ब्रह्म में डूब चुका है। उसी को सत्य लोक कहे हैं। उसी को निरालम्बपुरी कहते हैं। उसी को साधनपुरी कहते हैं। उसी को गो लोक कहते हैं। उसी को साकेत कहते हैं जो आप नाम दें। उसी को कैलाश कहते है। सब कहते है, नाम वेद है।

मैंने जो विज्ञान की **Study** किया, इसी शरीर में होता है। मानव शरीर जैसा कोई शरीर नहीं है। किसी भी लोक में नहीं, इसी लोक में केवल मानव प्राप्त होते हैं और मानव का जन्म इसीलिए बार-बार पृथ्वी पर अपने आप को जानने के लिए होता है। हम अपने आपको भूल गये इसीलिए जब कुण्डलिनी जगती है, कबीरदास ने कहा–"विरह" माने सारी दुनिया से उदास हो करके, सारी दुनियां से निराश होकर कोई सहारा नहीं, कोई आश्रय नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं। सिवाय दुख के उसको कुछ भी

नहीं है। उसके बिना हमारी माने गति उत्तरो-त्तर नहीं है। ये जब तक कि हमें प्राप्त, क्योंकि प्राप्तव्य तो है नहीं कुछ, "बिरह" उसको कहते हैं। "भुवंगम पैसि करि" माने बैठ करके, "किया कलेजें घाव"-जब तक नहीं बनती तब तक ये बातें होती नहीं। "साधू अंग न मोड़हि, ज्यूं भावै त्यूं खाव"। तीन सेन्टर तक जो है- वो माया हैं। भूर्भुवस्वः-ये तीन सेन्टर-ये माया है। केवल माया है और कुछ नहीं है उसके आगे कुछ होता है जिसको कलेजा Heart कहते हैं। Heart माने क्या है-"हृदयम् पिथल प्रोक्तमा हृदय को दो प्रकार से प्राप्त किया गया है। एक हृदय जो रक्त को आंकुचन प्रदान करता है। आकुंचन और प्रसारण हृदय माने हरण करना और उसको क्षेपण कर देना। मन को भी हृदय कहा है। मन भी पकड़ता और छोड़ता है।

हमारे लिए ये कितना अन्तर है। इंग्लिश में Mind माने Mind हो गया। अब उस Mind को हम क्या करें। उसकी कोई परिभाषा तो है नहीं। हमारे यहां अलग कर दिया गया है Mind-मन जो है, अलग है और Heart जिसको हृदय कहते हैं वो अलग है। मन को चित्त भी कहा गया है। मन को चेत भी कहा गया है। अब ये कैसा प्रसंग आया; हम उसको कैसा समझायें, ये सब मालूम नहीं। मैं अपनी भाषा समझने के लिए प्रयत्नशील रहता हूं जो समझ में आ जाती है। नहीं आवे तो आप लोगों से मैं पूछता हूं। सबसे पूछता हूं। कुछ अनुभव के बल से समझता हूं। ये अनुभव है। कबीरदास का ये अनुभव है।

तो तात्पर्य यह है कि ऊपर आइये तब फिर प्राप्त शक्ति, वो सात्विक होती है। फिर हानि किसी की भी नहीं होती इससे। जब वो उस स्थिति में आ गया, अनुभव हुआ कि यहां तक वो आ गई-अब, खा बोले। मैं हिलता नहीं, डुलता नहीं, मेरा काम बन गया-तू खा जितना खाना है तुमको। माने वो कुंडलिनी शक्ति दुखी वासनाओं से दबते-दबते गिरा-"भुवगंम"-वो दुखी माने चोट खाई हुई कुंड-लिनी फिर हृदय को ऐसी चोट दिया माने डस बैठी-ये भी अर्थ होता है और ये भी अर्थ होता है।

तो साधु ने ये कहा। साधु माने साधुवाद है आप लोग जानते हैं, विद्वान हैं। साधु माने कल्याण। साधु का पर्याय शब्द है कल्याण। कल्याण का अर्थ होता है निर्मल, मल रहित। तो सारे मल को चांट गई और आपको मल रहित कर दी। ये आगे बोल रहा हूं लेकिन दोहा यहीं तक है कि बाबा, तू जितना खाना है खा। हम तो हिलते नहीं, डुलते नहीं, कुछ भी नहीं। तो इस तरह से मुझे खयाल आया, वो बताया। ये प्रकार सबके अलग हैं। हमारे पास बहुत से साधक हैं। उनके, सबके प्रकार अलग हैं। एक जैसे नहीं, बिलकुल नहीं। सबके भिन्न हैं।

जो कुछ मुझे मिला है, वो सबको सिखाता हूं। कोई भेद नहीं। न कोई ऊंच, न कोई नीच- ये ब्राह्मण है, ये मेहत्तर है माने भंगी है, वो हमारे पास नहीं है। मेरे पास सब हैं, सब मेरे शिष्य हैं। हमारे पास आज हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चन, जैन, बौद्ध, सिक्ख-सब है।

हि. हि हि: – छि: छि: छि: ये सब झूठ बात है । सब रहस्य हैं और संसार में सब चल रहा है । आप ऊपर जाइये,हाँ,जाइये जाइये जाके देखो तो । खाली बाहर ही रहकर दुनियां भर के प्रश्न । मैं प्रश्नोत्तर नहीं करता, सब छोड़ दिया ।

तो "विरह" ये श्लेष हैं । वो दुखी कुडलिनी शक्ति जब जगती है तो ऐसी भूखी रहती है, ज्ञान की भूखी रहती है कि सारे अज्ञान को दूर करके, स्वय का ज्ञान, ज्ञानमय मण्डल या जिसके अन्दर जा करके, वो जो स्वयं ज्ञान है वो ज्ञान प्राप्त होता है । फिर क्या होता है – इसका उपयोग समाज के लिये हो जाता है । स्वयं पवित्र हो करके और समाज का दुख दूर होता है उसके बाद । इससे व्यक्ति समाज का घटक है । अगर ये सत्य है और धर्म नाम अगर है तो जो कुछ कह रहा हू इसका आधार है । प्रत्येक व्यक्ति समाज में कुछ न कुछ करता ही है । अहित भी हो जाता है, भूल भी हो जाती है, मनुष्य तो है । अब, कहीं जाओ तो मन्दिर है । मन्दिर क्यों है इसलिये कि ये आदर्श हुए हैं । स्मारक हैं, कारक नहीं हैं । वी जा थे कारक, जब थे । अब तो स्मारक मात्र है । "स्मारका न तुकारका" – क्योंकि हम जहां जाते हैं । ऐसा कहो तो पूजा करते है । मैंने बहुत किया है । जितने व्रत उपवास हैं मुझसे सब हो चुका है । लेकिन मुझसे सब हो चुका है। लेकिन जब मरने को तैयार हुए तब तमाम बातें, आज जो आप सुन रहे हैं हमारे मुंह से-ये खुद मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता है ।

आनन्द मंगल हो, हम बस यही चाहते हैं । सबका भला हो हमसे । हानि कभी न हो किसी की, न अपमान हो, न अनादर हो । "तरूणाई में होत है योग, भोग, उद्योग" यही सत्य है । इस तरह से व्यवहार व्यापार चलता रहता है । अब, जिसका जो व्यवहार, व्यापार है उसका सुख-दुख वैसा है ।

इत्यलम् । ओम् शांति, शांति, शांति ।

C/ 19-18.11.85, मुंगेली.

जैसा बताया गया है अगर वैसा अभ्यास, बिना किसी शंका और संशय के करेंगे तो आपमें ये लक्षण उत्पन्न होंगे– हाथ पैर में झटके आना, पसीना आना, मूर्छा आना, ज्योति भी आ सकती है अगर अभ्यास करते रहे, नहीं डरे, नहीं छोड़े । तब सुषुम्ना में प्राण प्रवेश होने पर बाहर का श्वास प्रश्वास शक्ति के रूप में कभी चन्द्रमा, कभी सूर्य बन जाता है । बाहरी श्वास प्रश्वास के अभाव में भी शरीर बना रहता है । गिरता भी नहीं, सड़ता भी नहीं । जैसा रखो, वैसा रहता है । फिर चाहे कितने बरस रखिये आप । जब तक आप बाहर सांस ले रहे हैं और छोड़ रहे हैं तब तक आप काल के अधीन है । जब तक आप सुषुम्ना में हैं, काल मण्डराता रहेगा पर कभी छू नहीं सकता, ये सारे लक्षण उत्पन्न होते हैं ।

★★★ हमें आत्म क्रीड़ बनना चाहिये ★★★

गुरुपूर्णिमा गुरु–पर्व के नाम से हम सब लोग उत्सव मनाया करते है। गुरू शब्दार्थ– "गुरु शब्दस्त अन्धकारस्या रकारो तन्निरोधः", अंधकार, अज्ञान, तमोगुण इनको दूर कर, इनका छेदन कर, इनको हटाकर प्रकाश, ज्ञान, और सत्तोगुण जिनके द्वारा मानसिक, व्यवहारिक और अध्यात्मिक शान्ति मिले। हमारा व्यवहार कुशलपूर्वक हो जिससे कहीं भी अनुशासन–हीनता न हो क्योंकि "गुरुजी" कहने का तात्पर्य ये है कि जब जब ये शब्द हमारे मस्तिष्क में घूमने लग जाता है तो मालूम होता है कि अनुशासित रहना हमारे लिये हितकर है, परिवार के लिए भी, समाज के लिए भी, राष्ट्र के लिए भी। साथ ही हममें यह भाव भी उदय नहीं होना चाहिए कि मुझे ज्ञान हो गया है, मुझे भी अनुभव होते हैं। मैं बहुत अच्छा हूं। मैं बराबर ऊंचे पद पर, उच्च अवस्था में हूं और बाकी लोग निम्नावस्था में हैं या निम्न श्रेणी में हैं। ये जो भेद है मन में, ये भी जाना चाहिए। अपने चरित्र में, अपने व्यवहार में जितना लघु हो सकते हैं उतना अच्छा है। हम सबसे छोटे हैं, हमें कुछ मालूम नही है, हमें समाज से ही ज्ञान प्राप्त होता है। ये व्यवहारिक ज्ञान होता है और मन और बुद्धि में विमल होना, निर्दोष होना, निर्मल होना, छल कपट छिद्र आदि का न होना– ये कल्याण है। इसको शिव कहते हैं। शिव माने कल्याण, कल्याण माने निर्मल और विमल।

गीता में एक श्लोक है– "चातुर्वर्ण्य मयासृष्ट गुणकर्म विभागशः" अर्थात् सृष्टि में केवल चार वर्ण हैं। अब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये भी वर्ण हैं, परन्तु ये साम्प्रदायिक है, विज्ञान सिद्ध नहीं है। गीता उपनिषद है, योग शास्त्र है, ब्रह्म विद्या है जैसा कि प्रत्येक अध्याय में दिग्दर्शन कर दिया गया है। उपनिषद ये विज्ञान है और ब्रह्म माने है विशाल, महान। हमारे मनीषि भी अनुभव के बाद में देकर गए हैं कि चातुर्वर्ण्य ये चार वर्ण सही हैं। सृष्टि में चार ही वर्ण हैं पांचवा नहीं है परन्तु वे हैं – उद्‌भिज, अण्डज, श्वेदज एवं जरायुज। वर्ण याने गुण एवं कर्म। इन चारों के गुण अलग हैं तथा कर्म अलग है। ये उद्‌भिज बीज से अंकुरित होते हैं जैसे वृक्ष, लता आदि। ये कुछ कर नहीं सकते और कहीं जा नहीं सकते। अण्डज जो अण्डे से पैदा होते हैं वे चलते रहते हैं लेकिन उनके पास कुछ है नहीं, वे कुछ समझ भी नहीं सकते। अपना कल्याण भी नहीं कर सकते। श्वेदज माने वाष्प, गैस जिसको कहते हैं जिनके द्वारा नाना प्रकार के उपद्रव उत्पन्न होते हैं ये एक अलग सृष्टि है। ये भी अपना कल्याण नहीं कर सकते। और जरायुज गर्भ से पैदा होते हैं। इनमें मानव प्राणी तथा और भी प्राणी पाये जाते हैं। इनमें से मानव प्राणी में एक विशेष बात पाई जाती है। वे शास्त्र के आधार से अनुशासन में रहकर अपना तरण तारण कर सकते हैं।

शास्त्र माने "अनुभूत विषयासम्प्रमोषः स्मृतिः" – जैसा सुना गया, किया गया और देखा गया। इन तीनों के सम्मिलित रूप से जो प्रयोग में उतर जाता है, उसी तरफ के परिणाम

को वो प्राप्त होता है चाहे कोई भी किसी भी देश के, प्रांत के या भारत के लोग हों। प्राचीन काल, मध्य काल, अर्वाचीन काल, आधुनिक काल जो कोई काल हो, जो प्रयोग में उत्तर जायेगा, साधना करेगा तो उस परिणाम को अवश्य प्राप्त होगा। इसे शास्त्र कहते हैं। अब ये जो शास्त्र है, योग शास्त्र है।

पातंजल योग दर्शन में दिया है – "योग-श्चित वृत्ति निरोधः", जन्मतः कोई बोध नहीं होता, मूढ़ हैं। सब मूढ़ हैं। बताने से समझा जाता है बगैर उसके कुछ नहीं। कैसे हैं, क्या काम है – ये प्रत्येक व्यक्ति का कोई काम आता है तो पूछा जाता है। ये एक ऐसी अवस्था है जो विमूढ़ होने वाले को नहीं सूझता। क्षिप्त– ये बालकों की वृत्ति है, फेंकना–तोड़ना, फेंकना तोड़ना। विक्षिप्त हम जैसे लोग समाज में हैं। अपने अनुकूल हो गया तो बड़े प्रसन्न होते हैं। अपनी प्रशंसा हुई तो बड़े प्रसन्न हो जाते हैं, ऐसा मालूम होता है कि हम कुछ और हैं समाज में। यदि प्रतिकूल हो गया तो लाल बबूले हो जाते हैं। तो 'क्षणं रूष्टा क्षणं तुष्टा रूष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे" माने "अव्यवस्थित चित्तानाम प्रसादोऽपि भयंकरः"। ऐसे अव्यवस्थित चित्त वाले पर कितना भरोसा कर सकते हैं, कितना लाभ आपको मिल सकता है? तो मनुष्य का संशय और सारे भाव भावनाएं उसके समृद्ध होते चले जाते हैं जिसके कारण एक व्यक्ति, एक व्यक्ति पर भरोसा नहीं करता है। मैं विश्वास नहीं बोलता, भरोसा कहता हूं। भार डालना, उससे काम लेना – भरोसा और विश्वास तो ये है– श्वस धातु से श्वसन किया जो होती है एक तृण से लेकर मानव प्राणी पर्यन्त हमारा उच्छ्वा[...] मन में। कोई ऊंच नहीं, कोई नीच, उनके छो[...] हुए श्वास से हम जीवन पाते हैं और हमारे छो[...] हुए श्वास से उनको जीवन मिलता है। [...] पारस्परिक सम्बन्ध कितने निकटतम है लेकि[...] कहते है कि हमारा कोई संबंध नहीं, क्या लेन[...] देना।

ये जो ब्रह्म विद्या है। योग शास्त्र है[...] आज वही साधना करके आपको महान होना है[...] महान हम तभी होंगे। कब? दो शब्द [...] गये है – एकाग्र और निरोध। एकाग्र मा[...] "ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्य प्रत्ययौ चित्तस्यैका[...] ग्रता परिणामः" हमारे भीतर जो विचार उद[...] अस्त होते रहते हैं इससे सिद्ध हो गया कि हमा[...] ही मस्तिष्क में एक ऐसा अवयव है जो इ[...] विचारों को वहन करता है। एक विचार [...] दूसरे विचार में उदय होने या अस्त होने के बी[...] में एक अन्तर है वह अन्तर अगर बढ़ता च[...] जाय तो मनुष्य महान होता चला जाता है[...] इसलिए पातंजल योग दर्शन में जो दिया है [...] "शान्तोदित", विचार भी एक शांत होता है ए[...] उदय होता है जो अबाध गति से चलते हैं[...] अगर किसी मार्गदर्शक के द्वारा, किसी सत्पुरु[...] के द्वारा, किसी सत्गुरु के द्वारा योग्य मार्गदर्श[...] हो जाय, (साधना के द्वारा, साधना-ये उपा[...] है) उपाय मिल जाय तो उस उपाय से आ[...] शान्त्यावस्था को प्राप्त हो सकते हैं। शांति मा[...] Peace, जहां कोई दूसरे प्रकार की हलचल [...] हो। आप अपने सिद्धान्त में, अपने कार्य में स्वय[...] दक्ष हो जाते हैं। आपको स्वयं सूझ–बूझ मिलती[...] है। कैसा करना, कैसा नहीं करना उसका परि[...]

णाम और कारण दोनों का बोध हो जाता है। ऐसी एक अवस्था है उस अवस्था में पहुंचने के बाद भूमिका दृढ़ होनी चाहिए।

हम मोटर सायकिल में बैठे, सारी बस्ती में घूम आये तो हम कहते हैं कि पहुंच गये, हमको मिल गया। नहीं, आप तो खुद वापस आ जाते है। आप वहां जाइए, एक एक केन्द्र में आप रहिए। वहां स्थिर होने के बाद, जैसे घर में आने के बाद बैठे हैं सब लोग दिखाई देते हैं, सब लोग पहिचान में आते हैं और कुछ सुनने में आता है, आंकलन भी होता है विचार भी होते हैं, बहुत कुछ अपने जीवन में उतारने के लायक मिल जाता है, तो अपना जीवन सुधर जाता है। तो जीवन सुधारने के लिए जो बल आपको मिला है, जो अनुभव हो रहा है वो सब योग के द्वारा है। योग माने आपको उपाय दिया गया है साधना के साथ।

हममें अनुशासन आना चाहिये, वो है आचरण। मनुष्य अपने आचरण से जाना जाता है जिससे आदर का पात्र बनता है, प्रतिष्ठा का पात्र बनता है और सम्मान का भी पात्र बनता है। आचरण के बिना कुछ नहीं है। योग और कोई चीज नहीं, वो आचरण है।

एकाग्रता – आप लोग इस भवन में कैसे एकाग्रता में हैं। इस भवन में हैं। इस भवन में आने के लिए आपको घर छोड़ना पड़ा है। दाहिने बायें, दाहिने बायें बढ़ते बढ़ते बढ़ते यहां तक आ गये और बैठे हैं। संसार भी आपके सामने है और गंतव्य भी। और बराबर संसार को दायें बायें देते आप अपने गंतव्य स्थल तक पहुंचे है, ये बड़ा चीज है। प्रत्येक व्यक्ति का मन और बुद्धि स्थिर रहेगा तो ठीक है अन्यथा कुछ भी लाभ समाज को नहीं दे सकता है। समाज का अधिकतर हानिकारक होता है फिर डाक्टर लोग कहते हैं – पागल हो गया है, लिख दो।

अब रही बात निरोध की, अनेक जन्मो के संस्कार हमारे मस्तिष्क में है High Fidelity Tap Record अभी जो डा. साहब ने स्पष्टीकरण दिया कि हमारे वृहत्त मस्तिष्क में, जिसको सहस्त्र दल कहते हैं, सहस्त्रार्थ कहते हैं अनेक जन्मों के संस्कार Fix हैं। हम जो दृढ़ निश्चय करते हैं और चाहा कि पूर्ण कर लें, वो अपूर्ण रह गया शरीर छूट गया या संकल्प के द्वारा कर लिया, वो सब जमा हो जाता है। जो संकल्प के द्वारा अधूरा रह गया या न हो पाया हो, वो भी जमा हो जाता है। उदाहरण – किसी ने कहा – भई, जब हम बारह साल के थे तो मुझसे ऐसा ऐसा हो गया था, ऐसा ऐसा मिल रहा है तो आप भी बारह साल की तरफ चले जाते हैं और कहते है कि मुझसे भी ऐसा ऐसा हो गया था। आप बैठ रहते हैं चर्चायें होती रहती हैं कुछ काल तक आप सुन नहीं पाते हैं क्योंकि आप Misplace हो गये रहते हैं। तो ये जो संस्कार है जैसा प्रसंग सामने आता है वैसा मनुष्य स्थानान्तर कालान्तर, स्थानान्तर कालांतर होता रहता है। ये विचार उसको कष्ट देते रहते हैं। ये स्थिर होते हैं निरोध होता है लेकिन नाश नही होता है। आप उसको हटा सकते हैं, बदल सकते हैं। कैसे ? ये जो सड़क से आप आ रहे है, वाहनों के आवागमन को तो आप रोक नहीं सके, हटा भी नहीं सके लेकिन अपने आपको बचाते बचाते यहां तक आ गये।

इसी तरह से इस उपाय के द्वारा मार्गदर्शन होने के पश्चात आपको जो प्राप्त हुआ है वो उपदेश नहीं, आदेश है उसका पालन होना चाहिये। Do die do करमर कर, कर मरकर ये आपको करना है, तब वो होता है।

ये जो अहम् वृत्ति पैदा हो जाती है इससे क्या होता है – हम कहां बैठे हैं, किस जगह बैठे हैं, किसके सामने बैठे हैं, क्या देखकर हम आये हैं, क्या पाना है हमें और कौन-कौन लोग हैं, ये व्यवहार है। इसको व्यवसाय स्मिता बुद्धि कहते हैं। आप अपने व्यवसाय में, समाज में आपको रहना है तो इन बातों को ध्यान में रख करके, मौन व्रत करके उस तरह से अपने आचरण को, अपनी भाषा को, अपनी वृत्ति को ताकि किसी की हानि न हो, इसमें सतर्कता रखकर सभ्य आचरण बना लेना चाहिए। तब आप इस समाज में सुखी रह सकते है। फिर भी कठिनाई बहुत है।

अब रही निश्चयात्मकता बुद्धि। आपको आदेश मिला है उसका पालन हो। तो नाना जन्मों के संस्कार और जन्म होने के बाद जिस विद्या, जिस कला याने आधुनिक समय में वर्तमान समय में जो चाहिये, माता-पिता बुलाकर वही पढ़ाते, सिखाते हैं। तो ये नवीन है। पुराने तो बाकी हैं, नवीन भी हमारे सामने आ गये। बच्चा कहता है-मुझे कलेक्टर होना है,मुझे कमिश्नर होना है, ये होना है, वो होना है। माने भविष्यत्। वृद्ध हो गये, सेवा निवृत हो गये तो कहते हैं कि हम ऐसे थे, हम ऐसे थे, हम ऐसे थे तो लोग क्या करते हैं बच्चों को लेकर बैठ जाते हैं। बच्चों को तो सम्भालना दूर है, वृद्धों की हमको अनुभूति भी चाहिये लेकिन 'थे' से तो काम नही चलता बरन अपने को सिखाना चाहिये, देना चाहिये। वृद्धों ने देना चाहिए। वृद्ध माने वृत धातु से बर्धमान फील ऐसा हम अर्थ करते हैं। अब जन्म लेने के बाद बाहर की कोई चीज का आपको ज्ञान नहीं लेकिन देख करके समझ करके, पढ़ करके हम वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं माने हम अपनी बुद्धि को, अपने मन को, अपने शरीर को, अपनी योग्यता से Develop करते करते करते अगर उच्च स्थान में पहुंच जाते हैं जो अपनी जीविका के लिए किया जाता है तो आपको सुख है क्या ? नहीं। आपको आत्मिक सुख है क्या ? आपका मन शान्त है क्या ? बुद्धि स्थिर है क्या ? नहीं। तो उसको पाने के लिए, अपने आपको जानने के लिए हमारे मनीषियों ने ये प्रकार, ये पद्धति हमारे सामने रखी। मनीषियों-मनीषी माने मन को ईषण करने वाली बुद्धि। बुद्धि का नाम है मनीषी। बुद्धि हम Govern करते हैं, मन आपका वश में है अगर न होता तो आप यहां नहीं आ सकते थे।

ये जो शास्त्र है, अनुभूत है। देखा गया, सुना गया, किया गया जिसका परिणाम होता है। वो हमारे लिए, सारे समाज के लिए और राष्ट्र के लिए कभी भी कल्याण प्रद है। योग माने पा लिया, आपको कुछ शक्तियां मिल गई, आप कुछ बोलने लग गये, कुछ होने लग गया, कुछ अलौकिक शब्द भी निकल गये, अलौकिक परिणाम भी होने लग गये तो कहते हैं कि पहुच गये लेकिन समाज को आपसे क्या मिला। हमारे बीच बहुत लोग हैं, अनुभवी लोग हैं अच्छे लोग हैं, लेकिन वो किसी को दे नहीं सकते है।

दो तरह के योगी होते हैं–आत्मरति और आत्म क्रीड़ । आत्म–रति माने मुझको मिल गया, भगवान के पास बन गया, हम मस्त हैं। किसी ने कहा–महाराज, बाबाजी हमको कुछ दिखाई नहीं दिया, तो बोले– भई, वो तो ईश्वर की कृपा है, जब होगी तुमको होगा । मेरे बस की बात नहीं है । हम आपको कुछ नहीं दे सकते हैं । इसको आत्मरति कहते हैं माने केवल अपने ही आनन्द के लिए, लोगों से सेवा कराये और जब गये तो लेके चले गये । हमारे भारत में ऐसे बहुत हैं । सभी जगह हैं । हम नहीं कहते केवल भारत में हैं । जगत में सब जगह आप पायेंगे । लेकिन आत्मक्रीड़ तो कभी कभी आपके सामने आते हैं । जैसे आपने क्रिकेट गेम सुना है उसके कप्तान, उप–कप्तान होते हैं । खिलाड़ी होते हैं। अगर कप्तान बीमार हो गया तो उप–कप्तान द्वारा केप्टेनशिप ले करके अपनी टीम को खिला सकता है । मैदान में खेल होता है लोग जमा हो जाते हैं, देखते है । फिर हमारे घर में बाल बच्चे खेलने लग जाते हैं। खेलते खेलते क्या होता है कि आगे वे दूसरों के क्रीड़ांगन में उतर करके क्रीड़ा से सबका मन लुभा करके, उनको ये विद्या का अपने आप उन लोगों का संस्कार होता चला जाता है । न सिखाते हुए, न बोलते हुए उनको संस्कार होता चला जाता है क्योंकि क्रियात्मक है।

"तप: स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रिया योग: "– तप:, तप माने बुद्धि सामर्थ्य । तप माने राख लगाना, आगी जलाना, ये नहीं है। बुद्धि सामर्थ्य–ये योग मार्ग में आपकी बुद्धि जो है वो ब्रह्मास्त्र है । जिधर प्रेषित करो, वो जा करके और ज्ञान प्राप्त करके वापस लौट–जाती है । बाकी जितने हैं वो सब फेंको, चले जाते है, वापस नहीं आते । तो ये जो निरोध है, गुरूजी के उपदेश, आदेश से जो उपाय बताया गया है, दो विचारों के बीच में अगर अंतर बढ़ा सके तो साधना करते करते करते उर्ध्व गति होती है । शक्ति जब उर्ध्व गति हो जाती है तो एक केन्द्र है उस केन्द्र में आने पर अपनी मरण जैसी स्थिति हो जाती है । कोई मरता नहीं, कोई पागल होता नहीं, वो निकल जाता है। जब षष्टम भूमिका में आते हैं माने Sixth Plan में जब आते हैं वहां शान्त्यावस्था प्राप्त होती है । वो है शान्ति ।

"अतीत अनागत ज्ञानं' तो त्रयं संयमात अतीत अनागत ज्ञानं" माने जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों के संयम हो जाने पर जब हम षष्टम भूमिका में पहुचते है जिसका नाम है आज्ञा–चक्र, वहां पर अगर ये भूमि आपकी दृढ़ हो जाय, भूमिका अगर स्थिर हो जाय, अगर कुछ काल के लिए, बार बार अगर वहां रहें तो क्या होगा–भूत, भविष्य का, आपके जन्म के जो कुछ संस्कार पूर्वमय बाकी हैं ये सब आपके सामने आते हैं और जहां जहां रहे हैं जो समाज के लिए हितकर है, राष्ट्र के लिए हितकर है, जो पूर्व में उनके लिए है, उससे बचता है । ये सब कर्म दृश्य के रूप में आते हैं और उनको बोध होता है जिससे आगे पीछे अपना भी कल्याण हो और लोग भी उन बंधनों से, उन क्लेशों से मुक्त होते चले जाते हैं । भविष्यवाणी होती है–बड़ा कल्याण होगा, ऐसा नहीं जाना, रास्ते में गड्ढा है गिर पड़ोगे । तो वह नहीं जाता, बच है तो नहीं गिरता । इस प्रकार उसकी वाणी को लोग मानते है। उसको महान मानते है,

उसको महात्मा मानते हैं और उसको अनुभव है। ऐसे अनुभवी सत्पुरुष जो व्यक्ति होते हैं उनके पास रह करके, ब्रह्म विद्या है योग माने उपाय, उस उपाय से अगर प्रार्थना करें तो उस भूमिका में पहुंचने पर शांति मिलेगी। वो शान्त्यावस्था है।

सब लोग कहते है कि स्वर्ग में शांति मिलेगी तो संत लोग कहते है कि मैंने शांति को स्वर्ग लोक में रख दिया है। हमें स्वर्ग भी नहीं चाहिए। मैंने शांति को स्वर्ग में रख दिया है लेकिन लोग उसको बाजारादि वस्तुओं में ढूंढते हैं–भई, इससे हमको शांति है, उससे हमको शान्ति मिली ये असम्भव सा है तो तात्पर्य ये है कि शान्त्यावस्था में पहुंचने के लिये आपको बहुत तपस्या करनी होगी।

हमें दूसरों के गुण ग्रहण करना चाहिये और दोष त्याग देना चाहिये लेकिन आज हमारी वृत्ति ऐसी है कि दोष तो पहले ही दिखते हैं। ऊऽऽऽ, क्या रखा है – ये नाक सिकुड़ जाती है। सारा व्याख्यान जो है न, समाप्त हो गया। सारा आचरण आपका समाप्त हो गया, सारी शक्तियां आपकी समाप्त हो गई, अगर घृणा नहीं गई। घृणा जाती नहीं, वो अभ्यास से होता है। ये Status है। उसकी जो दृढ़ भूमिका है वो मान लेने से नहीं होता, बाबा।

तो तात्पर्य ये है – तप:, बुद्धि सामर्थ्य, ये योग से क्या मिलता है, आपकी बुद्धि समर्थ होती है। आपको भूत–भविष्य का ज्ञान होता है। आंख खोलकर देखता है। हाथ लम्बा हुआ, पहुंचता है। आप सुन सकते हैं, बोध होता है। ये स्थिति क्या है – वो जो दो वृत्ति उदय अस्त होती थीं, विचार यहां वहां आते जाते थे, वे हमारे शरीर में अवयव विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है।

आप स्थिर कैसे हो सकते हैं। एक अवयव है, जब आप षष्टम भूमिका में आते हैं जब आपकी शक्ति ऊपर पहुंच जाती है तो क्या होता है, इस शरीर के अन्दर एक Organ है वो 'सी' जैसा होता है, अंग्रेजी लेटर 'सी' जैसा। उसका नाम Nucleus है। उसको Caudate Nucleus कहते हैं। ये Inhibition करना माने गति को स्थिर करना, गति को कंट्रोल करना उसका काम है। तो Catalyst होना चाहिए। निष्काम कर्म योगी Catalyst की तरह होते हैं वो कुछ करते धरते नहीं क्योंकि स्वाध्याय, केवल अपने स्व का अध्ययन करता है और किसी का अध्ययन करना नहीं करता है। Catalyst केवल अपने आप में रहता है। न घटता, न बढ़ता, न कुछ करता धरता है लेकिन उसका Presence काफी है। उसका वहां विद्यमान रहना काफी है। उस Catalyst के प्रभाव से जो द्रव्य जहां तहां पहुंचना चाहिए, पहुंच सकता है। उसका बिलकुल रूपांतर करके जहां तहां पहुंच जाता है। वो कुछ करता धरता नहीं है। ये है निष्काम कर्मयोग।

तो as a catalyst हमें रहना चाहिये संसार में। ये कैसा काम हुआ – "प्रभावोत्कि उच्यते"। साधक का जो निष्काम कर्म योग है उसके केवल प्रभाव मात्र से काम होता है। मराठी में लिखा है – "हे क्रियाधीन सम्पादिले इंद्रिया नियरा भोरी रे बोला आज छोबी

समयाव", यहां करना बरना कुछ नहीं है केवल प्रभाव मात्र से होता है। जैसे Catalyst का काम बराबर होता है शरीर में, इसी तरह योगीजन, ये जो साधक हैं जिनकी भूमिका दृढ़ हो चुकी है उनके केवल प्रभाव मात्र से होता है वो कुछ करता धरता नहीं। उसकी प्रशंसा में उक्ति दे देता हूं – "कर्तुम अकर्तुम अन्यथा कर्तुम समर्थः। ये कुछ न करते हुए सब करते हैं और बहुत कुछ करते हुए भी नहीं करते। इन्हें वो समर्थ कहा गया है। मैं समर्थ हूं में तो आपसे कहता हूं इसमें कोई अंतर नहीं।

विषय है निष्काम कर्म। जितने कार्य संसार में होते हैं सुख प्राप्ति के लिए, ये सब सकाम हैं। ये सब दुखदायी है और निष्काम कर्म – अपने आपको देखना, अपने आपको दया करना, अपने आपको जानना, जो व्यक्ति अपने आपको जानता है वो 'अल्पकाल में, अल्प समय में, अल्प अवधि में दर्शन मात्र से, सम्पर्क में आने पर बोध होता रहता है। जैसे आपकी बुद्धी ब्रह्मास्त्र हो रही है जिधर आप प्रेषित करेंगे वो उत्तर लेकर आ जाती है और आपके सामने दृष्टिगोचर हो जाता है या आपको बोध होता है और आनंद होता है। और बैठे हुए लोगों को भी सबको आनंद होता है।

तो तात्पर्य ये है – ये योग विद्या है। "कुर्यम बेत उपाय", फार्मूला है। आपका शरीर भी एक योग है। इस शरीर को हम भूल गये हैं। इसी शरीर से होता है। डाक्टर साहब ने कहा – "याचि देही याच डोळा पाया नहीं मुक्ति का पराड़ा", इसी तरह इन्हीं आंखों से मुक्ति क्या है मैं देखूंगा, उसको अनुभव करूंगा, बराबर होगा – ये संकल्प है। इस संकल्प में हमको दृढ़ होना चाहिये, कुछ नहीं बिगड़ता। क्यों? इधर हमारे जो मार्गदर्शक आये हैं, समय समय पर जो प्रवर्त्ताचार्य आये हैं, समय समय पर जो लोकोत्तर प्राणी आये हैं, समय समय पर जो अवतार आये हैं, हर एक सम्प्रदाय में ऐसे लोग आये हैं और समय समय पर हमारी रक्षा की है।

आज हमें क्या चाहिये, एक परिवर्तन आना चाहिए। आज हमारे सामने जो परिवर्तन है बहुत से लोग हमसे भिन्नाभिन्न हो सकते हैं, मत भिन्न भी हो सकते हैं लेकिन हमें उसकी कोई चिंता नहीं। हमें ये चाहिए – ब्रह्म विद्या, योग शास्त्र माने अनुभूत तो कल्याण होता है। अपना भी होता है, समाज को भी होता है, देश का भी होता है, सबका होता है। सारे जग का कल्याण होता है लेकिन करने से। रामदास स्वामी ने मराठी में बोले हैं – "ज्ञान मंजे आत्म ज्ञान, बाकी सब अज्ञान। "पहावे आपणा सी आपण या नामाचीयण" – अपने आपको देख लेने से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है।

अभी बताया गया कि बुद्धि और मन अलग है। नहींऽऽऽ, बुद्धि से सिर्फ बोध होता है। बोध है क्या – वो आत्मा है। बुद्धि एक Instrument, एक उपकरण, एक करण मात्र है जिसके द्वारा एक समय में एक ही वस्तु या एक ही क्रिया, एक परिणाम को आप जान सकेंगे। ऐसी वो अंतःकरण, ये करण है बुद्धि, लेकिन आत्मा स्वयं बोध है। हम इस तत्व को भूल गये हैं जो हमारे पास, सबके पास है अन्दर बाहर सब जगह है। इसका दर्शन होता है। ज्योति रूप में दर्शन होता है, ताकत है।

सिध्दान्त छः है – आपः नाम आत्मा,

ज्योति दूसरा, ब्रह्म तीसरा, रक्त चौथा, अमृत पाँच और गायत्री के नाम से जो ओम् है। ये छः सिध्दान्त हैं शास्त्र में। ये छः सिध्दान्त में से एक सिद्धान्त हमने ज्योति लिया है। पहला Manifestation, Divinity manifests itself in the shape of light, God is light आत्मा ज्योति है, स्वयं ज्योति है। अल्लाह नूर है। वेद में – ओम् अग्निम् इडे पुरोहितम्। ओम् – इस अग्नि का नाम बहुमताय। इसका नाम ओम् है। इडे माने ढूंढते हैं। पर्शियन लोग भी अग्नि को पूजा करते हैं। अग्नि, ज्योति और Light – हमने इसे सत्य माना है। सत्य माने रचना नहीं, जो परिणाम हमारे सामने आते हैं ये हम सत्य मानते हैं। वो सत् है। वो निर्गुण, निराकार है। अन्दर बाहर सब जगह है।

इस प्रकार कोई मार्गदर्शक मिले तो अनुशासन बद्धता में रहना चाहिये। बाल बच्चों को भी सिखाना चाहिये। अनुशासन शब्द का पर्याय है तिक्षण। उसमें चार अंग हैं – साधना, अनुष्ठान, निरूपण और लक्षण। अब विश्व में कहीं भी जाये, किसी भी University या किसी भी समाज में जायेंगे तो ये चार बाते अपने व्यवहार और वेदान्त में हैं अन्दर में घुसने के लिये। साधना चाहिये, अनुष्ठान चाहिए – उसका भी समय बंधा हुआ है आपको उतना करना ही होगा। ध्येय, उसका प्रकार जो है Analysis करके, विश्लेषण करके सबके सामने रखना होगा और लक्षण से युक्त होंगे तब आपके पास लोग आयेंगे और कुछ प्राप्त करेंगे। आप उनको कुछ दे सकेंगे।

हमारे कहने का तात्पर्य ये है कि साधक दो है। एक आत्म रति खाली कुटिया में चले जाते है। हमें कुछ मिलता नहीं। मानते हैं, दुनिया मानती है, कुछ न कुछ चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, सब कुछ चाहिए इसलिए हम जाते हैं। एक आत्म–क्रीड़ होता है, अपनी टोली बनाता है और ले करके चलता है। लोगों को खेल दिखाता है। लोग आकर्षित होते हैं। आते हैं। वे भी सम्मिलित होते हैं और उसी तरह खेलकर हमारे सामने दिग्दर्शन करते हैं। क्रीड़ांगन में क्रीड़ा करके हमको दिखाते हैं इस प्रकार ये कितनी सुन्दर परम्परा है, इसे कोई लोप नहीं कर सकेगा। तो हमें आत्म–क्रीड़ बनना है।

मुझे जो मिला है हम समाज को देंगे। जिस समाज को, जिस व्यक्ति को Interest है, अभिरूचि है, आएं पूंछे हम शिक्षा देने के लिए तैयार हैं। मैं चाहता हू गुरूमय वातावरण हो। मैं गुरूजन तैयार करता हूं, शिष्य नहीं। इसलिए मैंने परिवार शब्द रखा है। आप प्रत्येक व्यक्ति उत्तराधिकारी हैं। हमारे जैसे आप भी इस प्रकार से सबको शिक्षा दीक्षा दे करके, उनको इस बधन से, इस दुख सागर से निकाल करके आनन्द रूपी सागर "दिव्याम्बु निमज्जन" ये दिव्य गुण, दिव्यत्व को प्राप्त करा सकते हैं। और प्राप्त होने के बाद औरों को भी ये दिव्य रस दे सकें, सब कोई आनन्द विभोर हों तब हम इसको शांति कहेंगे। यही शांति है। यही शान्त्यावथा है। ये जब तक प्राप्त नहीं होता है तब तक हमारे दुख–सुख, लेना–देना ये सब कभी भी दूर नहीं हो सकते हैं।

हमारे मनीषियों ने एक ही मार्ग निकाला, जिसका नाम है वेदान्त। वेद माने ज्ञान। और कोई ज्ञान बाकी नहीं रखें। "एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय"। चार वर्ण – ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ठीक है मेरा कुछ कहना नहीं है लेकिन इतना अवश्य है कि चार ही वर्ण हैं – उद्भिज, अण्डज, स्वेदज और जरायुज। ये सृष्टि में विज्ञान सिद्ध बात है और ब्राह्मण – बृहत् धातु से ब्रह्म शब्द की व्युत्पति है। बृहत माने महान होना, विशाल होना तो इस ब्रह्म शब्द की उपासना करने के बाद ब्राह्मण कहलाया। एक ब्राह्मण जन्म जात होता है। अनेक जन्मों के उसके पुण्य बचपन से ही उदय होते हैं। कुछ ब्रह्म शक्ति को प्राप्त हुआ, लोगों का कल्याण करता। और एक साधना करके उसको प्राप्त करता है। जैसे गुरू वशिष्ठ जन्म से थे और विश्वामित्र साधना करके ब्राह्मण हुआ। राजऋषि से ब्रह्मऋषि हुए। ब्राह्मण किसे कहते हैं – "ऋजु तपस्वी संतुष्टः दाता ज्ञानी जितेन्द्रिय, क्षमाशीलो दयालुश्च ब्राह्मणो नवभिर्गुणैः"। ये नवगुण सम्पन्न, चाहे कोई हो, वह ब्राह्मण है। ऋजु माने Ependymal lining of Central Canal जिसको सुषुम्ना नाम दिया गया है। अभी हम सब उससे विमुख हैं सम्मुख कहां हैं। राम ने भी कहा – "सनमुख होय जीव मोहि जबहि, कोटि जनमक नाशहुं तबहिं।" राम माने आत्माराम। राम तो चले गये। आपके मन में पहले से ये बात हो गई कि त्रेता में राम हुए, गये, अब कहां से राम मिलेंगे। हमारे संकल्प ही तो हमारे लिए भय और मुक्ति का कारण हैं इसलिए शब्दों को चयन करके बोलना चाहिए और समझना चाहिये व्यवहार में भी, व्यवसाय में भी, अपनी बुद्धि में भी, अपने आपके लिये भी।

तो तात्पर्य ये है कि जो शक्ति सोई हुई है आपमें, गुरूदिश मार्ग से उत्तिष्ठत जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत – उठो जागो और वराम प्राप्त सत्गुरू को सत्पुरूष को प्राप्त कर जब तक निबोध से बोधपूर्ण नहीं होता, बाहर का बोध दूर नहीं होता ("वाह्य संवेदना शून्यत्व"), जब तक ये स्थिति प्राप्त नहीं होती, तब तक नहीं छोड़ना चाहिए अन्यथा "श्रोतसिधारा निष्टा द्रुष्टया", ये सारा संसार छुरे की धार है. हिले कि कटे, हिले कि कटे, हिले कि कटे, सब जानते हैं इस बात को। "दुर्गम पतः तथवयोवन्ते" – हम इस संसार को ही दुर्गम पथ बोलते हैं बात तो बिलकुल सीधी है। "राजविद्या, राजगुह्य पवित्रं इदम् मुक्तमं प्रतिष्ठान गमं धर्म्यम् सुखदम् दर्पम्" आनन्द मंगल, आनन्द मंगल – ये परम हंस है। आत्मा–आत्मा एक है। सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष नेक हैं प्रकृति एक है, लेकिन योग दर्शन मिलने के बाद पुरूष शुद्ध है। पुरूष तो कुछ करता धरता नहीं, प्रकृति ही सब कुछ करती रहती है। इस प्रकृति की जाल से निकलने के लिये उपाय करता है वो ही पुरूष होता है। कौन पुरूष होता है – "क्लेशकर्मविपाकाशैयरपरामृष्टः पुरूषविशेष ईश्वरः", नाना प्रकार के क्लेश, कर्म नाना प्रकार के हैं, जो किये हैं नाना जन्म में और विपाकाश जो बीच बीच में उदय अस्त होते रहते हैं, सारी वासनाओं से - काम, क्रोध, मद, लोभ मान, मत्सर ये सब बिलकुल छुट्टी मिल जाती है, तीनों दुखो के "आत्यन्तिम निरूत्तर अत्यन्त पुरूषार्थः", तब वो पुरूष विशेष ईश्वर। ऐसा आत्म–क्रीड़ ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है।

ये शास्त्र है। ये आधार है। आत्म रति और आत्म क्रीड़ में इतना ही अन्तर होता है। मुझे जो कुछ मिला है आप सबों को बांट रहा हूं, दे रहा हूं। उसमें अगर आत्म कल्याण होता हो,

समाज का कल्याण होता हो, राष्ट्र का हित होता हो तो इसको कोई अस्वीकार भी नहीं करेगा। रूचि है केवल करने की, आचरण में लाने की। "सत्यं वद धर्मं चर। आपको जितना अनुभव है उतना ही बोलो, उससे अधिक नहीं। अपने घर में आरोप करना छोड़ देना चाहिए। जिससे आपको बराबर शांत मिलेगी। यहां से आरंभ करना चाहिए। दूसरी बात कैसे आरम्भ करना चाहिए – इस संसार में, इस जगत में हम ऋणानुबंध हैं, हम ऋण चुकाने के लिये आय हैं। जिस दिन हमको देना पड़ता है – सहर्ष स्वीकार, भई ये तो ऋण था, दे दिया, मुक्त मिल गई ये अच्छा हुआ।

जन्म ऋणानुबंध है अगर आपको निकलना है तो खाली ऋण देना है। आप धनी नहीं हैं। धनी तब होवोगे जब ये ऋजु-सुषुम्ना में शक्ति को जागृत करके, प्रवेश कराके ऊपर आ जायेंगे। षष्टम भूमिका में आने के बाद उसका परिणाम ये है – तपस्वी, वो बोले वैसा होगा। संतुष्टः – यथा लाओ संतुष्ट। दाता – देना जानता है मांगना नहीं। ज्ञानी – केवल ज्ञानार्थ है। जहां से मिले, जैसा मिले अर्जित करते चले जाना। ज्ञान की पूजा करना। अगर अर्जित करना है, जमा भी करना है तो उसकी पूजा करना, आदर करना, सम्मान करना – ये अनुशासन है। ये आना चाहिए। जिस मार्ग में जा रहे हैं अनुशासन की बहुत ही आवश्यकता है आप लोगों में और हममें। आप सोचिए – आपका घर है, बाल बच्चे हैं, देश में रहना है, समाज में रहना है तो सब प्रकार की अवस्थाओं में, आपको जानना है। जो कुछ कहना-सोचके। जितेन्द्रिय– अपने पर काबू, सारी इन्द्रियां वश में हैं। अभी हम परिस्थिथिति के वश में है माने प्रकृति के वश में है। हमें स्व वश होना चाहिए। "परवश जीव स्ववश भगवंता" ये जीव परवश है। नहीं जागो। ये भगवतीय गुण को आप प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने स्व में रह सकते हैं दयालुश्च मर्यादा नहीं छोड़ना चाहिए। दया पैसा दिया, नहीं sss। "दय" धातु माने गति देना, अड़े हुए, फसे हुए को निकाल देना। दय माने गति देना, Push करना। भई, भीख मत मांगो, ये लकड़ी को फोड़ो, हम तुमको खाने को देते हैं। ये घास छीलो हम तुमको सब देते हैं उससे काम लेना और उसको काम लेने सिखा देना कि कैसा काम होता है। भीख मत मांगो उसको कुछ बताइए कि किस तरह हम उसको गति देते हैं। सबको अपने जैसा बनाना, जैसे हम सबको अपने जैसा तैयार करते हैं।

मेरा विषय आत्म क्रीड़ का है। इसलिए मैदान जो है बिलकुल साफ है। ये खूब लम्बा चौड़ा है। इस मैदान में आप भी आ जाइए तो महान होते चले जायेंगे। महानता की दृष्टि से – महान एव आत्मा जिसकी सः महात्मा आप सब लोग महात्मा हैं। क्योंकि आत्मा आपमें विद्यमान है। केवल जो श्रृंखलायें जिसमें हम बंधे हुए हैं उसको दूर करना है, निरोध करना है। नष्ट नहीं करना, अनेक जन्म ले कर भोगना है क्योंकि "अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम्, न भोक्तम् क्षीयते कर्म कोटिशः जन्म सदेऽपि" जो किया है वो भोगना ही होगा लेकिन तूर्यावस्था में उसको कोई सुख दुख नहीं होता और भोग लेता है देखते देखते। लेना देना जिसको Pre Destiny कहते हैं वह जैसा लिखा है वैसा होगा। उसको आप काट सकते

उसको बदल सकते हैं। "महामंत्र मणी विषय व्यालके, मेटत कठिन बंक भालके" कब ? आत्म ज्ञान होने के बाद। "पहावे आपणाची आपण ज्ञान आवे ज्ञान"। संस्कृत में उक्ति है - स्वस्वरूपानसधान भक्ति इति भिधीयते" - स्व स्वरूप का अनुसंधान करना, ये जो रीत है उसको भक्ति कहा है। भज धातु से बना है। भज माने सेवा, "ति" प्रत्यय लगने से जकार, नकार हलन्त है लोप कर दिया गया है, संयोग कर दिया गया है तो भक्ति बन गया है। भक्ति माने उपाय।

ऐसा गुरू विश्वास जो आपको मिला है, सत्गुरू, सत्पुरूष द्वारा जो मिला है उसका पालन हो। प्रत्येक व्यक्ति उठ करके, प्रत्येक व्यक्ति को आसन देना चाहिए, आदर करना चाहिए। बड़ी अनुनय विनय के साथ शान्तमय वातावरण बनाना चाहिये। फिर आपका विस्तार, आपका प्रचार सब साधन अपने आप होगा। "प्रभावोंकिच उच्यते" आपको कैटालिस्ट like जीवन व्यतीत करना, निष्काम कर्म योगी होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। आपका ये जो प्रभाव है अपने आप "तारीफ" है। वातावरण शुद्ध होकर के जो आपके वातावरण में आयेगा वो आपकी तरह सुनेगा, बोलेगा और कुछ दिन बाद आपके जैसा शुरू हो जायेगा उसका आचरण। इतना कह करके यहां में :-

ओम् स्वस्तिनो इंद्रो वृध्दश्रवा,
स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदा,
स्वस्तिनः तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि,
स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु।

ओम् द्यौ शांतिः पृथिवी शांतिः आपः शांतिः औषधय शांतिः वनस्पतयः शांतिः विश्वेदेवा शांतिः ब्रह्म शांतिः सर्वंग्व शांतिः शांतिरेव शांतिः और सामा, सा-मा दो के बिना तीसरे की उत्पत्ति नहीं माने ये दो होकर जो कुछ उत्पन्न होते हैं ये भी शांत हो। देखिये, कितना सुन्दर है ये। आशीष है ये - सा मा, प्रकृति और पुरूष, ये सारी सृष्टि है। दो के बिना तीसरे, की उत्पत्ति नहीं है। ये सब कोई मानते हैं ये सामा भी शांत हो। माने जो कुछ भी उत्पन्न हो - अपने अनूकूल हो, समाज भी अनुकूल हो और राष्ट्र के लिए भी अनुकूल हो, जगत के लिए भी अनुकूल हो।

"किवन्तोविश्वमार्यम्" ये वेद में एक वाक्य है कि सारे विश्व को हम आगे करते हैं, ग्रहण करेंगे। आर्य माने कोई सम्प्रदाय नहीं, आर्य नाम ब्रह्म का है। अर्यमा कहा - अर्यमा माने उपासना करने वाले आर्य। शिव की उपासना करने वाले शैव, शक्ति की उपासना करने वाले शाक्य, गणपति की उपासना करने वाले गाणिपत्य, विष्णु की उपासना करने वाले वैष्णव, ब्रह्म की उपासना करने वाले ब्राह्मण इस तरह उपासना, ये गुण है। आप ये गुण सम्पन्न हो, मेरी आशीष है ये सब शान्त हो और जो सत्गुण हैं वो आपमें उदय हों, आचरण भी सत् आचरण हो। और "सर्वेऽपि सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" - सबको ये उत्तम रूप दें कि आपको लौकिक, अलौकिक दोनो सुख भोगते हुए माने सुख दुख भोगते हुए उस आनन्द को, आनन्दमय सागर में डूबते हुए अन्त समय में उस अर्चिरादि मार्ग में माने तारापद में आपका परलोक गमन हो। इस प्रकार आप सबको मेरा सहृदय, मनपूर्वक, बुद्धिपूर्वक और जीवन में जो कुछ कमाया है पुण्य से, तो आपको आशीर्वाद देता हू कि सबका कल्याण हो, सबका भला हो,

सब आनन्दमय जीवन व्यतीत करें तो "सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चित दुख भागवे"।

जब हम आयें, जब जब हम लोग मिलें कश्चित कोई भी दुख आपको, कोई भी दुख से आपको हम दुखी न देखें ऐसा हमारा आशीर्वाद है।

ओम् शांति शांति शांति।

C/20-गुरुपूर्ण मुंगेली 7/84

★ ★ ★

आपको मोक्ष चाहिए। आपको शक्तियां प्राप्त करना है। अभी हम बिलकुल बलहीन हैं, पराधीन हैं, स्वाधीन नहीं हैं हम, गिरते जा रहे हैं। आत्मा, ऐसा जो देव है वो दूर हो गया है। आपको पास आना है अपने आप में। आपको साधना करना होगी। अनुष्ठान करना होगा।

★ ★ ★

जैसा बताया गया है अगर वैसा अभ्यास, बिना किसी शंका और संशय के करेंगे तो आपमें ये लक्षण उत्पन्न होंगे – हाथ पैर में झटके आना, पसीना आना, मूर्छा आना, ज्योति भी आ सकती है अगर अभ्यास करते रहे, नहीं डरे, नहीं छोड़े। तब सुषुम्ना में प्राण प्रवेश होने पर बाहर का श्वास प्रश्वास शक्ति के रूप में कभी चन्द्रमा, कभी सूर्य बन जाता है। बाहरी श्वास प्रश्वास के अभाव में भी शरीर बना रहता है। गिरता भी नहीं, सड़ता भी नहीं। जैसा रखो, वैसा रहता है। फिर चाहे कितने बरस रखिये आप। जब तक आप बाहर सांस ले रहे हैं और छोड़ रहे हैं तब तक आप काल के अधीन हैं। जब तक आप सुषुम्ना में हैं, काल मण्डराता रहेगा पर कभी छू नहीं सकता, ये सारे लक्षण उत्पन्न होते हैं।

★ ★ ★

अभ्यास करते करते करते मृत्यु आती है अब शरीर की आयु यदि बाकी हो तो शरीर में वापस आता है क्योंकि शरीर के जो भोग हैं वो भोगने ही पड़ते हैं। अन्ततः वो शरीर छोड़ता है। पर ये केवल कहने की बात है। शरीर छोड़ना या न छोड़ना उसकी इच्छा पर निर्भर है।

★ जैसा चाहो वैसा रहो ★

"राम नाम मणि दीप धर"। एक मणि माना है, एक दीप माना है। वैष्णव क्या करते हैं – एक दीप लगाते हैं और शैव लोग क्या करते हैं – मणि गोल। ये संस्कृति है। ये सब संतों की भाववाणी समझना बहुत कठिन है। तो, "राम नाम मणि दीप धर" – ये मणि माने शैव संस्कृति और वो दीप माने लम्बी खड़ी ये वैष्णवी है। तो जियधर, राम दोनों में है। राम माने आत्माराम दाशरथी पुत्र राम नहीं, आत्माराम। आत्माराम दोनों में एक समान है। ये खाली चिन्ह है। भई, ये फलां सम्प्रदाय, ये फलां सम्प्रदाय, ये फलां पार्टी – ये विचार हैं अपने अपने। तो, दोनों को एक किया उनने। आत्माराम माने अद्वैत, तभी होगा। अगर शैव, शैव है और वैष्णव, वैष्णव है और दोनों में विरोध अगर है तो आत्मा फिर अद्वैत कहां है वो। तो समन्वय किया माने दोनों को एक मिलाकर माने अद्वैत हो गया।

Etiquette **अलग है,** Manner **अलग है।** Mannerism **जो है वो अलग है।** Eltquette **अलग है।** Etiquette **जो है प्रयोग में है और** Manner **रहने में है। दोनों होंना चाहिये तभी व्यवहार में वो कुशल माना गया हैं।** कुशल माने One pointness। कुश एक घास है, जिसको कुश कहते है और अल प्रत्यय है। हलंत है। तो **कुशल मानें** One pointness – **सुन लिया माने सुन लिया। याद हो गया, पक्का हो गया। क्या बार – बार सुनना, बार- बार बोलना। एक दफे कह दिया, हो गया। अब, जिसको नहीं करना हैं तो तुम बार-बार कहो न उसको, वो नहीं करेगा। सुनता रहेगा। एक बार में जो आदमी नहीं समझा, वो कई बार कहने पर भी नहीं समझेगा माने वो नहीं करेगा, नहीं मानेगा। एक बार में जो नहीं मानता, बार-बार बोलने से कभी नहीं मानेगा माने आवश्यकता नही उसको। वो क्यों मानेगा, क्यों सुनेगा, कहते रहो वो सुनता रहेगा।**

"दीप धर", कितना सुन्दर है। "जी हरे हरिद्वार" – जीभ से उच्चारण करो लेकिन देहरी जो है, ओंठ दोनों बंद करो माने मौन हो करके। "तुलसी भीतर बाहरे जो चाहे सूर्यात" -. अगर प्रकाश चाहते हो, ज्योति दर्शन करना चाहते हो आप, तो ये मुंह बंद करो, मौन हो जाओ और और मन ही मन माने मानसिक कार्य करिए। जो हो, सो मानस से हो। दोनों में समन्वय किया है।

"रमन्ते योगीनो हृदयास्मिन सः रामः"– राम ने भी गुरुकुल जा करके आत्म साक्षात्कार किया है। विष्णु जी हमेशा ध्यान में रहते है, क्यों ध्यान में रहते हैं। शंकर जी को देखो – हमेशा ध्यान में रहते है। ब्रह्मा को देखो – हमेशा ध्यान में रहते हैं। क्यों ध्यान में रहते हैं। वो

ध्यान धारणा माने आत्मा । उनका एक ही चित्त है । ये सब योगी हैं, गुरु हैं । हम चाहे जिसको भगवान कहते हैं, वो बात अलग है लेकिन वो गुरु हैं । इसलिये गुरु पर एक रचना है –

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ये सब बातें मालूम होना चाहिए, किसके साथ में क्या व्यवहार करें ।

अरे भई, जिसकी दुनियां है, दुनिया बनाया है । सब प्रकार की रचना है । जैसा चाहो वैसा आप रह सकते हैं । अपने आपको नीचे से नीचे गिरा दो या अपने आपको ऊंचे से ऊंचा चढ़ा दो । लेकिन एक बात है, जो अपने हाथ में नहीं वो क्या –

"न अपनी खुशी आये थे, न अपनी खुशी चले ।
ले आई हयात आये थे, ले चली कजा चले" ॥

इसलिये अपने को कोई फिक्र नहीं । पैदा हुए तो कुछ मालूम नहीं और जब जायेंगे तो कुछ मालूम नहीं, क्या फिक्र करना । तो बेफिकर रहना । जिसकी दुनिया है वो जाने । बस । हो गया ।

प्रवचन – 8 /92, रायपुर

✲ ✲

ये स्थूल अन्नमय कोष को हम यहां रख देते हैं और एक प्राण जो **divine quantum of energy**, सूर्य रूपी आत्मा की एक किरण है जिसके द्वारा **Circulalton** तथा **Respiration** दोनों का स्वयं संचालन होता है । वो प्राण जो अभी अदृश्य है आप देख नहीं सकते लेकिन विशेष युक्ति या प्रयुक्ति से, गुरूदिश मार्ग से अभ्यास करके जिस समय वो तप जाता है पश्चिम मार्ग से सुषुम्ना में प्रवेश करता है तब ज्योति दर्शन होने लगता है ।

✲ ✲

ये हमारा मस्तिष्क (वृहत मस्तिष्क) जिसका व्यास दस अंगुल है । इसमें ब्रह्मरंध्र में (**Inter-ventricle forman of monro**) प्राण पश्चिम मार्ग से ले जा करके, मृत्यु को लांघकर, आज्ञा-चक्र का लंघन करके जब सहस्त्रार में जाते हैं, उस परम को हम जब वहां स्थापित करते हैं, तब वो ज्योति सारे विश्व में फैल जाती है । अब इतना बड़ा देव जो हमारे अन्दर है उसको छोड़कर किस देवता का हवन करें, किसको आहुति देवें ।

✲ ✲

* शुभेच्छा एवं विचारणा *

साधना की प्रक्रिया में जब सुषुम्ना मार्ग खुल जाय तब कुंडलिनी रुपी महाशक्ति सुषुम्ना नाड़ी के भीतर प्रवाह (आना जाना) रम्भ हो जाता है। ऐसी स्थिति को प्राप्त रने से इच्छा शुभत्व युक्त हो जाती है। इसे शुभेच्छा कहते हैं। शुभेच्छा द क्षोभ से आया है। क्षोभ शक्ति है याने कर्षण की शक्ति। हमारे विचार, कृति एवं णी शुभ हो तो सारा माहौल शुभत्व युक्त शोभायमान) अथवा संरचनात्मक शक्ति से क्त हो जाय। जब हम निरपेक्ष वृत्ति से साधना र शुभेच्छा से युक्त हुए, इस शक्ति को लेकर माज में प्रवेश करते हैं-सेवा करने के लिए तब धक स्वयं भय मुक्त होकर समाज की सेवा रता है और समाज की सेवा इसलिए करता ताकि अन्य भी भयमुक्त हों। शुभेच्छा से क्त होकर वह (साधक) दुनिया में लोगों की च्छा या कामना पूर्ति के लिए लग जाता है।

इच्छा क्या है? व्यवहार में ऐसा हुआ, ऐसा होना है, इसे निश्चित करो। ऐसा रने से मनुष्य और फिर समूचा समाज सुखी गा।

इससे शक्ति प्राप्त होगी, शक्ति उदय ोती है, तब वह साधक (आत्मा) कहीं आता ाता नहीं, शोभायमान हो जाता है। इस स्थिति प्राप्त होने पर, सुषुम्ना खुल जाने पर वह (साधक) स्वयं तो सेवा करता जाता है, पर किसी प्रकार की अपेक्षा मन में नहीं रहती। ऐसा सोचिए, समझिये। अन्यथा स्वाद, क्रोध मय ये क्या इच्छा के वास्तविक या स्वाभाविक रूप कहे जा सकते हैं?

वास्तविक शुभत्व प्राप्त करने के लिए या इच्छा शक्ति के स्वभाव रूप में प्राप्त होने लिए, साधना की आवश्यकता एवं साधना द्वारा मरने की आवश्यकता है। (यहाँ मरने का विशेष तात्पर्य है, अहं का नाश, मैं कर्ता नहीं हूं-विचार) सद्गुरू सहायता से ही यह सम्भव है उसके पास जाना चाहिए, जैसा बुलडोजर बर्फ को हटाकर आत्मा का मार्ग प्रकाशित करते हैं। यही प्रथम भूमिका हैं।

अब विचारणा को लें। मन को विचारें कोई सुखी नहीं प्रतीत होता। यह बाह्य जगत में देखने से लगता है। क्योंकि हम बाहरी दौड़ भाग में व्यस्त हैं। मन की गति असीम है और इसकी दौड़ भाग ही दुखों की जड़ है। जब मन की स्थिरता प्राप्त हो जाती है, तब दुख से भी बचते चले जाते हैं।

यदि मनुष्य का मन अंतर्मुखी हुआ और भीतरी दुनिया के (आत्मिक, आध्यात्मिक संसार) रहस्यों (जो कि अत्यंत स्वाभाविक है) के प्रति अभिरूचि हुई, सेन्ट्रल केनाल योग में मेरुदण्ड से लगी सूक्ष्म नली में प्रविष्ट हुआ और आगे बढ़ता गया वह दुखों से दूर होता चला जायेगा। मनुष्य के भीतर विविध शक्ति केन्द्रों के रुप में नाड़ी समूहों का जाल जो दलों के रूप

में विद्यमान है, इनमें विविध शक्तियां ऋद्धि सिद्धियां निहित हैं। सेन्ट्रल केन।ल के माध्यम से इन दलों का स्पर्श होता है। जब वे दल (चक्र) खुलने खिलने लगते हैं तो वे शक्तियां प्राप्त होती चली जाती है। इस प्रकार, वाह्य जगत से अंतर्जगत की वह यात्रा मनुष्य को सुखी सानंद एवं सम्पन्न बनाती है।

इन नाड़ियों के रूप में शक्ति केन्द्रों, जो शरीर के भीतर हैं, जागरण की आवश्यकता है। इसे हम High way-Number 'O' (Zeero) कह सकते हैं। इन नाड़ियों की संख्या १२ मानी गई है। इन शक्तियों को प्राप्त करने से मनुष्य का सांसारिक जीवन सफल हो जाता है, इसमें संदेह नहीं।

" कैवल्य से"

※ ※

सद्गुरू प. पू. गुरूजी से एक शिष्य ने पूछा–" गुरूजी, सब समस्याओं का एक समाधान क्या होगा ? "

तब प. पू. गुरूजी ने उत्तर दिया – "समस्या बोले, तो कुत्ते की दुम। और उसका इलाज है फुलस्टाप। और फुलस्टाप लगाने का तरीका है धीरे धीरे व्यवहार कम करते जाना !"

※ ※

धर्मफल ये है कि हम भय से दूर हों। इच्छा, कामना (Desire) क्रोध (Anger) भ्रांति (Elusion) और मृत्यु का भय (Fear of death) जो हमारे पीछे है, दूर हों। ये जो हमारा स्वभाव है ये "स्व" भाव नहीं है धारणा है, मानें व्यसन बन गया है। हम "स्व" जो आत्मा है उससे धीरे धीरे बहुत दूर चले गये हैं। हमे तो Merge होना है, Emerge नहीं। हमें तो आत्मा की ओर जाना है– To go towads the Goal लेकिन हम आ गये हैं Away from the Goal हम अपने आप से दूर चले गये हैं। यही Ego है।

※ ※

★★★ प्रेरक उद्बोधन ★★★

हमारी बुद्धि जड़ है, परिणामी है। उसमें सुख-दुख, लोभ, मोह और मृत्यु भय – ये सब परिणाम होते रहते है। ये सुख-दुख, मैं-मेरा, तू-तेरा, मान-अपमान सब विकार हैं बुद्धि के। आत्मा चैतन्य है। अपरिणामी है। उसका कोई परिणाम नही होता। पहले हमें तत्वों को जान लेना चाहिये। इसके लिये सद्गुरू, सतपुरुष का सान्निध्य आवश्यक है, अनिवार्य है।

★ ★ ★

मानव समाज के प्रत्येक प्राणी की शरीर रचना और शरीर क्रिया, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का हो, एक जैसी है। मनुष्य से उत्तम प्राणी सृष्टि में न कोई है और ना ही आगे होना सम्भव है। मानव शरीर की रचना है – "नव द्वारे पुरे देहि"। "देहि" – इस देह को धारण करने करने वाला याने आत्मा। वो आत्मा जो परम है या जो अध्यारोपित होकर बुद्धि के द्वारा जीवात्मा कहलाया।

★ ★ ★

हमारी कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों का बाहर भटकना स्वाभाविक है – प्रप्रकर्षण याने बाहर के आकर्षण से ही उसकी सब वृत्तियां होती रहती हैं। वो सारे कार्य करता रहता है। तृण से लेकर मानव प्राणी पर्यन्त हर श्वास लेने वाले प्राणी में चार मूल संस्कार पाये जाते हैं जिससे अंतिम श्वांस पर्यन्त कोई भी उसका भरोसा नहीं करता कि वो कब बदल जायेगा। श्लोक – "आहार निन्द्रा भय मैथुनञ्च"। हमें शरीर ही ऐसा प्राप्त हुआ है कि आहार तो चाहिए ही। आहार है तो निन्द्रा भी चाहिए। भय भी बना रहता है। चौथा है संबंध-ये हो न हो लेकिन तीन तो हमारे पास हमेशा है तो मनुष्य इस ओर जाएगा ही जाएगा। "कोशिशें बेकार हैं जब आदमी मजबूर है" ये मजबूरी है। इन वृत्तियो का निरोध गुरूदिश मार्ग से अभ्यास करने पर ही हो सकता है।

★ ★ ★

क्या एकादशी करने से वृत्तियां आपके वश में आ जायेंगी? द्वादशी, चतुर्थी, पंचमी, सप्तमी करने से वश में आयेंगी? नहीं, नहीं, ना . . न ऽ ऽ ऽ। आपके जो संस्कार हैं, जो मधुर स्मृतियां हैं मन में, बुद्धि में, रस की जो अनुभूति है जिव्हा में, रसना में उससे क्या आप इस तरह छुटकारा पा सकते हैं? केवल न धारण करने से, न खाने पीने से, रस न लेने से क्या संस्कार नष्ट हो जाते हैं? नहीं.... नहीं. . । "विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः"। वो नहीं जा सकते क्योंकि हम लोगों ने उन मूल संस्कारों के आधार से अपनी आदत बना ली है। Habit बना ली है। व्यसन बना लिए हैं।

आज हमारी बुद्धि भौतिक प्रलोभनों की ओर मूल सस्कारों के कारण जाती है। ये अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये। मनुष्य अच्छी तरह जानता है कि इस ओर जाने से हम पतित होते है, गिर जाते हैं। फिर भी वो वहां पहुंच जाता है। एक कहावत है – "राहड़ा छोड़ बसहुले ठाड़"। इनसे वो छूटता नहीं है। इनको वश में करना है।

★ ★ ★

प्रकृति ये है – सत्व, रजस, तमस सम्भवा प्रकृतिः। सत् माने उत्तम जिसको सत्गुण, सत्शील, सत् आचरण कहा गया है। रज – ये क्रिया है। तम – ये है अंधकार, अविद्या। हम कुछ भी नहीं जानते और कहते हैं कि सब जानते हैं। कहा है – "योगश्चित वृत्ति निरोधः" माने नाश नही होता पर आप रोक सकते है और इसी जनम में हमको बार–बार जन्म लेना पड़ता है।

★ ★ ★

"स्वस्वरूपोलब्धि हेतु संयोगः"। उपब्धि माने बुद्धि का एक नाम। इस बुद्धि को आईने के समान स्वच्छ और स्पष्ट होना चाहिए या पानी जैसी, जिसमें ऊपर से नीचे तक सब चीजें स्पष्ट दिखाई देती हैं। हमारी बुद्धि के संस्कार इससे भिन्न हैं लेकिन इनका मेल हो जाने से हम बाहर की ओर भागते हैं और बस एक आरोप करके छुट्टी पा जाते हैं। वो ये कि आत्मा चैतन्य है और बुद्धि जड़ है, परिणामी है।

★ ★ ★

"अर्द्धमात्रा स्मिता विद्या अनुचार्यां विशेषतः" – आप शक्ति को उठा नहीं सकते परन्तु शक्ति के द्वारा पलक मार सकते हैं, आ जा सकते है। कोई भी कार्य कर सकते हैं। सोचते हैं – मैं करता हूं। ये भूल जाते हैं कि वो शक्ति ही सब करती है। वो शक्ति है आपकी आत्मा। वहा परम है। वही सर्व शक्तिमान है, सर्वज्ञ है और सर्वत्र विद्यमान है। ये परस्पर विरोधी है लेकिन सत्य है। इसको अद्‌भूत कहा गया है। आज तक किसी ने जाना नहीं।

★ ★ ★

जिस गुण या शक्ति के विकास से सत्य अथवा तत्व की प्रतीति हो – ये सम्यक दर्शन है।

★ ★ ★

ये देह की या मेरी पूजा नहीं है। ये सत्य की पूजा है। उस सत्य की, उस तत्व की।

आदमी सुख, दुख, मोह, लोभ, मृत्यु भय और काम वासना इत्यादि को पूर्ण करने के लिये चाहे अनचाहे नियम बना लेता है और वो बाध्य है ऐसा करने के लिए। लेकिन 'गुरू शब्दस्त अन्धकारस्या" – यह हमारी बाहर गति में रुकावट लाता है। "तन्निरोध:" – निरोध करता है वृत्तियों का। कहा गया है – "आम् अग्निम् इडे पुरोहितम्" – अगला जन्म नहीं, इसी जन्म में आप अपना उद्धार कर सकते हैं। और अचिरादि मार्ग, ज्योतिर्मय मार्ग अपनाकर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। ये अभ्यास से होता है।

★ ★ ★

अभ्यास के द्वारा गुरुदिश मार्ग से चलने पर क्लेश अपने आप मिट सकते हैं। आप समर्थ हो सकते हैं। आप ही अपने भाग्य के निर्माता हैं। और आप ही उसमें परिवर्तन लाने में सक्षम हैं। गुरुदिश मार्ग से आप ऐसी ताकत प्राप्त कर सकते हैं कि आप अपनी Destiny को बदल सकते हैं। इसी जन्म में बदल सकते हैं। शरीर छूटने के बाद तो आप परवश हैं।

★ ★ ★

पातंजल योग दर्शन में सूत्र है – "भव प्रत्ययो विदेह प्रकृति लयानाम"। भव माने जन्म जन्मतः। विदेह माने अन्तर्मार्ग, अन्तर्धाम में उसकी सदैव लौ लग जाना। उसको अन्दर ही अच्छा लगता है। अन्दर जाकर जो कुछ मिलता है वह अपने स्वजन, परिजन को बताया करता है कि बड़ा आनन्द आता है। सदा प्रसन्न चित्त रहता है क्योंकि उसे कोई चिंता नहीं रहती। मोक्ष का यही अर्थ है। यही लक्षण हैं।

★ ★ ★

अभ्यास करने से धीरे धीरे प्रत्याहार होता है। विषयों से आपका शरीर बदर होता जाता है। शरीर बदर होता जाता है। शरीर बदर हो जाता है पर आसन लगाने से वो बद्ध है। फिर रक्ताचरण भी अपने आप बंद होने लगता है और साथ ही साथ श्वसन संस्था भी, न कुछ करते हुए भी शिथिलता को प्राप्त होती है। जैसे जैसे ये शिथिल होती जाती है आपकी ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां भी अपने अपने केन्द्र में चली जाती हैं। अब होते होते आपका जी घुटने लगता है। आप सोचते हैं कि कहीं मरण तो नहीं आ रहा। मरण तो एक दिन होने ही वाला है। उसको कौन टाल सका है। तो जीते जी अपना मरण देखो ना।

★ ★ ★

आप भी अभ्यास करके आत्म–शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। आत्मा जो परम है उस परम पद, परम धाम में अपने आपको ले जा सकते हैं। वो मार्ग है अन्तर्मार्ग सुषुम्ना (Ependymal lining of Central Canal)

गुरुजी का स्वास्थ्य-कहब कठन समुझब कठन

शून्य शहर तक सब गये, शून्य से आगे नाहिं।
शून्य से आगे जे गये, ते मन्द मन्द मुस्काहिं॥

शून्य अर्थात् निद्रा या सुषुप्ति जिसका अनुभव सभी को है। जीवन अधिकांश भाग हमारा निद्रा में व्यतीत हो जाता है। निद्रा के परे कोई विरले योगीजन ही जा पाते हैं जिसे योग की भाषा में तुरीय अथवा तूर्यातीत कहा गया है। कबीर साहब का स्वै अनुभव से कहना है, जो योगी निद्रा के परे की स्थिति में पहुंच जाते है उनके चेहरे पर सदैव एक मंद मुसकान बनी रहती है।

पूरे वर्ष सन् ९२ और ९३ श्री गुरूजी की गंभीर अस्वस्थ्ता से निकले। परन्तु हम सबने उन्हें सदैव प्रसन्नचित्त आनंदित और आनंद मंगलमस्तु का आशीष देते ही देखा। यह कोई साधारण बात नहीं। इतने लम्बे समय तक अस्वस्थ रहने के बावजूद उनके चेहरे पर अवसाद की छाया भी देखने को नहीं मिली। शरीर की जर्जर अवस्था में भी नये लोगो को दीक्षा और पुराने लोगों को शिक्षा देने का कार्य अविरल गति से चल रहा था। किसी ने कभी भी उनमें मृत्यु का भय नहीं देखा। अनेकों इस बात के साक्षी हैं जिन्होंने श्री गुरूजी को उनके साधना काल में कई दिनो तक "कोमा" (भावसमाधि) या मूछित अवस्था में देखा। अर्थात् मृत्यु का अनुभव श्री गुरूजी कई बार कर चुके हैं। किसी ने ठीक ही कहा है –

बका की गर तमन्ना है, तो हस्ती से गुजर पहले
अभी होता है वस्ल उसका, तू जीते जी ही मर पहले

जिसे अपने अंदर के परम तत्व से एक[illegible] की अनुभूति करना हो उसे मृत्यु का अनु[illegible] करना ही होगा। श्री गुरूजी तो छुटपन से इस[illegible] मार्ग पर थे और अब आत्म कल्याण के मार्ग [illegible] लोगों के लिये सुलभ कर दिया है। संक्षिप्त [illegible] उनके पिछले दो वर्ष के स्वास्थ्य की जानकारी यहां प्रस्तुत है।

लगभग नवम्बर ९१ से श्री गुरूजी [illegible] रक्त की कमी होना प्रारंभ हो गई थी। उन[illegible] स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव अनेक बार हुए [illegible] परन्तु उनकी दमदार आवाज और प्रसन्न मु[illegible] ने स्वास्थ्य की कमजोरी को कभी प्रगट नहीं हो[illegible] दिया। एनीमिया अर्थात् रक्तात्पता ने पहल[illegible] बार गंभीर रूप धारण किया मार्च ९२ में, [illegible] उनका हीमोग्लोबीन साढ़े आठ ग्राम हो गया[illegible] रक्त संबधी सभी प्रकार की जांच का निष्क[illegible] था विटामिन बी-१२ की कमी। परन्तु बी-[illegible] की कमी किस कारण से है यह एक समस्या [illegible] बनी रही।

कभी इंजेक्शन नहीं लेने वाले श्री गुरू[illegible] अपने हितैषियों और शिष्यों की तीव्र इच्छा [illegible] सम्मान करते हुए इंजेक्शन लगवाना मंजूर किया[illegible] स्वास्थ्य के सुधार में जितना आगे बढ़ते उत[illegible] ही पीछे हो जाते। हर तीन चार माह में हीमो[illegible]ग्लोबीन बढ़ता और कम हो जाता। इसी अवस्[illegible]

में १९९२ में ग्वालियर में उनका जन्म दिवस मनाया गया। स्वास्थ्य में गिरावट जारी थी, इलाज भी चल रहा था शारीरिक कमजोरी चाहे जितनी हो पर मन उससे स्वतंत्र था। हिम्मत और हौसले बुलंद थे। उनका कार्य कभी बंद नहीं हुआ, भ्रमण जारी रहा। मानो प्रकृति–पुरुष को चुनौती दे रही हो।

जनवरी ९३ में एक और बिपत्ति ने आ घेरा। गुरूजी ने कनिष्ठ चिरंजीव अशोक भैय्या जो सदैव उनके साथ रहते और उनकी देखभाल करते, के स्वास्थ्य में गड़बड़ी आ गयी। प्रकृति पग–पग पर बाधायें खड़ी कर रही थी पर ये बाधायें गुरूजी पर हावी नहीं होने पायी। उनकी औषधि में थायरायड संबंधी गोलियां देने से एनीमिया में सुधार हुआ, पर वह भी क्षणिक था। फिर तेजी से स्वास्थ्य गिरने लगा। शिष्यों के दिल की धड़कने बढ़ने लगी। उद्धिग्नता और निराशा ने सबको ग्रसित कर लिया। कमजोरी अपने चरम सीमा पर थी, पैरों में सूजन, सांस लेने में तकलीफ, बोलने में श्वास भर आना। फिर भी जो गुरूजी के पास आता, उसे निराश न कर कुछ न कुछ बोलते ही थे।

इसी सीरियस हालत में १९९३ में उनका दिवस मनाया गया मुंगेली में जन्म दिवस मनाना आत्माशक्ति का प्रतीक है। प्रकृति ने मानो अल्टीमेटम दे दिया हो। फिर भी गुरूजी, श्री भटजी वाले साहब से कहा, मैं इंदौर अवश्य आऊंगा, नहीं आने से दूसरा जन्म लेना होगा। वो कतल की रात्रि थी, जन्म दिवस के पूर्व की रात्रि क्रिकेट की गेंद इतना बड़ा गोला मल द्वार से निकला साथ ही पाव भर रक्त।

जन्म दिवस के दिन दर्शन देते–देते गुरूजी को पसीना आया और कुछ देर के लिये मूर्छित हो गये। कार्यक्रम बंद नहीं हुआ फोटो के पूजन से काम चलाना पड़ा। सभी शिष्य चिंतित और उद्विग्न हो उठे कि अब क्या होगा। अशोक भैय्या किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। कुछ कहते समारोह निपट जाने दो, कुछ कहते तत्काल ले जाओ।

सबने मिलकर तय किया कि गुरूजी को तत्काल ले जाय। गुरूजी भी हार मानने वाले नहीं थे – लोगों की इच्छा को स्वीकार किया। उस समय ही होमोग्लोबीन केवल चार ग्राम था। रात्रि साढ़े सात को रवाना हुए साढ़े दस बजे रायपुर पहुंचे। पूरे तीन घंटे गुरूजी खेचरी मुद्रा लगाये बैठे – जीभ तालु से चिपकी थी। उसी समय रक्त देने की व्यवस्था की गई, शिष्यों में रक्त देने की होड़ मच गई, दो दिन में चार बोतल खून लगा और हफ्ते भर में सात। होमोग्लोबीन चार से पहले सात फिर नौ हुआ। दुबारा जांच से पेट में गोला है ऐसा लगा। सब की राय से भिलाई हास्पिटल के प्रमुख सर्जन को दिखाया गया। उन्होंने प्रेम से गुरूजी से कहा हमें आपका सहयोग चाहिये इस गोले को आपरेशन द्वारा निकालना होगा। गुरूजी तुरंत मान गये हम लोग हतप्रभ हो गये। जीवन में गुरूजी का "एप्रोच" हमेशा पाजिटिव रहा है।

अब तक हवा फैल गयी कि श्री गुरूजी को केन्सर हो गया है। लोग तरह–तरह की बातें करने लगे जितने मुंह उतनी बातें, कुछ कहते बम्बई या दिल्ली ले जावो, कुछ कहते यदि कुछ ही दिन जीना है तो शांति से जीने दो। भिलाई में भी अधिकांश डाक्टर आपरेशन के विरूद्ध थे – कहते ८६ वर्ष की उम्र, २–३ बार हार्ट अटेक, साथ में डायबिटीज, आपरेशन टेबल

पर मरने की पूरी संभावना, आखिर हम आपको क्या उम्मीद दिलायें।

श्री गुरूजी को आखिर कैंसर कैसे हो गया, इस पर एक घटना प्रकाश डालती है। मेरे मित्र काफी साधना किये हुए थे, देवी भक्त सज्जन थे, इसी दौरान एक बार गुरूजी के पास दो मिनट ध्यानस्थ बैठे। फिर मुझे बाहर बुलाकर कहते हैं–मुझे इनके पेट में एक गोला दिखा जो इनका नहीं है किसी दूसरे का ओढ़ रखा है। इनकी गुरूजी से पहली मुलाकात थी। शिष्यों और उन पर विश्वास करने वालों के लिए यह कोई आश्चर्यजनक, अनहोनी बात नहीं – क्योंकि, ऐसा कई बार देखा गया कि जब–जब शिष्यो के प्राणों पर संकट आये, गुरूजी का तबियत बिगड़ गई। योग की अधिकृत पुस्तकों में इसका उल्लेख मिलता है–पूर्णत्व को प्राप्त हुए योगी को जरा–व्याधि नहीं होती। जो आर्त हो उनसे सहायता के लिये पुकारते हैं, उनका कर्म बंधन वो सहर्ष स्वीकार करते हैं। प्रत्यक्ष में इसका अनुभव तब हुआ, जब गुरूजी आठ-दस लोगों को एक साथ दीक्षा दे रहे हों–दीक्षा के तुरंत बाद उन्हें शौच के लिए जाते देखा गया। इस संबंध में पूछने पर उन्होंने इतना ही बताया कि यह एक यौगिक प्रक्रिया है। केन्सर और उसका आपरेशन के के नाम से शिष्यों की हवा खिसक गयी। सभी दुवायें मांगने लगे कोई अल्लाह से मांगता कोई भगवान ईशु से, शिवभक्त शिव से, विष्णुभक्त विष्णु से, देवीभक्त देवी से, कोई गुरूजी से ही। कईयो ने दुवा मांगने में जान की बाजी लगा दी जैसे बाबर ने हुमायूं के लिए मांगी थी।

१६ अगस्त ९३ को श्री गुरूजी मेन हास्पिटल भिलाई में भर्ती हुए। तीसरे दिन आपरेशन होना तय हुआ। आपरेशन थियेटर में एनसथेरिस्ट कहने लगे–केस रिस्की है, बेहोश नहीं करेंगे। स्पायनल दिया गया। डेढ़ घंटे आपरेशन में लगे। दो स्थानों में अतड़ी को काटकर पुनः जोड़ा गया। आपरेशन थियेटर के बाहर लोग दिल को हाथ में थामकर बैठे थे। ट्यूमर पूरी तरह निकल गया। ट्यूमर भी अजीबो गरीब था, अतड़ी के अंदर न जाकर बाहर की ओर जा रहा था बड़ी आँत से निकलकर छोटी आंत में जा चिपका। जैसे अपने गुरूजी रेयर इंसान हैं वैसे ही उनका ट्यूमर भी रेयर।

आपरेशन थियेटर से निकलकर श्री गुरूजी अज्ञातवास में चले गये अर्थात् (आ. सी. यू.) इंटेसिव केटेरिव केयर यूनिट, जहां आठ-दस दिन रहे। इसके बाद टांके निकाले गये। लगभग २० दिन बाद हालत ठीक नहीं होने के बावजूद रायपुर चले आये। अस्पताल में धीरे धीरे श्री गुरूजी की ख्याति फैलने लगी वहां के सीरियस हालात में भी कुछ डाक्टर दीक्षा के लिये जिद्द करने लगे। आखिर एक विशेषज्ञ डा. को उन्होंने दीक्षा दी।

रायपुर में आने पर भी कष्ट तो था पर यहां सभी ने बहुत राहत महसूस की। जैसे ही ट्यूमर निकल गया–रक्त अपने आप बढ़ने लगा। हार्ट की दवाओं की आवश्यता नहीं रही। लेकिन मांस पेशियों की कमजोरी के कारण चलना फिरना शुरू नहीं हुआ। अंततोत्वा १ जनवरी ९४ को प्रातः श्री गुरूजी ने मुंगेली के लिये प्रस्थान किया। अब श्री गुरूजी पूरी तरह स्वस्थ हैं; चलते फिरते हैं।

श्री गुरूजी की लम्बी अवस्था एवं विलक्षण स्वास्थ्य लाभ के साक्षी हैं भिलाई मेन

हास्पिटल के प्रमुख डा. सर्जन आर. जे चौबे जिन्होंने आपरेशन पूर्व गुरूजी की सहमति ही नहीं सहयोग का वचन भी प्राप्त किया, भिलाई के ही चीफ चेस्ट फिजिशियन डां. जे. आर. स्वर्णकार जो कि श्री गुरूजी के भिलाई से रायपुर आ जाने के बाद भी समय समय पर उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने आते रहे, रीवा के मेडिसिन के. प्रोफेसर डां. वासावड़ा तथा रायपुर के मेडिकल विशेषज्ञ डा. शशांक गुप्ता जो सस्नेह चिकित्सा संबंधी परामर्श तत्परता से देते रहे, रायपुर के पैथालाजिस्ट डां. सी. एम. वर्मा जिन्होंने लगातार इस अवधि में सारे वांछित Investigations सहर्ष किये तथा मुंगेली के डां. संजय अग्रवाल जो गुरूजी के मुंगेली निवास के समय श्री गुरूजी के स्वास्थ्य की चौकस निगरानी रखते व सामयिक सलाह देते। ये सभी धन्यता के पात्र हैं क्योंकि इन्होंनें इस पुण्य कार्य में अपना अपूर्व सहयोग देकर सतगुरू की प्रसन्नता प्राप्त की। समस्त गुरू परिवार इनका कृतज्ञ है। इसके अतिरिक्त अन्य स्नेही तथा परिवार के वे भाग्यशाली लोग जो परोक्ष या अपरोक्ष रूप से अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस पुण्य कार्य में अपना योगदान दे पाये, धन्य हैं। उनका जीवन सफल है।

जीवन में अंतिम क्षण आये जैसा प्रसंग, सभी लोगों की प्रार्थना, पुण्याई एवं स्वयं श्री गुरूजी की इच्छाशक्ति से टल गया। जो भी हो विधि का विधान अपनी जगह पर है। इस विधि प्रदत्त अवसर का अधिक से अधिक लाभ कैसे उठायें, अपने आत्म कल्याण के लिए, इस पर हमें गभीरता से विचार करना चाहिए, जिससे श्री गुरूजी को आत्मिक प्रसन्नता हो।

हम उस सर्वव्यापी निराकार शक्ति को देखकर नहीं सकते, अनुभव क्वचित ही कर सकते हैं। हमारा सबल तो श्री गुरूजी ही हैं जिनके द्वारा हमें सभी प्रकार की सहायता मिलती है। अतः उस सर्वव्यापी शक्ति से अपने स्वार्थ व लाभ के लिए निवेदन करते हैं कि श्री गुरूजी को हमेशा स्वस्थ्य रखें - हरि ओम् सत् सत्।

डां. प्र. वि. आचार्य
रायपुर

★ ★ ★

बुद्धि भोग्य है। वो भोगी जाती है। आत्मा भोक्तत्त है। इस अध्यारोपित आत्मा को जीवात्मा बताया गया है। जो जीव अपने आपको, अपनी बुद्धि को, अपनी आत्मा को, अपने व्यापार व्यवहार को नहीं जानता, वो उसको क्या जान पायेगा जिसका कोई आदि अंत नहीं। इसलिए पहले हम अपने आपको समझें यानें समझें कि बुद्धि क्या है, आत्मा क्या हैं।

★ ★ ★

हम समाज के एक घटक है। समाज की रचना में सब कुछ चाहिए। "सत्यम ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम्" – ये सब आचरण में लाने के बाद आप समाज को दे सकते है।

श्री गुरूजी - ५० वर्ष पूर्व

(श्री गुरूजी आज से ४०-५० वर्ष पूर्व कैसे थे यह जानने की उत्सुकुता सभी गुरू भाईयों को है उनका अतीत स्फटिक के समान पारदर्शक है)

छुटपन से प. पू. श्री गुरूजी के बारे में हमें कुछ न कुछ अनुभव होते रहते थे। परन्तु उस समय हमने गम्भीरता से उस विषय में नही सोचा। जिस समय श्री गुरूजी तेल्हारा में रहने के लिए आये (१९४०) मेरी उम्र ३-४ वर्ष की होगी। हमारा पारिवारिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ था जो आज भी कायम है।

जब भी घर में कोई बीमार पड़ा, बुखार आया हम दवा लेने गुरूजी के पास चले जाते थे। इस पर गुरूजी कहते थे - आप चलो मैं आया। ऐसा कहने के बाद गुरूजी कभी आये नहीं, पर बुखार बिना दवा के उतर जाता था। ऐसा अक्सर होता था, अनेकों बार ऐसा हुआ।

सन् १९४६ में हम लोग तेल्हारा से खामागांव आये। यहां भी गुरूजी का हमारे यहां आना जाना लगा रहता था। सन् १९५४-५५ की बात होगी मैं कालेज में पढ़ता था। गुरूजी घर पर तखत पर आंख बंद कर लेटे थे - उस समय उनके चेहरे की लालिमा अपूर्व थी प्रातः काल के उगते सूर्य की तरह। मैं उसे देखकर दंग रह गया। मैंने सोचा गुरूजी बहुत गुस्से में है। गुरूजी से सभी लोग और हम भी पंडित जी के रूप में परिचित थे न कि किसी अध्यात्मिक विभूति के रूप में। आज जब मैं अतीत में झांकता हूं तो आश्चर्य चकित हो जाता हूं कि किस तरह गुरूजी ने अपने आप को छुपा कर रखा था एक बहुरूपये के समान।

उसी दरम्यान की एक घटना याद आ रही है। मेरा छोटा भाई निरंजन बहुत बीमार पड़ा - बुखार १०४ से ऊपर था। घर पर मैं, मेरी मां और मेरा बीमार भाई ऐसे कुल तीन ही लोग थे। मालूम हुआ कि गुरूजी उस समय अकोला में हैं। मैंने अपने एक मित्र गोविन्द पिंगले को अकोला गुरूजी के पास भेजा। हमेशा की तरह गुरूजी का उत्तर था - तुम चलो हम हम आते हैं। गुरूजी का आना तो नहीं हुआ किंतु आश्चर्य जैसे ही गोविंद खामगांव वापस आया, निरंजन का बुखार, बिना किसी दवा के नार्मल हो गया और उस दिन से निरंजन की तबियत भी सुधरने लगी।

सन् १९६० के दशक में श्री गुरूजी दुर्ग चले आये और हम लोग अमरावती। ८-१० वर्षो तक दूर रहने के पश्चात् पुनः गुरूजी का हमारे यहां आना जाना रहना शुरू हो गया। मेरे बच्चे, बच्चियां श्री गुरूजी से इतने घुल मिल गये कि उनके पीठ पर बैठ जाते। गुरूजी को बच्चो से इतना लगाव था कि उन्हें पीठ पर बैठाकर घुमाते। उनसे बच्चों की तरह खेलते थे।

सन् ७६-७७ मेरी पत्नि सौ. रजनी मराठी विषय में एम. ए. की तैयारी कर रही थी। उस समय वो गर्भवती थी। ऐसे समय में श्री गुरूजी हमारे यहाँ आये, एम. ए. के लिये चांगदेव पासली और अमृतानुभव न केवल समझाया और पढ़ाया अपितु प्रत्यक्ष अनुभूति

करायी। इसका प्रभाव गर्भस्थ बच्चे पर हुए बिना नहीं रहा। यह बच्चा जिसका नाम गुरुजी ने अच्युत रखा, एकांत प्रिय और बचपन से योग में रूचि लेने लगा। इसे सत्रह साल की उम्र में (पिछले वर्ष) अचानक अपने आप कुण्डलिनी शक्ति के जागरण के अनुभव होने लगे। (इसका वर्णन दूसरे लेख में है) इस पर श्री गुरूजी ने कहा कि अभिमन्यु को भी चक्रव्यूह में घुसने का ज्ञान इसी प्रकार हुआ था – यह घटना इस बात को प्रमाणित करती है।

सन् १९७९ – अच्युत डेढ़ साल का होगा उसे कालरा जैसे पतली दस्त (गेस्ट्रो) होने लगी। मरणासन्न दिखने लगा। सेमी कोमा में था। मैंने उसे गोदी में लिया। श्री गुरूजी का स्मरण किया। मुझे एक हल्का–सा झटका लगा– मैंने ध्यान नहीं दिया – सोचा अनिन्द्रा के कारण हुआ होगा। थोड़ी देर बाद कुछ अधिक जोरों से झटका लगा, मैंने फिर भी ध्यान नहीं दिया। तीसरी बार बिजली के करंट जैसे "शाक" लगा, अच्युत गोदी से गिर पड़ा और रोने लगा – उसने थोड़ा दूध लिया फिर एक घण्टे में पूर्ववत् खेलने लगा।

मेरे पिताजी के केवल एक ही मित्र थे वो श्री गुरूजी। पिताजी बहुत ही कम बोलते थे परन्तु गूरूजी आये कि घण्टों बातचीत होती थी– उनके साथ। सिनेमा देखने जाते थे।

श्री गुरूजी की कृपा हमारे पूरे परिवार पर ऐसी है कि हमें कोई डाक्टर बाक्टर की जरूरत नहीं होती। श्री गुरूजी का चरणामृत हमारे लिये रामबाण औषधि है। श्री गुरुजी के संस्मरणों को लिखने बैठें तो एक पुस्तक तैयार हो जायेगी।

अन्त में एक बात अवश्य कहना चाहूंगा कि श्री गुरूजी के आध्यात्मिक भाग के बारे में हमें कुछ नहीं समझता था। प्रचार से अपने को उन्होंने दूर ही रखा हम उन्हें पण्डित जी अथवा पण्डित अजोबा के रुप में जानते व पुकारते थे। आध्यात्मिक जगत में एक असाधारण होते हुए हमेशा एक अत्यंत साधारण व्यक्ति जैसे उनका आचरण रहा – यही उनकी महानता है। ॐ तत् सत्।

(डा. प्रभात आचार्य द्वारा मराठी से हिन्दी में अनुवादित)

अशोक धर्माधिकारी
मुधोलकर पेठ, अमरावती

★ ★ ★

॥ ॐ श्रीसद्गुरवे नमः ॥

१७ जुलै १९९३ की बात है, मैं दिव्यानु निमज्जन पुस्तकें पढ़ रहा था। उसमें मेरे दादाजी (कै. बाबूराव धर्माधिकारी) और प. पू. गुरूजी के घनिष्ठ संबंध में पढ़ा तब मुझे लगा इतने वर्षो से हम गूरूजी के संपर्क में है किंतु उन्हें सत्गरू के रुप में कभी नहीं देखा। (हम सब बच्चे उन्हें पंडित जी आजोबा कहा करते थे।) होसा सोचते ही मेरा मन भावनाओं से भर गया

और मैं रोने लगा। मैं समझ नहीं पाया कि ऐसा क्यों हो रहा है। फिर मेरी साँस (श्वासोश्वास) फूलने लगी और पाँव भी लड़खड़ाने लगे। ऐसा ४०-४५ मिनटों तक होता रहा। उसके पश्चात् मेरी माताजी मुझे प. पू. गुरुजी के पवित्र चरणों का तीर्थ (जो हम घर में रखते है।) दिया और सो जाने के लिए कहा। मेरे पिताजी ने कहा कि गुरूजी ने तुम्हें गुरुपोर्णिमा के पूर्व ही प्रसाद दिया। बाद में मैं प. पू. गुरुजी की तस्वीर लेके सो गया। फिर भी मेरी सांस जोर जोर से चल रही थी। मैं प. पू. गुरुजी की तसवीर की ओर देख रहा था। उसमें मुझे प. पू. गुरुजी की युवा-वस्था की तसवीर जो आश्रम में लगी है (हमारे घर में भी है) दिखी, फिर मध्यम आयु की, उसके बाद वृद्धावस्था की, और बाद में मरे स्व. दादाजी को देखा। उसके साथ और भी एक तसवीर दिखी किंतु उसे मैं पहचान नहीं पाया। अब मैंने निश्चय किया की मुंगेली में गुरुपूजन के अवसर पर गुरु-शिष्य के नाते से जाऊंगा।

मुंगेली से वापस आने के बाद मैं अपने कमरे में "उदबोधन" किताब पढ़ रहा था। मेरे मन में विचार आया कि मैं कितना अभागा हूं कि इतने वर्षो से प. पू. गुरुजी के सपर्क में रहकर भी मैंने कुछ नहीं किया। ऐसा सोचकर मैं ध्यान करने बैठ गया। इतने में वर्षा शुरू हुई और खिड़की से बौछारें आने लगीं, मेरी पिठ पानी से पूर्ण भीग गयी थी। फिर भी ध्यान चलता रहा। कुछ समय पश्चात् पांव कांपने लगे उसके साथ पलग भी हिलने लगा ऐसा लगा मानो कोई पलंग (चारपाई) खींच रहा हो। अतः मैंने जमीनपर बैठकर ध्यान शुरु किया तो मेरे दोनों भोंहों के बीच दर्द होने लगा और ऐसा लगा जैसे कोई ठोक रहा हो। फिर मंदिर में बज रही घंटियों का मधुर घंटानाद तथा शंखध्वनी की मधुर आवाज आने लगी।

दि ३० जुलै को ध्यान करते समय गुदा-द्वारके पास जोरों से स्पदन शुरु हुआ, यह ४-५ बार हुआ। दि. १ अगस्त को वैसा ही स्पदन शुरु हुआ और मूलाधार के पास अत्यत शीतल वायु कमर से होकर ऊपर गर्दन तक जा रहा है ऐसा महसूस हुआ। फिर चिटीयाँ उपर की ओर चढ़ रही है ऐसा लगा।

कुछ दिनों पश्चात् जब मैं एकान्त में बैठा था तब मन ही मन में मैं हँसने लगा, मेरी व हँसी मुस्कुराहट में बदल गयी। कुछ समय तक मैं इसी अवस्था में था।

कुछ दिनों पश्चात् प. पू. गुरुजी के मुझे ध्यान के लिए मना करने के कारण मैं एक दिन पलंग पर बैठकर मन ही मन 'नारायण नारायण' का जाप करने लगा तो मेरे सिर पर मानो कोई फूंक रहा हो ऐसा लगा। वह अत्यत शीतल और सुखदायी थी। मुझे विश्वास है वह प. पू. गुरुजी ही थे। उसके पश्चात् फिर मन में हँसना प्रारम्भ हुआ। रोकने की चेष्टा करने पर भी मैं अपनी हँसी रोक नहीं पाया। फिर जहां घर के सभी सदस्य बैठे थे मैं वहां आ बैठा। फिर भी मेरी अवस्था कायम थी, हँसी बद नहीं हुई। घर के सभी ने मुझे इस अवस्था से परावृत्त करने की चेष्टा की किन्तु यह शुरु रहा। मुझे इस अवस्था में अत्यंत आनन्द आ रहा था। इसी अवस्था में मेरी गर्दन बायीं ओर झुकती थी। नजर कहीं एक कोने में जाकर रुकती थी।

अब जब कभी भी घर में प. पू. गुरुजी के विषय में चर्चा होती है तब ऐसी अवस्था

होती है।

यह जो कुछ मैंने अनुभव किया यह मेरे लिये एक आश्चर्य है। क्योंकि इसके पूर्व मैंने कभी भी ध्यान नहीं किया था और न ही इस विषय में सोचा था। अत: मैंने पिताजी से पूछा तथा प. पू. गुरुजी को लिखा। मुझे बताया गया की – जब मैं अपनी माँ के गर्भ में था तब उसे एम. ए. की परीक्षा देनी थी। उसने मराठी विषय में एम. ए. करना था। परीक्षा के लिये ज्ञानेश्वरी, अमृतानुभव तथा चांगदेव पासष्टी यह भी थे। उस वक्त प्रतिवर्षानुसार प. पू. गुरुजी का वास्तव्य हमारे घर में था। अत: प. पू. गुरुजी मेरी माँ को पढ़ाते थे। इतना ही नहीं तो महाशिवरात्रि के शुभावसर पर शाम के समय मेरी माता के माथे पर स्पर्श करके इस विषय की अनुभूति दिलाई।

जिस प्रकार अभिमन्यु अपनी मां के गर्भ में था और भगवान श्रीकृष्ण ने सुभद्रा को चक्रव्यूह के बारे में बताया उस वक्त अभिमन्यु ने गर्भ में इस ज्ञान को ग्रहण किया। यह जो संस्कार गर्भावस्था में शिशु पर होते है वह संस्कार मुझे अपनी माँ के गर्भ में मिले। (उसी का परिणाम जो मैंने प्रारंभ में अपने अनुभव बताये वह है।) अत: प. पू. गुरुजी ने मेरा 'अच्युत' ऐसा नामकरण किया और अब मेरे उपरोक्त अनुभव बताने पर गुरुजी ने कहा कि यह "अभिमन्यु" जैसा ही, (इस पर भी अभिमन्यु जैसा) संस्कार हुआ है।

अब यही इच्छा है कि गुरुजी के साक्षात् दर्शन हों।

अच्युत अशोक धर्माधिकारी
मुधोलकर पेठ, अमरावती – 444601

★ ★ ★

★ गुरूचरणों में लिपट रहियो ★

इन्दौर
दिनांक ३०–७–८५

मैं प. पू. गुरुजी के बताये मार्ग पर चलने का प्रयास कर रही हूं। अभ्यास तकरीबन नित्य दिन करती हूं। खास तौर पर सोने के समय तो करती ही हूं। तीन चार दिन पहले ही दोपहर को स्कूल से आने के बाद भोजन करने के बाद सोई तो आदत के अनुसार लेटे लेटे 'गुरुचरणों में लिपट रहियो" यही ध्यान में लाते हुए सो गई। फिर जो अनुभूति हुई और आनन्द मिला, शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूं। ऐसी अनुभूति हुई मन करता है सारा दिन ऐसा ही लगता रहे। सारे शरीर में विद्युत प्रवाहित हो रही थी। तीन चार बार लहर आई व आंखों के सामने छोटा-सा सूर्य दिखाई दिया। धीरे धीरे सुनहरे प्रकाश से सूर्य भर गया। पहले सूर्य की Out line दिखाई दी फिर बीच में भी प्रकाश भर गया। नीचे से ऊपर को सूर्य निकल गया।

ऐसा दो तीन बार हुआ फिर आंख खुल गई। नींद नहीं आई थी। साथ ही शरीर में विद्युत लहर भी चल रही थी। बड़ा ही अच्छा लग रहा था। सुबह स्कूल जाने से पहले अभ्यास करती हूं। बस! प. पू. गुरुजी का आशीर्वाद सदा मिलता रहे यही अभिलाषा है।

सौ. अलका

★ ★ ★

★ सब बंधन टूट गये ★

भिलाई

आदरणीय गुरुजी, दिनांक ६-४-८४

सादर चरण स्पर्श,

हम पति पत्नि को प. पू. गुरुजी का आशीर्वाद उनके दुर्ग प्रवास के समय २६ जनवरी को मिला था व पुष्पा को जो औषधि बताये थे उससे स्थिति सामान्य हो गई थी, अभी २तारीख नवरात्रि प्रारम्भ के दिन से पूजा करते समय पूरे शरीर में स्पष्ट प्रकाश का अनुभव हुआ था। जिसके बाद विचारों द्वारा लक्ष्मी, विष्णु, शंकर के दर्शन होते रहे। दिनांक ४-४-८४ को सुबह उसे ऐसा ख्याल आया कि किसी ने कुंडली को बैठने की आज्ञा दी। दिन भर कहती रही कि सब जल गया, सब खत्म हो गया, शरीर के सब बंधन टूट गये। इस स्थिति को देखकर मैंने प. पू. गुरुजी को आश्रम के पते पर पत्र लिखा।

जैसा कि विश्वास था कि पत्र डाक में छोड़ने के साथ साथ गुरुजी की आज्ञा इस दिशा में कदम लेने के लिये मिलती रहेगी उसी के अनुरूप वस्तुस्थिति को समझने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि विचारों द्वारा उसे भटकाव आ गया है। फिर काफी प्रयत्नों के बाद आशा है कि अब उसे अपने भटकाव का अहसास होने लगा है। इधर उसकी पिछली चार रातें निन्द्राविहीन हो गई हैं और उन समयों में विचारों ने उसे और भटकाया है। आज सुबह जब उसके सामने वस्तुस्थिति का विश्लेषण किया तब उसे महसूस हुआ कि वाकई भटकाव की स्थिति में बह चली गई है। उसके पश्चात ४ घण्टे में उसकी कार्यशैली में काफी परिवर्तन दिखा। कल तक जो विक्षिप्त स्थिति में थी वह आज नहीं हैं। वह गृह कार्य में रूचि ले रही है।

उसकी शिकायत है कि उसकी दाहिनी आंख में अक्सर पिछले तीन दिनों से चिन्गारी सी निकलती प्रतीत होती है। पू. गुरुजी के ऊपर पूरा विश्वास रहने के कारण आशा हैं हम इस भटकाव से सही रास्ते में आ जावेंगे। मार्ग दर्शन हेतु आशीर्वाद की चाहना है।

विनोदशंकर पंड्या

★ अविस्मरणीय प्रसंग ★

दिनांक १८-१-८८

प. पू. सत्गुरू चरणों में कोटि कोटि प्रणाम।

सत्गुरू कृपा से २६ जुलाई १९८७ को अमरकंटक में घटी चमत्कारिक घटनाओं को देखकर उस समय अंतरमन में उठने वाली आनंद-युक्त लहरों के अभिव्यक्ति का वर्णन करना अत्यन्त असंभव है। उस समय हो रहे सत्गुरू कृपा के आनंद का स्पष्ट उल्लेख करना संभव ही नहीं है। जो कुछ मैं लिखने जा रहा हूं वह हमारी उस समय की भावनाओं की छाया मात्र ही है।

लिखने का प्रथम ही अवसर सत्गुरू कृपा से प्राप्त हुआ है जो कुछ लिखा अक्षरश: सत्य है। प्रत्येक व्यक्ति के उस समय के भावों को उल्लेखित करने में कुछ त्रुटियाँ या कमी रह गई हो तो उसके लिये मैं स्वयं उत्तरदायी हूं और क्षमा चाहता हूं।

२३ जुलाई १९८७ गुरूपर्व के उपलक्ष में गुरू परिवार के सभी सदस्य बिलासपुर में एकत्रित हुए थे। श्री सत्गुरू पूजनोपरांत करीब आठ साढ़े आठ के दर्मियान गुरू परिवार के बाहर गांव से आये सदस्यों के ठहरने की व्यवस्था जिस धर्मशाला में की थी उसके नीचे स्थित पान की दुकान के पास में (प्रेमचंद जोशी) श्री भीमाशंकर जी शास्त्री, श्री उमाकांत जी कुटेमाटे ...न्द्र शर्मा, अमरचंद डोलीया (करीमनगर ...दाबाद) खड़े थे। १५-२२ मिनट पश्चात् वहां ...र्री परिवार के सदस्यों में सर्वप्रिय हमारे प्रमुख श्री बाबा साहब तकवालेजी और श्री प्रभाकरजी पाण्डे आये।

चर्चा का विषय निसर्ग सौन्दर्य की ओर बदला तो निसर्ग सौन्दर्य प्रेमी श्री बाबा साहब ने श्री भीमाशंकरजी शास्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि शास्त्री जी यहां तक आ ही गये हो तो अमरकंट जाना मत छोड़ो, बहुत ही सुन्दर स्थान है जाकर तो देखो।

अमरकंटक में वर्षा के कारण नैसर्गिक बाधाएं हैं ऐसा हमे बिलासपुर वासी, प्रायवेट मिनी बस के मालिकों और ड्रायव्हर से पूछताछ करने पर ज्ञात हुआ था। इस कारण हमारा वहां जाने का कोई ठोस निश्चयात्मक विचार नहीं था। अन्य कुछ लोगों ने तो जाने का विचार ही त्याग दिया और वर्धा के लिये रवाना हो गये थे। बाबा के प्रोत्साहनात्मक और वहां की सृष्टि सौन्दर्यात्मक विचार सुनकर हमारी जिज्ञासा और उत्साह तीव्र हो गया। बाबा से शास्त्री जी ने अपना संदेह व्यक्त किया कि बाबा वहां जाने के सारे रास्ते बंद हैं। नदी, नालों में बाढ़ आई हुई है ऐसा मेटाडोर वाले बता रहे थे फिर कैसा करना? हमारी तो बहुत इच्छा है। बाबा ने पूर्ण दृढ़ता और शांत चित्त से सिर्फ इतना ही कहा कि शास्त्री जी बेफिक्र जाओ, अरे, इतने बड़े गुरूजी साथ में है वो सब संभाल लेंगे, कुछ नहीं होगा। चिंता क्यों करते हो उनका नाम स्मरण करते हुए निकल जाओ। उस समय बाबा के मुखमुद्रा ऐसी लगी जैसे गुरूजी स्वयंम् ही

आदेश कर रहे हों। बहुत लोगों ने हमारा विचार वदलने की कोशिश की लेकिन बाबा के उद्गार सुनकर मनोबल इतना दृढ़ हो गया था कि कुछ भी क्यों न हो जाय बस, अब तो जाना ही है।

दूसरे दिन सबेरे मैं, श्री भीमाशंकरजी शास्त्री, उनके ज्येष्ठ चिरंजीव राजू शास्त्री, दो पुत्रियां कु. मीना और कु. सुनंदा, देवेन्द्र शर्मा, अमरचंद डोलीया, सौ. शांताबाई जोशी, गोदा-बाई पंधरे कुल ९ सदस्य रेल से पेंड्रा तक और वहां से बस तथा केवची से ट्रक से अमरकंटक की ओर रवाना हुये। ट्रक का मिलना एक संयोग ही था। ट्रक की ऊपरी छत पर हम लोग बैठे थे, खुली आंखों से निसर्ग निर्मित वृक्षों, पहाड़ों और घाटियों का मनमोहक दृश्य तथा स्वच्छन्द बहती पवन का सीधा शरीर को होता हुआ स्पर्श से व्याप्त आनंद का उल्लेख करना संभव नहीं बस रह रह कर उन्मुक्त कंठ से एक ही भावोक्ति निकल रही थी "सद्गुरु देव सब आप ही की कृपा है अन्यथा कहां ऐसा सौन्दर्य देखने को मिलता। पूरे सफर में यही विषय प्रधान रहा। कोई भी भय नहीं, न ही कोई "निसर्ग" निर्मित बाधा ही दिखाई दी जैसा कि हमें बताया गया था। शास्त्री जी की दोनों कन्यायें छोटी होने पर भी निर्भय होकर ट्रक की सबसे ऊपरी छत पर ठीक ड्रायव्हर के ऊपर के हिस्से पर निर्भय होकर बैठी थी और आनंद ले रही थी। उस समय आनंदायुक्त अवस्था में निकल रहे हमारे सतगुरु देव की महिमा का बखान करते समय के हम सभी के हावभाव और मुखमुद्रा का सही सही वर्णन करना मैं समझता हूं किसी उच्च कोटि के साहित्यकार के लिये भी संभव नहीं हो सकता। हम सभी को इस बात का पूर्ण आभास था कि जैसे हम जैसे कोई महाशक्ति से बंधे हुये हैं। जैसे कोई ठोस कवच हमारे सिर पर है क्योंकि इतने घने जंगल, घाटियों के मोड़ और सकरे रास्तों से हमारा ट्रक जा रहा था और हम ऐसे स्थान पर बैठे थे जहां पर बैठने की आज कल्पना करते हैं तो आश्चर्य होता है। यहीं नहीं हम तो बीच–बीच में खड़े भी हो जाते थे। यह सफर ही अपने आप में एक आश्चर्य ही है।

अमरकंटक पहुंचते ही हमें धर्मशाला में साफ सुथरा सबसे अच्छा कमरा सस्ते में हमें मिल गया। बाजार जाकर हमने राशन लकड़ी आदि सभी सामग्री खरीदी। भोजन बनाया, ग्रहण किया और घूमने निकल गये। सभी कुछ हमारी इच्छानुसार ही हो रहा था।

तीसरे दिन हम कपिलधारा घूमने गये। वहां नर्मदा मैया एक बहुत बड़ी चट्टान पर से नीचे घाटी की ओर करीब एक सौ फीट ऊपर से गिरती है। आजू बाजू लोहे की रेलिंग लगी है। एक सूचना फलक भी लगा है, लिखा है मधु-मक्खियों से सावधान। रह रह कर हम नौजवान लड़कों की इच्छा नीचे उतर कर उस दृश्य को नजदीक से देखने की हो रही थी लेकिन हमारे ग्रुप के सेनापति और प्रमुख श्री भीमाशंकर जी शास्त्री हमें नजदीक जाने को मना करते थे, बार बार अपनत्व भरी डांट पिलाते थे जो अलग।

हमारी घाटी में उतरकर नदी के पानी का आनंद लेने की अत्यन्त तीव्र इच्छा हो रही थी अतः हम मौके की तलाश में ही थे कि संयोग से थोड़ी दूर चलने पर जैसे गुरुजी ने हमारी इच्छा जान ली हो एक स्थान पर शास्त्री जी ने

सभी को बैठकर थोड़ा विश्राम करने के लिये कहा। हम सब बैठ गये। मौका अच्छा था अतः चुपचाप घाटी में मैं, अमरचंद डोलीया, राजू, देवेन्द्र शर्मा उतरते चले गये। वहां से जल प्रपात का दृश्य अत्यन्त मनोहारी है। हमें यकीन था कि यदि हम श्री शास्त्री जी को इस दृश्य के बारे में बतायेंगे तो वे अत्यन्त प्रसन्न हो जायेंगे क्योंकि वे स्वयम् निसर्ग प्रेमी हैं। अतः मैंने उन्हें आवाज दी। थोड़ी आना कानी के बाद वे सभी नीचे आने लगे। जैसे जैसे वे नीचे उतारते जाते थे उनका भी आनद बढ़ता जा रहा था।

नीचे हम सभी एक बड़े शिलाखंड पर बैठे गये और उन्मुक्त कंठ से उस दृश्य का वर्णन कर रहे थे। धीरे धीरे हमें भूख का एहसास होने लगा। शुरुवात सौ. शाता बाई जोशी ने की। गुरूजी (शास्त्री जी) ऐसे में अगर भोजन की सामग्री साथ लाते तो कितना आनंद आता। सभी इस विचार से सहमत थे। गोदावाई ने कहा कि अपने सत्गरूदेव की कृपा हो गई तो यहीं" भोजन आ जायेगा, नहीं लाये तो क्या हुआ। उसी समय श्री भीमाशंकर जीं ने भी तपाक से कहा कि "अस्ता खर बोललाय गोदावाई तुम्ही। आपके सत्गुरू काही मजाक नाही हाय त्यांना ओलखन आमाच्या तुमच्या मारहआना शक्यच नाही। त्यांचीस कृपा झ ली मणुन आपन इथ पर्यन्त आनदात आले वे चाहे तो सब कुछ यहां पर ही आ सकता है क्यो रे प्रेम ? क्यो रे देवु ? क्यो अमर ? सच है क्या नाहीं ? कहकर हमारी ओर देखने लगे। हम क्या जवाव देते हमारी मुखमुद्रा ही काफी थी। सत्गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा और विश्वास इतना प्रवल है कि संभव या शंका के लिए दूर–दूर तक हमारे मन में अस्तित्व ही नहीं है। शास्त्री जी ने कहा वह एक ठोस सत्य है।

मैं, अमर, देवेन्द्र और राजू शास्त्री आगे फलों के वृक्ष ढूंढने निकल गये। आगे एक जगह पानी के बहाव का दृश्य काफी सुन्दर था अतः हमने बाकी लोगों को हमारी ओर आने के लिये आवाज लगाई। क्रमवार वे पत्थरों पर से होते हुये हमारी ओर आने लगे क्योकि हम काफी नीचे घाटी में घूम रहे थे। सबसे अंत में गोदा-बाई थी उनकी बातचीत का विषय भी सृष्टि के मनमोहक दृश्य, भोजन सामग्री का अभाव और सत्गुरुदेव का बारम्बार स्मरण पर ही आधारित चल रहा था। अचानक गोदावाई को अपने सामने ही एक बड़ा सा पुड़ा दिखाई दिया। उन्होंने इधर उधर देखा और हमें आवाज दी। सभी की उपस्थिति में पूड़ा खोला गया उसमें जलेबी और पकौड़ियां थी, वे एकदम ताजी थीं। हम सभी ने थोड़ी देर इधर उधर इस उम्मीद से देखा कि कोई आदमी इधर उधर होगा। और शायद उसी का ही यह पुड़ा हो। अतः काफी देर प्रतीक्षा की। ढूंढा भी लेकिन दूर दूर तक उस घाटी में हमारे अतिरिक्त किसी भी मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं था। सबसे ज्यादा आश्चर्य इस बात का हो रहा था सभी ८ लोग उसी रास्ते से क्रमानुसार ही आये हैं और ऐसा कोई स्थान वहां नहीं कि शायद हमारी दृष्टि न पड़ी हो। सभी कुछ वहां स्पष्ट ही था फिर भी अचानक गोदावाई को अपने सामने ही उस पुड़े का मिलना अत्यन्त आश्चर्य की बात है।

काफी प्रतीक्षा करने के बाद श्री भीमा-शंकरजी ने हम सभी से कहा कि अरे जाने दो याचा मालक कोणी नाही आहे। हातर गुरुप्रसाद

आहे हया शुरू करा। गुरूजी की आपली पुकार मैं उन पाठवीला आहे हया शुरू करा। हम सभी के हिस्से में थोड़ा थोड़ा ही आया। इस घटना पर वार्तालाप करते हुये हम गुरूजी का प्रसाद समझकर बड़ी श्रद्धा से खाने लगे और साथ ही श्री गुरूजी को अत्यंत आनंद मन से वारंवार प्रणाम करने लगे। उस समय के हमारे उद्गार अगर मैं लिख भी दूं तो भी मुख पर आये भावों को व्यक्त करना मेरे वस की बात है ही नहीं।

आश्चर्यजनक एक बात और भी है कि उस अल्प हिस्से में भी प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण अपने मनपसंद भोजनोपरांत होने वाली तृप्ति का का एहसास हुआ। जैसे डटकर भोजन किया हो।

घूमते घूमते हम अपने निवास स्थान पर लौट आये। नित्य नियमानुसार हम रात्रि ध्यान में बैठे तत्पश्चात् सो गये। प्रातः सभी अत्यंत प्रसन्न थे। एक विशेष प्रकार की शांति और तृप्ति का आभास हो रहा था। इस तरह चार-पांच दिन के कालावधि का हमारा यह सफर अत्यंत आनंद के साथ सत्गुरू की अदृश्य छत्र-छाया में बीता हम सभी कामना करते हैं कि सत्गुरूदेव की कृपा दृष्टि हम सभी गुरू परिवार के सदस्यों पर बनी रहे। साथ ही हमारे हृदय में स्थित सत्गुरूदेव के प्रति श्रद्धा और विश्वास दिन दूना रात चौगुना बढ़ता ही रहे।

पुनःश्च परम पूज्यनीय सत्गुरू चरणों में कोटि कोटि प्रणाम करते हुये अपनी गलतियों के लिये क्षमा मांगता हूं।

सेवक

प्रेमचन्द जोशी

★ ★ ★

※ सम्पूर्ण शरीर में जोरों का स्फुरण ※

ग्वालियर

दिनांक २३-१२-९३

परम पूज्यनीय प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय श्री सद्गुरूदेव, कोटिशः नमन।

गुरुजी मुझे सोमवार २०-१२-९३ को एक अच्छा अनुभव हुआ। हम पलंग पर आसन लगाकर सामने टेबिल पर किताबें रखकर पढ़ते हैं। ठण्ड के दिनों में दोपहर में पढ़ते पढ़ते आसन की अवस्था में ही सीधे लेट गये। फिर धीरे धीरे पैरों को सीधा किया। फिर आंख बंद कर ध्यान करने लगे तो पैरों से लेकर संपूर्ण शरीर में मस्तिष्क तक एक जोरों का स्फुरण जैसा हुआ। तत्पश्चात् मेरुदण्ड में एक सुनहरा कोहरा सा आने जाने लगा। काफी देर बाद मुझे याद आया कि मेरी पीठ में पूर्व में चोट लग जाने से हमेशा दर्द होता है किन्तु मैंने वहां पर किसी प्रकार का कोई अवरोध या दर्द महसूस नहीं किया। फिर मुझे याद नहीं क्या हुआ किंतु मैं बड़ी उत्सुकता एवं प्रफुल्लता से देखने लगी जैसे एक खाली पाइप में पानी निर्बाध रूप से

चमकता हुआ आता जाता रहता है ठीक वैसे ही एक सुनहरा कोहरा–सा मेरुदण्ड में आवागमित होता रहा। फिर गर्दन में एक हल्का–सा झटका जैसा महसूस हुआ किन्तु फिर सिर में एक झुन-झुनी जैसा कुछ कौंधने सा लगा। फिर मुझे नहीं पता करीब दो तीन घण्टे तक। बहुत अच्छी नींद आ गई और दूसरे दिन तक काफी हल्कापन और प्रफुल्लता महसूस होती रही। अभी भी लिखते समय महसूस कर पा रही हूं। गुरूजी आपके दर्शन की बहुत इच्छा है।

कुसुम ताम्रकार
इंदिरा गांधी कामकाजी महिला आवासगृह
कम्पू–लश्कर, ग्वालियर 474001

★ ★ ★

इस स्थिति के लिये ऋषि मुनि तरसते हैं

पेण्ड्रा – ३–२–९४

परम पूज्य गुरूजी के श्री चरणों में कोटि कोटि सादर प्रणाम।

वैसे तो मुझे पहले से पूजापाठ में रुचि थी लेकिन मेरे मन को शान्ति नहीं मिल पा रही थी। इसी तरह हर वक्त ऐसा लगता था कोई सद्गुरू मिल जाय जो सही शिक्षा दे सके।

मेरी सहेली, संगीता जैन मेरे साथ पढ़ती थी। वह हमेशा गुरूजी के बारे में चर्चा करती थी। तो मेरा मन उनसे मिलने के लिए बेताब हो गया। इसी बीच पूज्य गुरूजी पेन्ड्रा में श्री वीरचन्द जैन के यहाँ भोजन करने के लिए आये। संगीता ने मुझे बुलवाया और कहा कि गुरूजी आये हुए हैं। मैं पागलों की तरह उनके चरण स्पर्श के लिए गई। गुरूजी ने आशीर्वाद दिया।

इसके पश्चात् गुरूजी ने मुझे गौरेला में श्री ओमप्रकाश शर्मा के यहां बुलवाया लेकिन संगीता ने मुझे नहीं बताया। गुरूजी ने कहा– तुम अपनी सहेली को लेकर नहीं आई हो। दूसरे दिन वह मुझे साथ लेकर गई। गुरूजी के पास जब मैं पहुंची तो गुरूजी ने कहा "तुझे क्या पूछना है पूछ"। मैंने कहा कि मैं गुरू के बारे में जानना चाहती हूं। गुरूजी ने कहा – "पगली। तुझे मैं गुरू के बारे में क्या बताऊं? फिर भी गुरूजी ने मुझे अनेक प्रकार से समझाया। इसी तरह शाम हो गई। फिर मैं गुरूजी को प्रणाम करने गई और प्रणाम करते वक्त मैंने उनसे कहा "गुरूजी दीक्षा"। गुरूजी ने कहा – "इस वक्त दीक्षा" फिर भी उन्होंने मुझे दीक्षा दी और कहा कि 'तेरा और तेरे घरवालों का कल्याण हो जायेगा।

इसके पश्चात् मेरे दिन बहुत ही आनंद से व्यतीत होने लगे। पहले साधना में बैठती थी तो मेरी आंखों से आंसू निकलते थे लेकिन एक साधना में बैठी तो मैं क्या देखती हूं कि मैं गुरूजी की गोद में सोयी हुई हूं। गुरूजी बड़े ही प्यार से

सुना रहे हैं। इस अनुभव को मैंने गुरूजी के पास लिखकर भेजा तो गुरूजी के पास से जवाब आया कि इस स्थिति के लिए ऋषि मुनि लोग तरसते हैं। जो तुमने सहजासहज ही प्राप्त कर लिया है। इससे तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का कल्याण हो ही गया है। इसके बाद तो अनुभवों की झड़ी लग गई और ऐसा आभास होता था कि गुरूजी मेरे पास हैं। वे हमेशा मुझे बच्चे के रुप में दिखते थे। इसे भी मैंने गुरूजी से बताया तो गुरूजी ने कहा कि तुम्हारे अदर ममता का भंडार है।

इसके पश्चात् एक दिन में साधना में बैठी हुई थी तो आकाश से एक विमान आया। विमान में भगवान और उनके दो दूत नीचे उतरे और गुरूजी को ले जाने लगे। मैं चिल्लाकार रोने लगी और कहने लगी कि मेरे गुरूजी को कहां लिये जा रहे हो। गुरूजी आर्शीवाद देते हुए चले जा रहे हैं। इस अनुभव के बाद में हर वक्त रोते रहती थी। मेरी इस स्थिति को देखते हुए श्री ओमप्रकाश शर्मा जी गुरूजी के पास वर्धा गये। उन्होंने मेरी स्थिति के बारे में गुरूजी को बताया। तो गुरूजी ने कहा कि राखी से कह देना कि मेरी उम्र दस वर्ष की बढ़ गई है और वह रोती है। फिर मैं उन्हीं की मस्ती में मस्त रहने लगी।

एक रात की घटना है सुबह के चार बजे थे। उस वक्त मैं अर्द्धनिद्रावस्था थी। उस वक्त क्या देखती हूं कि एक प्रकाश आया उस प्रकाश से से सारा कमरा जगमगा गया। मुझे थोड़ा डर सा लगा और मैंने आंख खोलकर देखा तो पूरे कमरे में प्रकाश ही प्रकाश नजर आया। उस प्रकाश में मुझे गुरूजी के दर्शन हुए उसके बाद ओम् के दर्शन हुए। उसी प्रकाश में गुरूनानक जी के दर्शन हुए और उसी प्रकाश में मुझे प्रभु ईशु के दर्शन हुए। उसी प्रकाश में उर्दू में लिखा हुआ एक चादर निकला और मेरे ऊपर गिर गया। उस चादर से मैं सभी ओर से ढक गई फिर प्रकाश गायब हो गया।

इसके पश्चात् शर्मा जी वर्धा जा रहे थे उनके हाथ से मैंने गुरूजी के लिए माला और कुछ रुपये भेजे उस माला के गुरूजी ने हाथ में पहन लिया और कहा कि राखी से कहना कि जब मैं बैठता हूं तो एक प्रकाश आता है और उस प्रकाश में राखी का चेहरा दिखता है। शर्मा जी ने आकर यह बात मुझे बतायी।

इस समय ध्यान में बैठती हूं तो ऐसा लगता है कि मेरा शरीर ही नहीं है और मैं एकदम छोटे रुप में अपने आपको अनुभव करती हूं। इस अनुभव के बाद में शांत हो जाती हूं।

मेरी उम्र २१ वर्ष है और मैं बी.ए. अंतिम में पढ़ती हूं। मुझे दीक्षा लिये सिर्फ तीन वर्ष हुए हैं। इन तीन वर्षों मे मेरे जीवन में उमंगे ही उमंगे भर गयी हैं और हर वक्त सद्गुरू की यादों के सहारे रहती हूं। इस छोटी सी उम्र में मुझे सद्गुरू मिल गये इससे मैं अपने आपको धन्य समझती हूं और ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि गुरूजी को सदैव अपनी हिफाजत में रखें ताकि गुरूजी का आशीर्वाद हम लोगों को मिलता रहे। दुनिया में सभी चीजे मिल सकती हैं परन्तु सद्गुरू का आशीर्वाद नहीं मिलता, वह भी मुझे प्राप्त हुआ।

मैंने और मेरे परिवार वालों ने जब से दीक्षा ली है। तब से हम लोगों का जीवन आनन्दमय हो गया है।

अंत में मैं इतना कहना चाहूंगी कि अगर मनुष्य का जीवन मिला है तो सद्गुरू मिलना बहुत जरूरी है। अगर सदगुरू मिल जाए तो उनका जीवन धन्य हो जायेगा।

अंत में गुरूजी से मेरी विनती है कि हर वक्त मुझे उनका आशीर्वाद मिलता रहे और वे मुझे हमेशा दिखते रहें। इसी उम्मीद के साथ गुरूजी को पुनः चरण स्पर्श।

– राखी त्रिपाठी

★ ★ ★

सत्गुरू के श्रीचरण भवसागर पार करने में सहायक

रायपुर – २३-३-९४

२९ नवम्बर, १९९३ को गुरूनानक जयंती के शुभ दिन सायं पाँच बजे गुरूदेव ने मुझे परिवार सहित दीक्षा प्रदान कर कृतार्थ किया। दीक्षा प्राप्ति के कुछ समय बाद ध्यानावस्था में गुरूदेव के भगवान विष्णु के रूप में दर्शन पाये। वे शुभ्र कांति युक्त थे। श्वेताम्बर धारी थे। शंख, चक्र, गदा एवं पद्म से सुशोभित थे। उनके आभूषण एवं किरीट रजत धवल थे एवं उनका सम्पूर्ण विग्रह अति उज्वल तेजोवलय से परिवेष्ठित था। ध्यानावस्था में ही उनके जगज्जननी भगवती दुर्गा के रूप में भी दर्शन किये। इसमें भी उनकी कांति शुभ्र, वस्त्र श्वेत एवं अलंकार तथा मुकुट रजत धवल थे। हृदय अभिव्यक्ति शून्य होता है तथा लेखनी अनुभूति शून्य। इसलिए सत्गुरू महात्म्य की अनुभूतियों का हूबहू शब्द चित्रांकन कठिन है। शास्त्राधार से जिस प्रकार गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करते हैं उसी प्रकार सत्गुरू के श्रीचरण भवसागर पार करने में परम सहायक होते हैं। यह अनुभव मुझे निरंतर होते रहता है।

डा. आर. डो. दास
प्राचार्य,
शा.स्ना. उपाधि महाविद्यालय, गरियाबंद
निवास – सी-९, भगवती निवास
टैगोर नगर, रायपुर (म. प्र.)

★ ★ ★

★ मुझे नागों से बहुत डर लगता है ★

रीवा – २३-४-९२

परम पूज्यनीय श्रद्धेय गुरूजी के चरण कमल में शत् शत् प्रणाम।

पू. गुरूजी एक दिन मैं चिन्मय मिशन आश्रम गई थी रामायण लेने, वहां पर शिवरात्रि की वजह से ओम् नमः शिवाय का मंत्र जाप कर

रहे थे। मुझे भी उन्होंने उसमें सम्मिलित होने को कहे। मैं ओम् नमः शिवाय के जाप का ध्यान करने लगी तो मुझे दो हथेलियां दिखीं गोरे रंग की और उसमे लाल रंग से ओम् लिखा था।

एक दिन गुरूजी (२२ अप्रेल) नींद में चार बजे सुबह एक बहुत बड़ी नदी देखी। उसमें बहुत बड़े पत्थर से ग्रे रंग के, उस नदी का पानी बहुत ही स्वच्छ और स्थिर नहीं था। नदी में उतरे तो देखा कि उस पार एक ग्रे रंग की बिल्डिंग है। हम पत्थरों में पैर रखते हुए बिल्डिंग के पास पहुंचे तो देखा कि उसके आसपास बहुत खूबसूरत मूर्तियां हैं। मैं उन्हें देखने लगी। अचानक एक पुलिस वाला दिखा। उसने कहा कि यह मन्दिर है। मैं उस मन्दिर में गई तो देखा कि फर्श पर शिवजी की ग्रे रंग की खूबसूरत पिन्डी है और उसी कमरे में एक शिवजी की बहुत ही खूबसूरत मूर्ति दूसरी ओर है। मैं शिवजी की पिन्डी के पास माथा टेककर उन्हें प्रणाम कर रही थी। मेरे हाथ में कुछ खुले पैसे भी थे जो वहीं पर रख दी थी। जब मैंने सिर उठाया तो देखा कि कमरे के अन्दर एक काला सांप फन के साथ कमरे की छत से उल्टा हवा में लटक रहा है और एक दूसरा नाग, दूसरी मूर्ति के पास था। मन में थोड़ा भय लगा किन्तु मैं सोची कि ये शायद यही पर रहते होंगे पर किसी को कोई कष्ट नहीं देते होंगे। जब मैं दोनो मूर्तियों को प्रणाम कर बाहर निकली तो पता चला कि हवा में लटका हुआ नाग मेरी तरफ आ रहा है। मैं थोड़ा पीछे खिसकी लेकिन वो नहीं माने और मेरे सीधे हाथ की **Middle** और **Index** फिंगर को अपने दांतों से पकड़ लिये जोर से। मैंने डर के कारण आंख बंद कर ली और कहा – "हे महाकालेश्वर रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए लेकिन वो पकड़े ही रहे"। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कि सिरिन्ज से कोई तरल पदार्थ जोरों से बाहर की तरफ खींच रहा है। यह प्रक्रिया करीब २–३ मिनट तक रही, फिर मुझ पू गुरुजी की याद आई और मैं गुरुजी गुरुजी करके दो बार पुकारी और मेरी नींद खुल गई, लेकिन डर के कारण **Heart** काफी देर तक धकधक करता रहा और मैं गुरुजी की फोटो के पास बैठे उनसे प्रार्थना करती रही कि पू गुरुजी मुझे नागों से बहुत डर लगता है।

पू गुरुजी इन सबका कोई महत्व है कि नहीं कृपया मार्गदर्शन दें। गलतियों के लिये पू. गुरुजी के चरण कमलों में क्षमाप्रार्थी हूं। पू. गुरुजी के चरण कमलों को बारम्बार प्रणाम।

– डा. चन्द्रा रजक

★ ★ ★

A Shock of Joy

Shillong.
June 24, 1993

First I am to know abouat Reverend Guruji through Aparna my only daughter who is studying in Medical College Raipur. Last July I had gone to vallore for my

treatment. Aparna & Hanifa went to meet Rev. Guruji & had asked about my illness. He gave medicine to Aparna. She sent it to me and also wrote a letter to me about Respected Guruji. Hanifa also wrote a tetter to me about Guruji. I started taking the medicine and was feeling better. After sometime I felt completely alright. From that time I used to think about Guruji. I believe I have got blessings from him.

In the month of May Hanifa & Aparna came to Shillong and brought a photograph of Respected Guruji. As soon as I saw the photograph I felt like an electric current passed throughout my body. My mind was filled with joy and happiness. After framing photograph we hung it on the wall of my bedroom. I was praying to him one morning (1st day) closing my eyes, suddenly I saw some bright stars around his photograph, then I got a shock, a shock of Joy. Quickly I opened my eyes, but those stars were not there. I told Hanifa and Aparna. They said - "Do not tell any body, Because this is a good sign you have seen." I pray every morning and evening, when I close my eyes I see that His righthand is up where as in the photograph His left hand is up, why I do not know.

Thess days I was very much worried about my elder son shibu who is aspiring to get a chance in medical line. With such mental condition I wrote to Hanifa" I am praying to Guruji to give me mental peace". I gave this letter to our school peon to drop. As soon as I handed over the leter to him my mental agony was gone and I felt very much relieved.

I pray to Guruji to give me peace and blessings.

Mrs. Archana Bhattacharjee
C/o Mr. S. B. Bhattcharjee
Auchit Estate, Qr. No. 22, Ty/III
Molinagar, Shillong - 14
MEGHALAYA

★ ★ ★

पूरा ब्रह्माण्ड दिख रहा था

रायपुर,
दिनांक १-१-९४

मैं अचानक कार्यवश श्री राय साहब से मलने गई। वहां पर चर्चा के दौरान श्री राय ाहब बताये कि मुंगेली से गुरुदेव जी आये हुए । मुझे उनके दर्शन के लिये बुलाये। मैं साहब बंगले पर स्वामी जी के दर्शन हेतु गई। वहां हुंची तो स्वामी जो भोजन कर रहे थे। जैसे ही मैं स्वामी जी को देखी मुझे लगा मानो कृष्ण भगवान जो भोजन कर रहे हैं और उन्हें उनके भक्त राय साहब का परिवार भोजन खिला रहे हैं। उनकी भोजन करने की गतिविधि भगवान कृष्ण की बाल लीला दिख रही थी।

उसके बाद हम सब फोटो ग्रूपिंग के लिये लान पे गये तो वहां भी ऐसी झलकी दिखी मानों

माता यशोदा कहती है कि भगवान कृष्ण तुम मिट्टी खाये हो तो भगवान कृष्ण मुंह खोलकर दिखा देते हैं और उनके मुंह के अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड दिख रहा था। आप सबको उस समय का सीन याद होगा जिस समय स्वामी जी झूले पर बैठे मुंह खोले थे।

उसी समय से मुझे स्वामी जी के दर्शन बड़े सौभाग्यवश मिले जा मेरे लिये सौभाग्य की बात है।

– नर्मदा वर्मा

W/o श्री बी. आर. वर्मा

शक्ति नगर : रायपुर म. प्र.

★ ★ ★

यद्यपि श्रीमती अर्चना भट्टाचार्जी एवं नर्मदा वर्मा दोनों ने परम पूज्य गुरूजी से दीक्षा ग्रहण नहीं की है तथापि इनके अनुभव स्पष्ट करते है कि प. पू. गुरुजी की कृपा सब पर समान रहती है चाहे वह दीक्षित हो या न हो।

★ ★ ★

※ स्वप्न है अथवा जागृत अवस्था ※

मुझे बताने में संकोच हो रहा है क्योंकि हमने किसी की सेवा आज तक नहीं की :–

उस समय मैं कल्याण में थी जून १९९३. तीन दिन हो गये थे। तीसरे दिन सुबह सुबह अचानक दिखा कि श्री गुरूजी मुझे आशीष दे रहे हैं और मैं उनके पैरों पर झुकी नमस्कार कर रही हूं। यह दृश्य इतना स्पष्ट था कि मैं स्वप्न में हूं अथवा जागृत अवस्था में – मुझे समझ में नहीं आ रहा था। उसके बाद डा. आचार्य के यहां कोई उत्सव है उसमें सब व्यस्त हैं ऐसा लगा. यह सब मैं अनुभव कर रही थी। थोड़ी देर बाद घड़ी में देखा तो प्रातः ५ बजे थे, फिर उन्हें हृदय में देखकर एकदम विचार आया कि ये तो प्रभात के गुरुजी हैं – इन्हें नमस्कार करना चाहिये . . . इति.

श्रीमती नलिनी किरोलीकर

M A. B. Ed.

लेक्चरर (हिन्दी)

माडर्न स्कूल, नागपुर (महा.)

★ ★ ★

श्रीमती नलिनी किरोलीकर मेरी छोटी बहिन है उम्र लगभग ५० वर्ष. नागपुर जाने की जल्दी में इनको श्री गुरुजी के दर्शन २–३ मिनट के लिये रायपुर में हुए. उसने दीक्षा नहीं ली है. उपरोक्त अनुभव पर श्री गुरुजी ने टिप्पणी की – "निन्द्राते जाग्रस्यायो या भवेत आत्मनि".

डा. प्रभात आचार्य, रायपुर

★ "मां करोली ही थीं" ★

रायपुर, २०-५-१९९४
ॐ श्री सतगुरवे नमः

रायपुर में प्रत्येक गुरुवार को प. पू. गुरुजी की पूजा किसी न किसी परिवार में होती रहती है, माह मार्च ९४ की तारीख १० महा-शिवरात्रि का पर्व रात्रि लगभग ८.१५ बजे गुरुवार को गुरुबन्धु आदरणीय डा. आचार्य साहब के निवास पर प. पू. गुरुजी की पूजा थी। पूजा के पश्चात् प. पू. गुरुजी के ध्यान में बैठे. मुझे अनुभव हुआ कि मेरा मस्तिष्क दरवाजे की तरह खुल रहा है बंद हो रहा है, खुल रहा है बंद हो रहा है। इसी क्रम में भगवान भोलेनाथ शंकर जी दिखाई पड़े। मेरी ओर देखकर कहने लगे – "ऐसा ही हम भी गुरुजी का ध्यान करते हैं जैसा आप कर रहे है कहते हुए मुस्करा रहे थे। कुछ क्षण पश्चात् मेरी स्थिति सामान्य हो गई।

दूसरा अनुभव

हम कार्यालय के कुछ लोग शासकीय कार्य से ग्वालियर गये हुए थे। दिनांक १३-५-९४ दिन गुरुवार को साथियों के साथ केला देवी (राजस्थान) मां करोली के दर्शन हेतु गये। मुझे प्यास लगी थी तो देखा मंदिर के अहाते में नल है। मैंने खोलकर चूल्लू से पानी पीना शुरु किया। नल से बह रही जलधारा जो मेरे चूल्लू से मुंह तक जा रही थी पीते पीते देखा कि एक देवी दिखने वाली महिला चूल्लू के पानी में प्रतिबिम्बित हो रही है, पानी पीते पीते उस दृश्य को देखकर बहुत अच्छा लग रहा था और पानी का स्वाद भी बहुत अच्छा लग रहा था। बाद में जब हम मन्दिर पहुंचे तो मंदिर की मूर्ति देखा तो लगा कि चुल्लू में पड़ने वाले पानी में प्रतिबिम्बित महिला और कोई नहीं मां करोली ही थी।

बी. एस. बैष्णव
उच्च श्रेणी लिपिक
महानदी आयाकर विकास प्राधिकरण, रायपुर

★ ★ ★

★ "मेरा जीवन सफल होगा" ★

प. पू. श्री गुरुजी से दीक्षा ली तब से मेरे जीवन में नया चैतन्य निर्माण हुआ। जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ता गया वैसे-वैसे मुझे छोटी बड़ी अनुभूतियां होने लगीं। दीपावली का दिन था, मैं प्रातः तीन बजे उठी, अभ्यास किया, बाद में शवासन में लेटी तो उसमें नींद सी आ गयी। उसमें मैंने देखा कि पू. गुरुजी और अपने परिवार के कुछ लोग भी है। मैं हरि ॐ बोल रही हूं।

बाद में पू. गुरुजी को मैंने प्रमाण किया उस क्षण मेरे सामने पू. गुरुजी थे और दूसरे ही क्षण वहाँ सूर्य को तीन रूप में (बाल, प्रखर और सौम्य) दर्शन हुआ। बाद में फिर से उसी जगह देखा तो पू. गुरुजी दिखाई दिये। मेरी नीद खुल गयी। तभी मेरे मुंह से हरि ॐ निकल रहा था।

वैसे ही हमारे घर के पीछे मेरे स्व ससुर जी, श्री आबाजी के मित्र श्री मुठाल रहते थे। वे हार्ट पेशंट थे। एक बार रात लगभग आठ और नौ के बीच मैं और बाकी के हमारे घर के लोग खाना खा रहे थे। तभी श्री मुठाल जी की धर्म पत्नी के जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। झट से हम सब क्या हो गया करके देखने गये तो देखा कि श्री मुठाल अपने पलंग पर से नीचे काष्टवत पड़े हुए थे। तभी मैंने उनके छाती और शरीर पर से जय गुरुदेव, जय गुरुदेव कर के हाथ फेरना शुरु कर दिया उस वक्त मुझे ही मेरे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या कर रही हूं। थोड़ी ही देर के बाद उनमें चेतना आ गयी और उन्होंने धीरे धीरे आंखें खोल दी। बाद में उनको थोड़ा चरणामृत पिला दिया। उस के बाद वे दो साल तक जीवित रहे।

इसी अनुभव से मुझे विश्वास हो गया है कि जब तक मेरा विश्वास प. पू. श्री गुरुजी पर है, मेरा जीवन निश्चित ही सफल होगा और यही विश्वास अंत तक बना रहे यही पू. श्री गुरुजी के चरणों में मेरी प्रार्थना है।

सौ. शालिनी रमेशराव काणव
साई बाबा मंदिर के सामने,
वर्धा ४४२००१.

★ ★ ★

लोग पूछते हैं कि वहां जाने मे क्या मिलता है। योगाभ्यास से क्या मिलता है। क्या रखा है इसमें। नहीं, बहुत कुछ मिलता है। इससे आपमें गुण आएंगे, सिफत आएगी। आपकी बुद्धि जो विकारों से युक्त है, जैसे जैसे आप आत्मा की ओर पहुंचते जाएंगे, अन्तर्मार्ग में घुसते जाएंगे, वैसे वैसे विकार बदलते जाएंगे। आप Destiny को बदल सकते हैं। नाना प्रकार के जो सुख–दुख आपके सामने हैं वो बदल सकते हैं। यहां आने पर वो सब बदल जाते हैं।

★ ★ ★

बच्चा नहीं पढ़ता तो हम कहते हैं – पढ़ोगे नहीं तो क्या भूखे मरोगे, क्या चोरी करोगे। हम कितने दुर्बल हैं। बल है पर वो केवल दुख देने वाला है, ये हम नहीं सोचते। कहा है – "निर्बल के बलराम"। निर्बल माने क्या – वही जो बताया कि निर्गुण निराकर। आकार नहीं तो क्या – वो महाशक्ति है। Almighty है। वही परम शक्ति है। परम धाम है हम सबका। कृष्ण ने भी कहा – तद्धाम् परमं मम् – वो मेरा धाम है।

परिवार-परिचय

वर्ष ९२ के बाद दीक्षा ग्रहण किये सदस्यों की सूची तथा उन सदस्यों की सूची जिनके नाम प्रकाशित नहीं हुए है या पता बदल गया है।

	नाम	पता	फोन नं.
१.	श्रीमती बबिता बिठले	C/o डा. किस्मतलाल बिठले, एम. डी (आयु.) मेन रोड, रामकुण्डपारा, रायपुर	23241
२.	श्री मंगल मूर्ति सिंह	C/o स्टुडियो शिल्पालय आमापारा चौक रायपुर	
३.	श्रीमती पुष्पलता मिश्र कु. अंजु मिश्र कु. मुक्ता मिश्र श्री राजेश तिवारी	C/o श्री गोविन्द लाल मिश्र (शिकोला वाले) म. न. 29 473, लिली चौक, पुरानी बस्ती रायपुर	
४.	श्री राम अवतार ताम्बोली	पंडरी रोड, छोटी रेलवे लाईन के पहले जगदीश हार्डवेअर के सामने शिवम् इलेक्ट्रिकल्स : रायपुर	
५.	श्री सनत कुमार तिवारी	4, स्कूल रोड, चौबे कालोनी, रायपुर	29704
६.	श्री आशुतोष शर्मा श्रीमती राजेश्वरी शर्मा कु. मंजु शर्मा	प्लाट नं. 615, सुन्दर नगर रायपुर	
७.	श्री संजय गोस्वामी S/o श्री विमल गोस्वामी	C/o शर्मा फोटो स्टुडियो आमापारा चौक, रायपुर	
८.	श्री सुरेश अग्रवाल श्रीमती कुसुमलता अग्रवाल	C/o श्री घासीराम मूलचन्द अग्रवाल कंकालीपारा, रायपुर	
९.	श्री मनोहर पी. टोनपे	स्वास्थ निरीक्षक, नगर निगम क्वा. नं. जी/3, नगर निगम अस्पताल कम्पाउन्ड, श्यामनगर, रविग्राम, रायपुर	29189
१०.	श्री विनय चिमनानी S/o श्री श्रीचन्द चिमनानी	गरुड़ भवन के सामने, कटोरा तालाब रायपुर	
११.	कु. कुसुम पाण्डे आत्मजा श्री शिवराम पांडे	म. न. 29 /424, पुरानी बस्ती, लिली चौक रायपुर	

नाम	पता	फोन नं.
१२. श्री वालूभाई पटेल	रविनगर, शुक्ला कालोनी रायपुर	
१३. श्री केशवसिंह गौतम श्रीमती उषा गौतम कु. छाया गौतम श्री रामनारायण गौतम	विवेक नर्सरी इंग्लिश स्कूल के पास स्टेशन रोड, फाफाडीह रायपुर	523906
१४. श्रीमती माया बैस	C/o श्री राम बहादुर सिंह बैस, ठाकुर निवास एन. आर. देशपांडे स्कूल के सामने, अकोला (महा.)	
१५. श्रीमती सीमा (सपना) साखरे	C/o श्री अशोक कुमार जी संजय कुमार जी साखरे महाजन बाड़ा, भाजी बाजार, अमरावती – 444601	
१६. डा. आर. डी. दास श्रीमती सुहासिनी दास कु. ज्योत्सना दास कु. स्मिता दास श्री समीर दास	सी/४, भगवती निवास टैगोर नगर, रायपुर म. प्र.	
१७. श्री प्रशांत बाजपेयी श्रीमती ऋचा बाजपेयी	१) C/o श्री अशोक बाजपेयी म. नं. 120, सुन्दर नगर रायपुर २) अन्डर मैनेजर, सी/40 आफिसर्स कालोनी, जामुन कालरी कोतमा (शहडोल) 484444	
१८. श्री ओम प्रकाश शर्मा	C/o श्री हरनाथ अवधिया का मकान अवधियापारा, रायपुर म. प्र.	
१९. श्रीमती रमसीला देवांगन श्री खेलन कुमार देवांगन कु. विनीता देवांगन श्री तुलेश कुमार देवांगन	C/o श्री ईश्वर लाल देवांगन तर्री, नवापारा – राजिम जिला – रायपुर	
२०. श्रीमती मंजुला तिवारी W/o श्री अरूण कुमार तिवारी	१) म. प्र. वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन गंजपारारा, दुर्ग २) शैलगिरी भवन, केलाबाड़ी, दुर्ग	

नाम	पता	फोन नं.
२. श्री शीतल कुमार तिवारी श्रीमती मंदाकिनी तिवारी	पुराना बस स्टेण्ड, बेमेतरा जिला - दुर्ग	
२१. श्रीमती गीता बाई बैस W/o श्री रणछोड़ सिह बैस	पो. - मगरूड़ जिला - उमरेड	
२. श्रीमती पुष्पा हीरानी W/o श्री व्ही. जे. हीरानी	प्लाट नं. -85, कुकरेजा नगर नारा - रोड, नागपुर	
४. श्री जितेन्द्र नारायण ठाकुर	पद्मनाभपुर, दुर्ग म. प्र.	
५. श्री कन्हैया इसरानी	कृष्णा मेडिकल स्टोर्स नवापारा-राजिम, जिला-रायपुर म. प्र.	
६. श्री आनंद किशोर मिश्र	१) जनता क्वा नं.-बी/8, पद्मनाभपुर, दुर्ग २) C/o श्री जीवेन्द्र मिश्र, ग्रा. पो. - जनार व्हाया-रामपुरहरि, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार) 843117	
७. श्री धीरेन्द्र झा श्रीमती पूनम झा	१) जनता क्वा. नं.-पी/7, पद्मनाभपुर, दुर्ग २) ग्राम-सुगिया करसरी, पो परदेसिया व्हाया-शिवहर, जि.-सीतामढ़ी (बिहार) 843329	
८. श्रीमती रामरती सत्तभैया	C/o श्री पी. आर. सत्तभैया वाकर रोड, महल, नागपुर 440002	
९. डा. ए. बी. दवे	न. 1, स्ट्रीट-12, सेक्टर-9, भिलाई 490006	89 ,6735)
०. डा. अपर्णा भट्टाचार्जी	मेडिकल कालेज गर्ल्स हास्टल, रायपुर	511138
१. श्री गिरीश कुमार लोणकर	अन्नपूर्णा, 290 - लक्ष्मीनगर नागपुर (महाराष्ट्र)	
२ श्री राकेश एन. यादव	म. नं. 388, अम्बेडकर नगर धरमपेठ, नागपुर - 10 (महा.)	
३. श्री रमाकांत शर्मा (पाण्डेय)	ब्राह्मण पारा, नवापारा - राजिम जिला - रायपुर म. प्र.	
४. श्री आर. एन. शुक्ला	जिला सांख्यिकी अधिकारी, बैतूल	2296
५. श्री बसंत के. जुंवड़े	दी वेस्टर्न बैंक लिमिटेड, गारखेड़ा रोड औरंगाबाद (मराठवाड़ा)	

नाम	पता	फोन नं.
३६. श्री आर. के दुबे	फारेस्ट रेंजर, 27 खोली, श्री आर. के. भाटिया के मकान में, बिलासपुर म. प्र.	23406
३७. श्री डूंगरलाल शर्मा	ई–2, Karumari Dev. Apt 47/1, Gandhinagar, Adyar Madras 600 020	
३८. श्री डी. के. शर्मा	इन्स्पेक्टर थाना – भाटापारा जिला – रायपुर	
३९. श्री ओ. पी. शर्मा	फारेस्ट रेंजर, खण्डवा म. प्र.	
४०. श्री रविन्द्र मिश्र	C/o श्री रामबिशाल मिश्र (माठ वाले) सुहागा मन्दिर के सामने, ब्राह्मणपारा, रायपुर म. प्र.	
४१. श्री अशोक कुमार जी साखरे	C/o श्री अशोक कुमार जी संजय कुमार जी साखरे महाजन वाड़ा, भाजी बाजार, अमरावती – 444601	
४२. श्री नन्दकिशोर जी जडिया	जूना सर्राफा, मोहम्मिद मस्जिद के पास अमरावती (महा.)	
४३. श्री सुरेश मारोतराव फरतड़े	यशवन्त कालोनी, नागपुर रोड वर्धा – 442001	
४४. श्री सुधीर मोरेश्वरराव देशमुख	केळकर वाड़ी, वार्ड नं. 3 आर्वी रोड, वर्धा – 442001	
४५. श्री चन्द्रशेखर वासुदेव भागवत	"चंद्रकांत" 12 – सहजीवन कालोनी समर्थ नगर, औरंगाबाद	
४६. श्री राम भांड	I/35 तात्याटोपे नगर – 235/58 नागपुर	235158
४७. कु. आशा बालकृष्ण तैलंग	ग्राम. व पो. – चिखली जिला – भण्डारा (महाराष्ट्र)	
४८. श्री रामदुलार रामसुन्दर दुबे	मालगुजार पुरा, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001	
४९. श्री एम. ए. तालिब श्रीमती फरहत तालिब	हबीब गार्डन, मण्डी बाजार बुरहानपुर (म. प्र.) 450331	
५०. श्रीमती सुमित्राबाई पाटिल गौरखेड़े	मुख्याध्यापिका चव्हाण कन्या शाला श्री निवास टाकीज जवल अकोट	

नाम	पता	फोन नं.
५१. श्री सुरेश श्री देशपाण्डेय	5/9 – रेसकोर्स रोड इन्दौर – म. प्र.	34704 461250
५२. श्रीमती यतन राठौर चि. महावीर सिह कु. प्रज्ञा	A/33, भाननगर, जयपुर	
५३. चि. विनायक रामाजी सोनुले सौ. सीमा विनायक सोनुले	चिटणविसपुरा पुलिस चौकी मार्ग नागपुर – 2	
५४. चि. विजय वामनराव खोब्रागडे	टाटा पारसी हाई स्कूल च्या मार्ग गंजी पेठ, नागपुर	720104 – R 237566 220332) S
५५. चि. अनिरुद्ध अशोक वनसोड	१४, सहकार नगर खामला नागपुर - 25	
५६. चि. राजेश शेषराव उम्ब- रकर श्री श्याम शेषराव उम्बरकर	29, जयप्रकाश नगर ले आउट नं. 5, नागपुर	
५७. श्री महेश द्विवेदी	130, तिलक पथ (रामबाग) इन्दौर (म. प्र.)	
५८. श्री शशी गाडोदिया अग्रवाल श्री अमरचन्द रेखचन्द अग्रवाल	बैतूलगंज, बैतूल (म.प्र.)	
५९. श्री विनय हर्णे	बी/36, गौतमनगर बैंक आफ इण्डिया आफिसर्स कालोनी, भोपाल म.प्र.)	
६०. श्री के पी. शुक्ला श्रीमती वैजन्ती शुक्ला चि. सुभाष शुक्ला श्रीमती सरिता शुक्ला चि. दिनकर शुक्ला कु. सुमन शुक्ला	H/96, न्यू पुलिस लाइन रायपुर (म. प्र.)	
६१. श्री जयप्रकाश शुक्ला श्रीमती सुनीता शुक्ला	B/65, उर्जानगर, गेवरा प्रोजेक्ट कोरबा जिला – बिलासपुर 495452	
६२. श्री विवेकानन्द दुबे	संत कबीर मार्ग वलपुरवा, न्यू बस स्टेण्ड के पास शहडोल (म प्र.) 484001	
६३. श्री गोविन्दराम वर्मा	जनता क्वा. नं. 33, राजेन्द्र नगर (रविग्राम) रायपुर	

उद्‌बोधन पत्रिका का प्रकाश

आय – व्यय पत्रक ३१-१२-९३

आय		व्यय	
गुरु परिवार से प्राप्त सहयोग रु.	7621	प्रकाशन पर व्यय रु.	
पुस्तक / पत्रिका का विक्रय रु.	3770	फोटो आफसेट प्रिंटिंग चार्जेज रु	
		…यं हु	
कुल प्राप्तिया – रु.	11391=00	कुल व्यय –	पी. प
प्रारम्भिक सिलक –	निरंक	अन्तिम सिलक –	रु.
वर्धमान योग –	11391=00	वधमान योग –	रु.

दुखियों का दुख हरनेवाले नाम तेरो है [illegible]
तेरे रूप है भारी अपार, हे दुर्गा मैया. २-२-२
कैसा नारियल तुझे चढ़ाऊं तेरे दीनिस दिन गुन गाऊं
कैसा हम पे करो उपकार हे दुर्गा मैया
तेरे द्वार ये [illegible] तेरे सब तेरे [illegible] ये लगे हैं
मैया हो रही है जय जयकार / तेरे दरस की आस लगी है
मन [illegible] की आस लगी है [illegible] है तेरे
द्वार मोती जैसा लगा अपार है दुर्गा मैया. २

रायपुर गुरु परिवार द्वारा
प्रकाशित

श्री वासुदेव यो
बड़ा बाजार, मुंगेली
जिला – बिलासपुर म.

श्री वासुदेव योगाश्रम, बड़ा बाजार, मुंगेली (बिलासपुर)

सत्गुरू परिवार, रायपुर द्वारा प्रकाशित

सहयोग राशि १५/- रूपए

मुद्रक : गीता प्रिंटिंग प्रेस, सत्तीबाजार, रायपुर (म. प्र.)